मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 57 | अंक : 9 | मार्च, 2017 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

परीक्षा बन जाए उत्सव

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की वार्षिक परीक्षाएँ-2017 की शृंखला में उच्च माध्यमिक/वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा 02 मार्च 2017 (गुरुवार) एवं माध्यमिक/प्रवेशिका परीक्षा 09 मार्च 2017 (गुरुवार) से प्रारंभ हो रही है। यह राज्य की सबसे बड़ी सार्वजनिक परीक्षा है। इस वर्ष **5392** परीक्षा केन्द्रों पर **19,62,880** परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। यह एक बहुत वृहद कार्य है। माध्यमिकशिक्षा बोर्ड राजस्थान की देश में विशिष्ट प्रतिष्ठा एवं पहिचान रही है। हमें इस पर गर्व करना चाहिए तथा इसमें और वृद्धि करने के लिए सार्थक प्रयास करना चाहिए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे शिक्षा अधिकारी, केन्द्राधीक्षक एवं वीक्षक राजस्थान की इस गरिमा में इस वर्ष और श्रीवृद्धि करेंगे।

परीक्षा हमारे द्वारा किए गए कार्य एवं अभ्यास में हमारी उपलब्धि का पैमाना होती है। अत: परीक्षा को एक उत्सव की भाँति लिया जाना चाहिए। आगामी कक्षा में कक्षोन्नति के पश्चात् सत्रारम्भ में शिक्षण-अधिगम का कार्य शुरू होने के साथ ही यह निश्चित हो जाता है कि सत्रान्त से पूर्व उनके स्तर का मूल्यांकन किया जाएगा जिसका नाम परीक्षा है। इसी प्रकार शिक्षकों को भी अवगत होता है कि उनके द्वारा पढ़ाए विषय के परीक्षा परिणाम के विभाग द्वारा न्यूनतम मापदण्ड निर्धारित हैं जिन्हें प्राप्त करना आवश्यक है। वस्तुत: शिक्षकों के अध्यापन के प्रभावी एवं गुणमयी होने तथा छात्र-छात्राओं के अध्ययन की गहराई के प्रमाण परीक्षा परिणाम होते हैं और इसका निर्णय परीक्षा के माध्यम से होता है।

मैं चाहता हूँ कि विद्यार्थी अपनी तैयारी में विश्वास रखते हुए आत्मविश्वास के साथ परीक्षा में शामिल हों। वे परीक्षा की पवित्रता सुनिश्चित करें। नकल एवं अन्य अनुचित साधनों का प्रयोग नहीं करें। केन्द्राधीक्षक एवं शिक्षक परीक्षा संचालन की धुरी होते हैं। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के स्तर से जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार परीक्षाओं का आयोजन करवाना उनका नैतिक एवं प्रशासनिक उत्तरदायित्व है। अभिभावकों से भी यह अपील है कि वे परीक्षा के दिनों में अपने परीक्षार्थी संरक्षितों को तनावमुक्त सहज वातावरण प्रदान करें। ऐसा करने से परीक्षा कोई भय न रहकर एक उत्सव बन जाएगी। ऐसी परीक्षाएँ जीवन में आनन्दवृद्धि करती हैं और परीक्षार्थी उनका इन्तजार करते दिखाई देते हैं।

इस माह में रंग और उमंग का त्योहार होली है। होली प्रेम और भाईचारे का त्योहार है। जीवन में द्वेष एवं कटुता को मिटाकर स्नेह एवं सौहार्द्र की स्थापना का काम होली करती है। हमें होली के त्योहार को इसी भाव से मनाना है। नववर्षारम्भ एवं नवसंवत्सर 2074 तथा चेटीचण्ड के पावनपर्व भी इसी माह में हैं। चेटीचण्ड हमारे पूजनीय झूलेलाल जी की जयन्ती के रूप में देश-विदेश में बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। हमें उनके जीवन एवं कर्म से प्रेरणा लेकर सद्कर्म करने चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरदार बल्लभभाई पटेल के प्रयासों से देशी रियासतों के एकीकरण से राज्यों का गठन हुआ और इसी शृंखला में 30 मार्च 1949 के दिन राजस्थान की स्थापना हुई थी। इस प्रकार 30 मार्च 2017 को हम हमारे प्यारे प्रदेश राजस्थान का स्थापना दिवस **राजस्थान दिवस** के रूप में मनाएँगे। हमें हमारे प्रदेश के सर्वतोमुखी विकास की दिशा में अपने प्रयास और तेज करने का संकल्प आज के दिन लेना चाहिए। शिक्षा विभाग में पिछले तीन वर्षों में बहुत तेज गति से सुधारवादी कार्य हुए हैं जिनकी पूरे देश में सराहना हो रही है। हमें आने वाले समय में अपने प्रदेश को प्रथम पंक्ति में लाने के लिए कड़ी मेहनत करनी है और मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि शिक्षा विभाग इस कार्य में हरावल दस्ते की भूमिका निभाएगा।

नव संवत्सर 2074 की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

> "मैं चाहता हूँ कि विद्यार्थी अपनी तैयारी में विश्वास रखते हुए आत्मविश्वास के साथ परीक्षा में शामिल हों। वे परीक्षा की पवित्रता सुनिश्चित करें। नकल एवं अन्य अनुचित साधनों का प्रयोग नहीं करें। केन्द्राधीक्षक एवं शिक्षक परीक्षा संचालन की धुरी होते हैं। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के स्तर से जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार परीक्षाओं का आयोजन करवाना उनका नैतिक एवं प्रशासनिक उत्तरदायित्व है।"

चित्र वीथिका-मार्च, 2017

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी द्वाराराजकीय महाराजा बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय छोटी चौप ड़ज़यपुर में 6 फरवरी, 2017 को स्थानीय आठ सरकारी विद्यालयों के 600 छात्र-छात्राओं को 10 वीं बोर्ड परीक्षा की तैयारी हेतु 'टिप्स फॉर टॉप्स मार्क्स' पुस्तिकाओं का नि:शुल्क वितरण पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान, जयपुर के सहयोग से किया गया। माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी द्वाराछात्राओं को संबोधन।

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतन्त्रप्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी द्वारा चूरिया मूरिया संस्था द्वारा नि: शुल्कवितरित की जाने वाली पुस्तक 'स्वच्छता एवं स्वास्थ्य विशेषांक' का विमोचन किया गया।

राष्ट्रीय कृमि नियन्त्रण दिवस पर रा.उ.प्रा.वि. सिणधरी बा ड़मेर में 10 फरवरी 2017 को भारत स्काउट गाइड दल के सहयोग से 390 विद्यार्थियों को कृमि नाशक (एज्बेंडाजोल) गोली खिलाई गई।

श्री बी.एल. स्वर्णकार आई.ए.एस., निदेशक माध यमिकशिक्षा राजस्थान द्वारा 21 फरवरी, 2017 की संध याआदर्श विद्या मन्दिरगंगाशहर, बीकानेर में आयोजित वार्षिकोत्सवसमारोह को सम्बोधित किया गया। साथ है घोष वादन औ रसांस्कृतिक प्रस्तुति की झलक।

रा.मा.वि. तुलसियों का नामला सलूम्बर, उदयपुर में गणतन्त्र दिवस की पूर्व संध यापर श्री सोहनबाई उषा बाबेल चेरिटेबल ट्रस्ट व मीरां चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से प्राप्त स्वेटरों को जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को वितरित किया गया।

रा.उ.मा.वि. रोटांवाली, सादु लशहरश्रीगंगानगर के भामाशाह श्रीमती द्वारकी देवी द्वारा पति की स्मृति में एक कक्षा-कक्ष मय बरामदा (लागत3 लाख) बनवाकर देने एवं लोकार्पण के अवसर पर अतिथियों द्वारासम्मान किया गया।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● मार्च, 2017 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2मार्च, 2017 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

आज़ादी की ल .डाई का एक अमिट पन्न

साथियों,

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता। लेकिन मैं एक शर्त पर ज़िंदा रह सकता हू ँकि मैं क़ैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता। मेरा नाम हिंदु स्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और क़ुर्बानियों ने मुझे बहु ऊँचा उठा दिया है इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज़ नहीं हो सकता।

आज मेरी कमज़ोरियाँ जनता के सामने नहीं है। अगर मैं फाँसी से बच गया तो वो ज़ाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम प .ड जाएगा या संभवत: मिट ही जाए। लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी च .ढने की सूरत में हिन्दु स्तानमाताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए क़ुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी ब .ढ जाएगी कि क्रान्ति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानीशक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी। हाँ एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थी, उनका हज़ारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र भारत में ज़िंदा रह सकता तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचे रहने का नहीं आया। मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे खुद पर बहुत गर्व है। अब तो ब .ड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतज़ार है। कामना है कि यह और नज़दीक हो जाए।

आपका साथी, भगतसिंह

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 9 | फाल्गुन २०७३-चैत्र २०७४ | मार्च, 2017

प्रधान सम्पादक
बी.एल. स्वर्णकार

वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्रजाटोलिया

सम्पादक
गोमाराम जीनगर

सह सम्पादक
मुकेश व्यास

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य :₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैरराजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिकशिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैकस्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- परीक्षा : तैयारी और प्रबन्धन 5
  आलेख
- वैज्ञानिक एवं खगोल सम्मत है भारतीय काल गणना 6
  विजय सिंह माली
- Tense, Time and Aspects 8
  Dr. Ram Gopal Sharma
- मानव पाचन तन्त्र संरचना तथा क्रियाविधि को समझने का आसान तरीका 12
  मार्गदर्शक समूह
- वृत्त : क्षेत्रफल व परिधि 13
  मार्गदर्शक समूह
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक प्रयास 14
  हरीश कुमार वर्मा
- बालिका 15
  पूर्णिमा मित्रा
- परीक्षा है पर भयभीत न हों 16
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- धरती राजस्थान की....। 17
  मनमोहन अभिलाषी
- वर्तमान आवश्यकता : मूल्यपरक शिक्षा 18
  गोपेश शरण शर्मा 'आतुर'
- शिक्षक की भूमिका 20
  मदनलाल मीणा
- राजकीय विद्यालय 21
  डॉ. ललित श्रीमाली
- प्रसन्नता पर हमारा अधिकार 22
  महेशचन्द्र श्रीमाली
- महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना के स्वर 32
  मधुबाला शर्मा
- ब्रह्मवादिनी गार्गी 33
  साभार : **'प्रातः स्मरणीय महिलाएँ'**
- विशेष अधिगम समर्थन पैकेज 34
  प्रेमनारायण गुर्जर
- स्त्री विमर्श : विचार एवं व्यवहार 36
  डॉ. विष्णुदत्त जोशी
- निष्पक्ष निर्णायक सरस्वती 38
  साभार : **'प्रातः स्मरणीय महिलाएँ'**
- होली रे होली तेरे रंग कितने 39
  आकांक्षा यादव
- राजस्थान में नारी शक्ति का परचम 40
  रामचन्द्र स्वामी
- कैसे करें अध्ययन-प्रभावी नुस्खे 46
  टेकचन्द्र शर्मा

रपट

- अन्तर्राज्यीय शैक्षिक भ्रमण 42
  नेहा
- खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता-16 43
  महेन्द्र चौहान
- श्रमदान व भवन का लोकार्पण 44
  अमित शर्मा

मासिक गीत

- होळी आयी रे... 19
  साभार : **'आपांरा गीत'**

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 23-30
- शिविरा पञ्चाङ्ग (मार्च-अप्रैल 2017) 30
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 31
- चतुर्दिक समाचार 47
- शाला प्रांगण से 48
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र : रामबाबू माथुर 7

पुस्तक समीक्षा 45-46

- समय की सीपियाँ : एन.सी. आसेरी
  समीक्षक-**डॉ. कृष्णा आचार्य**
- सृजन-मंथन : सी.एल. साँखला
  समीक्षक-**कु. अंशुप्रभा श्रीमाली**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

▼ चिन्तन

अंभोजिनी वन विहार विलासमेव, हंसस्य हन्तिनितरां कुपितो विधाता। नत्वस्य दुग्धजलभेदविधौप्रसिद्धां, वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः।।

भावार्थ-अगर विधाता हंस से नितांत ही कुपित हो जाए, तो उसका कमल वन का निवास और विलास नष्ट कर सकता है किन्तु उसकी दूध और पानी को अलग-अलग करने की प्रसिद्ध चतुराई की कीर्ति स्वयं विधाता भी नष्ट नहीं कर सकता। अर्थात् विद्या नष्ट नहीं हो सकती।

पाठकों की बात

- 'परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक' फरवरी 2017 आकर्षक और सुहाने कवर पृष्ठ के साथ मिला, देखकर अत्यन्त सुखद अनुभव हुआ कि इस बार के अंक में विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए विशेष सामग्री प्रयास-2017' एक अभिनव पहल' के नाम से नई व्यवस्था की गई है इस से प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए विशेषकर अंग्रेजी विषय का भय निकालने के दिए गए ट्रिक जरूर ही प्रभावी सिद्ध होंगे। परीक्षा के समय में छात्रों के लिए 'न डरें, न रखें तनाव' परीक्षा विशेष पर दिया गया आलेख जिसमें परीक्षा योजना और अध्ययन-योजना भी छात्रों के तनाव को दूर करने में सहयोगी साबित होगा। वसन्त पंचमी पर माता वागेश्वरी की प्रार्थना 'वर दे वीणा वादिनि' पढ़कर विद्यार्थी जीवन की यादें ताजा हो गई। 'मन की बात' द्वारा माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया उद्बोधन भी रोचक एवं प्रेरक लगा। इस अंक में दी गई सर्वोपयोगी सामग्री के लिए सम्पादक मण्डल को साधुवाद।

जय प्रकाश राणा, बीकानेर

- शिविरा माह फरवरी 2017 का अंक मिला, पढ़कर अपार प्रसन्नता हुई इस अंक में पृष्ठ 23 पर राकेश कुमार शर्मा द्वारा 'भौतिक विज्ञान को कैसे सरल बनाएँ' में उन्होंने 'लेमिंग का वाम हस्त नियम' को चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया है जो कमजोर से लेकर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए भी बहुत ही सहज और सरल सिद्ध होगा। इसी क्रम में उर्मिला चौधरी द्वारा हृदय व न्यूरोन के चित्र बनाने की सरल विधि के बारे में बताया गया है, जो अत्यन्त ही रोचक व प्रभावशाली है। इस विधि से विद्यार्थी तनावमुक्त होकर अध्ययन कर अपने मुकाम तक पहुँच सकते हैं। इस अंक में 'मन की बात' के तहत माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी की बातें भी प्रेरणास्रोत रही है। प्रधानमंत्री जी ने बच्चें को अपना भविष्य तराशने हेतु दिशा-निर्देश दिए जो वर्तमान शिक्षा के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। शिविरा में इस तरह के लेख छापने के लिए सम्पादक महोदय व उनकी टीम बधाई के पात्र हैं।

अर्जुनराम शीला, सीकर

- 'परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक' शिविरा आज दिनांक 14.02.2017 को प्राप्त हुआ, विशेषांक नाम की सार्थकता सिद्ध करता है। तथाकथित कठिन विषयों पर यथा आंग्लभाषा, भौतिक विज्ञान, सांख्यिकी, परीक्षा विशेष स्तम्भ में 'न डरें, न रखें तनाव', प्रयास स्तम्भान्तर्गत व मिशन मेरिट में प्रचुर पाठ्यसामग्री छात्रों, शिक्षकों हेतु परोसी गई है। यह बहुत अच्छा प्रयास है परीक्षा परिणाम उन्नयन की ओर। डॉ. रेणुका व्यास की वसन्त पंचमी विशेष स्तम्भ में, रचना रम्य रचना की कोटि में परिगणित की जा सकती है। साथ ही साथ प. दीनदयाल का शैक्षिक चिन्तन, स्वामी दयानन्द का शैक्षिक चिन्तन उच्चकोटि के आलेख हैं। हम दैनिक जीवन में जैसा व्यवहार करते हैं, वही तो सच्चा धर्म है। केवल उपदेश, उद्बोधन व किताबी प्रलेख कोई महत्व नहीं रखते। 'यही तो धर्म है' प्रसंग संक्षिप्त किन्तु सारवान है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'मन की बात' विशद् रूप में प्रस्तुत है जो पठनीय, मननीय व चिन्तनीय है। इसे पाठक विशेष कर छात्र व शिक्षक बार-बार अवश्य पढ़ें इसी अनुरोध के साथ सम्पादक मण्डल को बधाई देकर कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- शिविरा फरवरी 2017 का अंक मिलते ही आवरण की वसंती छटा देखकर मन बाग-बाग हो गया। 'परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक' के रूप में प्रकाशित अंक में परीक्षोपयोगी सामग्री, प्रधानमंत्री जी की 'मन की बात' व अन्य आलेख विद्यार्थियों के लिए संजीवनी का काम करने में सक्षम हैं। इनसे न केवल शैक्षिक अपितु मानसिक रूप से भी विद्यार्थी सक्षम होकर श्रेष्ठ परिणाम देंगे, ऐसा विश्वास है। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक चिंतन भी शिक्षाविदों को पाथेय प्रदान करेंगे। तभी तदनुरूप धारा परिवर्तन करके व्यष्टि से समष्टि का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध स्थापित कर मानव से महामानव बनाने का कार्य शिक्षा के माध्यम से हो सकेगा। संग्रहणीय सामग्री प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल साधुवाद का पात्र है।

सुभाष सोनगरा, चूरू

- फरवरी 2017 का शिविरा विशेषांक मन मोहक तो है ही इसमें प्रकाशित 'अपनों से अपनी बात' जहाँ युग पुरुष दीनदयाल उपाध्याय के जीवन से प्रेरणा लेकर मानव कल्याण की सीख देता है, वहीं निदेशक महोदय का दिशाकल्प भी विभाग द्वारा किए जा रहे अभिनव अभियान 'प्रयास-2017' की क्रियान्विति से परिणाम उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करता है। विभाग परीक्षा परिणाम के प्रति सदैव सजगता बरतता है किंतु इस बार बनाई गई कार्ययोजना बेमिसाल है उसकी क्रियान्विति निश्चित रूप से परिणाम उन्नयन का आधार बनेगी। इसके अतिरिक्त 'मन की बात' एवं अन्य सभी आलेख, मासिक गीत, कवि 'निरालाजी' के सम्बन्ध में जानकारी आदि का चयन भी प्रासंगिक व उपयोगी है। यथोचित सामग्री प्रकाशन के लिए प्रकाशन टीम का आभार।

लक्ष्मण डाभी, बाड़मेर

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

परीक्षा : तैयारी और प्रबन्धन

परीक्षा का अर्थ यह जानना कतई नहीं कि विद्यार्थी ने क्या नहीं सीखा ? वरन् यह है कि विद्यार्थी ने अपने ज्ञान में कितनी वृद्धि की है ? इस सोच से निश्चय ही परीक्षा का तनाव कम हो सकेगा। परीक्षा की सफलता के लिए लम्बी कूद के उस खिलाड़ी से प्रेरणा ले सकते हैं, जो जम्प लेने से पूर्व फिनिशिंग पाइण्ट पर पूर्ण क्षमता के साथ सही पैर रखते हैं। अतः परीक्षा हौवा नहीं वरन अपनी क्षमता के श्रेष्ठ प्रदर्शन का प्रयास है।

परीक्षा का प्रबन्धन उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि परीक्षा हेतु तैयारी। यह प्रबन्धन परीक्षा से पूर्व एवं परीक्षा के दौरान दोनों ही प्रकार का होता है। परीक्षा दिवस को स्वस्थ मन एवं शरीर के साथ परीक्षा कक्ष में जाएँ। इस हेतु आवश्यक है कि पूर्व दिवस को आहार-विचार से शुद्ध रहें, सहज रहें, जिससे कि तनाव न हो। परीक्षा कक्ष में साथ ले जाने वाली सामग्री यथा प्रवेश पत्र, कलम, अन्य सामग्री प्रथम दिवस से पूर्व ही तैयार कर लें। पोशाक और जूते ऐसे न हो, जो बिल्कुल नये हों और पहली बार ही पहने हों, जिससे असहजता लगे। परीक्षा का प्रश्नपत्र हल करने के लिए समय प्रबंधन भी बहुत आवश्यक होता है। प्रश्न पत्र का धैर्य से अवलोकन कर समय अनुसूची प्राथमिकता तय कर लेनी उचित होती है, किस प्रश्न को कितना समय देना है, उसका अंक भार कितना है। कहीं ऐसा न हो कि कम अंक भार के प्रश्न के लिए अनावश्यक अधिक समय खर्च कर दिया गया हो और अधिक अंक भार वाले प्रश्न के लिए समय शेष ही न रहे। प्रत्युत्तर को उप शीर्षक देकर अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

शिक्षकों का दायित्व है कि वे परीक्षा की इस अवधि में भी विद्यार्थियों के साथ बने रहें। कमज़ोर विद्यार्थियों के लिए रेमेडियल लघु सेशन जारी रखे जावें और टिप्स जिनके आधार पर आसानी से विषयवस्तु ग्राह्य होती है वह परीक्षा के ठीक पहले साधारणतया प्रभावी होती है।

यह परीक्षा केवल विद्यार्थियों की ही नहीं वरन शिक्षकों की भी है। अतः सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ। परीक्षा के महोत्सव की इस वेला में होली महोत्सव की रंग बिरंगी भारतीय छटा भी इस माह में वातावरण को सुन्दर बनाएगी, होली एवं भारतीय नववर्ष चैत्र प्रतिपदा पर सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को बधाई!!!

(बी.एल. स्वर्णकार)

"परीक्षा का प्रबन्धन उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि परीक्षा हेतु तैयारी। यह प्रबन्धन परीक्षा से पूर्व एवं परीक्षा के दौरान दोनों ही प्रकार का होता है। परीक्षा दिवस को स्वस्थ मन एवं शरीर के साथ परीक्षा कक्ष में जाएँ। इस हेतु आवश्यक है कि पूर्व दिवस को आहार-विचार से शुद्ध रहें, सहज रहें, जिससे कि तनाव न हो।"

नववर्ष विशेष

वैज्ञानिक एवं खगोल सम्मत है भारतीय काल गणना

❒ विजय सिंह माली

चैत्र शुक्ला एकम् वर्ष प्रतिपदा (28 मार्च) से युगाब्द 5119, विक्रमसवंत 2074 तथा शालिवाहन शक संवत 1939 का शुभारम्भ हो रहा है। अंग्रेजों के भारत में आने के पहले भारतीय जनसमुदाय इन्हीं संवतों को मानता था। समाज की व्यवस्था भी ऐसी थी कि बिना किसी प्रचार के हर व्यक्ति को तिथि, मास व वर्ष का ज्ञान हो जाता था। समाज की सम्पूर्ण गतिविधियाँ भारतीय कालगणना अनुसार बिना किसी कठिनाई के सहज रूप से संचालित होती थी। आज भी समाज का बड़ा हिस्सा भारतीय तिथि क्रम के अनुसार ही अपने कार्यकलाप चलाता है। पाश्चात्य कालगणना अर्थात ग्रेगेरियन कैलेण्डर की व्यापक घुसपैठ के बाद भी भारतीय कैलेण्डर का महत्त्व कम नहीं हुआ है।

पाश्चात्य कालगणना मैकाले प्रणीत शिक्षा प्रणाली के कारण हमारी जुबान पर भले ही हो, पर यह सटीक नहीं है, न ही वैज्ञानिक। पाश्चात्य कालगणना का प्रकृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। पाश्चात्य कालगणना का प्रारम्भ रोम में हुआ। पाश्चात्य कालगणना के आधार पर बने और वर्तमान प्रचलित कैलेण्डर में सब कुछ अनेक बार बदला जा चुका है। वहाँ पर कभी घड़ियों को पीछे किया गया हैं, तो कभी वर्ष के मास 10 से 12 किए गए है। कभी 3 सितम्बर को 14 सितम्बर किया गया है तो कभी वर्ष को 304 दिन से बढ़ाकर 360 का और 365 दिन का। इतना ही नहीं उनके मास आज भी 28, 29, 30 व 31 दिन के है। इन सब विसंगतियों के कारण पाश्चात्य कालगणना का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। वे माह की गणना चन्द्र की गति से करते हैं और वर्ष की गणना का आधार है सूर्य की गति। इसलिए 1 जनवरी, 25 दिसम्बर या 31 दिन को हर वर्ष सूर्य व चन्द्र की स्थिति एक ही होगी यह तय नहीं है। पहले 10 माह, फिर जुलाई, फिर अगस्त माह जोड़कर बारह माह करना, पहले मार्च से वर्ष प्रारम्भ करना, फिर 1 जनवरी से प्रारम्भ करना, फरवरी को चौथे वर्ष 29 दिन का मानना जैसे कई संशोधन करने के बाद भी इस काल गणना में त्रुटियाँ हैं। अब भी पृथ्वी के परिभ्रमण समय तथा ग्रेगेरी वर्ष में अन्तर आता रहता है। इसलिए घड़ियों को कुछ सैकण्ड आगे या पीछे करना पड़ता है।

भारतीय कालगणना में सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक सैकण्ड के सौवे भाग का भी अन्तर नहीं आया है। भारत में प्राचीन काल से मुख्य रूप से सौर तथा चन्द्र कालगणना व्यवहार में लाई जाती है। इसका सम्बन्ध सूर्य और चन्द्रमा से है। ज्योतिष के प्राचीन ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाने में 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 31 विपल तथा 24 प्रतिविपल (365.258756484 दिन) का समय लेती है। यही वर्ष का कालमान है। भारतीय वैज्ञानिकों ने वर्ष, महिने, दिन के साथ समय की अन्य इकाइयों की खोज की। महामुनि शुक्र के अनुसार 2 परमाणु = 1 अणु, 3 अणु =1 त्रसरेणु, 3 त्रसरेणु = 1 त्रुटि, 100 त्रुटि = 1 वेध, 3 वेध = 1 लव, 3 लव = 1 निमेश, 3 निमेश = 1 क्षण, 5 क्षण = 1 काष्ठ, 30 काष्ठ = 1 कला, 15 कला = 1 लघु, 15 लघु = 1 नाडिका, 2 नाडिका = 1 मुहुर्त, 30 मुहुर्त= एक दिन-रात, 7 दिन-रात = 1 सप्ताह, 2 सप्ताह = 1 पक्ष, 2 पक्ष = 1 मास, 2 मास = 1 ऋतु, 3 ऋतु = 1 अयन, 2 अयन = 1 वर्ष होता है। महान् गणितज्ञ भास्कराचार्य ने आज से 1400 वर्ष पूर्व लिखे अपने ग्रंथ में समय की भारतीय इकाइयों का विशद विवेचन किया है। ये इकाइयाँ इस प्रकार है -

225 त्रुटि= 1 प्रतिविपल, 60 प्रतिविपल = 1 विपल (0.4 सैकण्ड)
60 विपल = 1 पल (24 सैकण्ड)
60 पल = 1 घटी (24 मिनट)
2.5 घटी = 1 होरा (1 घंटा)
5 घटी या 2 होरा = 1 लग्न (2 घंटे)
60 घटी = 24 होरा = 12 लग्न = 1 दिन (24 घंटे)

स्पष्ट है कि एक विपल आज के 0.4 सैकण्ड के बराबर है तथा त्रुटि का मान सैकण्ड का 33, 750 वाँ भाग है। इसी तरह लग्न का आधा भाग जो होरा कहलाता है, एक घंटे के बराबर है। इसी होरा से अंग्रेजी में हॉवर (ऑवर) बना।

इसी तरह एक दिन में 24 होरा हुए। सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल 1 रविवार के दिन हुआ। इस दिन से पहले होरा का स्वामी सूर्य था, उसके बाद आने वाले दिन के होरा का स्वामी चन्द्रमा था, इसलिए रविवार के बाद सोमवार आया। इसी तरह सातों वारों के नाम सात ग्रहों पर पड़े। पूरी दुनियां में सप्ताह के सात वारों के नाम यही प्रचलित है। हमारे यहाँ समय की सबसे बड़ी इकाई कल्प को माना गया। एक कल्प में 432 करोड़ वर्ष होते है। 1 कल्प = 1000 चतुर्युग या 14 मन्वन्तर

1 मन्वन्तर= 71 चतुर्युगी, 1 चतुर्युग = 4320000 वर्ष

कलयुग कि अवधि 432000 वर्ष, द्वापर युग की अवधि 864000 वर्ष, त्रैतायुग की अवधि 1296000 तथा सतयुग की अवधि 1728000 वर्ष है। इस समय श्वेत वाराह कल्प चल रहा है, जिसका 7 वा मन्वन्तर वैवस्वत के 71 चतुर्युगी में से 27 बीत चुके है तथा 28 वीं चतुर्युगी के भी सतयुग, त्रेता तथा द्वापर बीत कर कलयुग का 5119 वाँ वर्ष प्रतिपदा को शुरू होने वाला है अर्थात् श्वेतवराह कल्प में 1, 97, 29, 49, 118 वर्ष बीत चुके है इस प्रकार सृष्टि का प्रारंभ हुए लगभग 2 अरब वर्ष हो गए हैं। आज के वैज्ञानिक भी पृथ्वी की आयु 2 अरब वर्ष बताते हैं।

भारतीय कालगणना खगोल सम्मत व वैज्ञानिक है। आकाश में 27 नक्षत्र है इनके 108 पाद होते हैं। विभिन्न अवसरों पर 9-9 पाद मिलकर 12 राशियों की आवृति बनाते हैं। इन राशियों के नाम मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन है। सूर्य जिस समय जिस राशि में स्थित होता है, वही कालखंड सौर मास कहलाता है।

वर्ष भर में सूर्य प्रत्येक राशि में एक माह तक रहता है अत: सौर वर्ष के 12 महिनों के नाम उपर्युक्त राशियों के अनुसार होते हैं। जिस दिन सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है, वह दिन उस राशि का संक्रान्ति दिन माना जाता है। इसी प्रकार चन्द्रमा पृथ्वी का चक्कर जितने समय में लगा लेता है वह चन्द्रमास कहलाता है। चन्द्रमा की गति के अनुसार तय किए गए महीनों की अवधि नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार कम या अधिक भी होती है। जिस नक्षत्र में चन्द्रमा ब.ढते ब.ढतेपूर्णता को प्राप्त होता है, उस नक्षत्र के नाम पर चन्द्रवर्ष के महीनों का नामकरण किया गया है। एक वर्ष में चन्द्रमा चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, आषा.ढ,श्रवण, भाद्रपदा, आश्विन, कृतिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा और फाल्गुनी नक्षत्रों में पूर्णता को प्राप्त होता है इसलिए चन्द्र वर्ष के महीनों का नाम चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषा.ढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन रखे गए हैं। मास के जिस हिस्से में चन्द्रमा घटता है उसे कृष्ण पक्ष व ब.ढनेवाले को शुक्ल पक्ष कहा जाता है। चन्द्रमा के 12 महीनों का वर्ष सौर वर्ष से 11 दिन, 3 घटी व 48 पल छोटा होता है। सामंजस्य बनाए रखने के लिए 32 महिने, 16 दिन, 4 घटी के बाद एक चन्द्रमास की वृद्धि मानी जाती है यही अधिक मास है। तीन साल में एक साल ऐसा अवश्य होता है कि दो अमावस्या के बीच में सूर्य की कोई संक्रान्ति नहीं प.ड़ती,वही मास ब.ढा हुआ माना जाता है। इसी प्रकार 140 से 190 वर्षों में एक ही चन्द्रमास में 2 संक्रान्ति आती हैं वह महिना कम हुआ माना जाता है। सौर वर्ष में इस प्रकार सामंजस्य बनता है। पाश्चात्य कालगणना में इसका अभाव है।

प्रत्येक भारतीय त्योहार चन्द्र या सूर्य की गति का अवलोकन व गणना करके निर्धारित होता है। जैसे राखी और होली पूर्णिमा को आएगी और पूरा चन्द्रमा दिखेगा। कृष्ण जन्म अष्टमी को तो राम जन्म नवमी को मनेगा और दीपावली अमावस्या को ही होगी। मकर संक्रमण पर अयन का परिवर्तन होता है। किस वर्ष में कुंभ कहाँ होगा, सूर्य और चन्द्र ग्रहण कब आएँगे, होली-दीपावली का वार किस वर्ष में कौनसा होगा। यह भारतीय कालगणना के आधार पर सहज ही जाना जा सकता है। सचमुच हमारी कालगणना ग्रहों-नक्षत्रों की गति पर आधारित होने से वैज्ञानिक एवं खगोल सम्मत है। पाश्चात्य कालगणना में इसका पूर्णतया अभाव है।

ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रंथ के अनुसार-

चैत्र मासे जगद ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहवि
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्योदये सति।

अर्थात् चैत्र मास शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने जगत की रचना की। सृष्टि इसी दिन से शुरू हुई ग्रह सृष्टि के प्रारंभ का दिन है। कलयुग संवत ईसा से 3102 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ महान खगोलविद आर्यभट्ट ने कहा जब वे 23 वर्ष के थे तब कलयुग के 3600 वर्ष व्यतीत हो चुके थे। उन्होंने शुद्ध कालगणना कर सिद्ध किया कि चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ही सृष्टि व कलयुग का प्रारंभ हुआ भास्कराचार्य ने भी अपने 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' ग्रंथ में सृष्टि प्रारंभ का दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही माना है। अत: वर्ष प्रतिपदा सम्पूर्ण विश्व व मानवीय सृष्टि का संवत्सर है। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का राज्याभिषेक, वरुण अवतार प्रभु झूलेलाल का जन्म दिन, महाराजा युधिष्ठिर द्वारा प्रारंभ संवत का प्रथम दिन, वीर विक्रमादित्य की विजय की स्मृति स्वरूप प्रारंभ विक्रम संवत का प्रथम दिन, पराक्रमी सम्राट शालिवाहन की स्मृति में प्रारंभ शक शालिवाहन संवत का प्रथम दिन, स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्यसमाज की स्थापना का दिन, विश्व के सबसे ब.डेस्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म दिन, न्याय शास्त्र के प्रणेता महर्षि गौतम की जयन्ती है। चैत्र नवरात्रा का पहला दिन भी वर्ष प्रतिपदा है।

भारतीय कालगणना के अनुसार हमारा नया वर्ष चैत्र शुक्ल एकम् (वर्ष प्रतिपदा) से प्रारंभ होता है। अत: हमें इसे धूमधाम से व हर्षोल्लास से मनाना चाहिए। हम इस नववर्ष के स्वागत में सूर्योदय के समय घर, मंदिर, मोहल्ले में सामूहिक या अकेले शंखनाद, घंटे घडियाल बजाएँ, अपने संस्थानों, कार्यालयों, घरों, मंदिरों, सार्वजनिक स्थानों पर दीप प्रज्वलित करें। नगरों, ग्रामों, बाजार-मोहल्लों में बंदन बार, तोरण, रंगोली आदि से सजावट करें, पताकाएँ लगावें, नववर्ष शुभकामनाओं के बैनर लगावें। दूरभाष, समाचार पत्र या अन्य संचार माध्यमों से परिचितों, सहकर्मियों, मित्रों, रिश्तेदारों को नववर्ष की बधाइयाँ व शुभकामना संदेश दें। एक दूसरे के घर जाकर भी बधाई दें। नए वस्त्र परिधान धारण करें, घर में मिष्टान्न बनावें सहभोज का भी आयोजन हो विद्यालयों में भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता व भारतीय नववर्ष के महत्त्व पर विचार गोष्ठी, कविता पाठ, भजन संध्या व अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन हो। ऋतुचर्यानुसार गुणकारी नीम-मिश्री का प्रसाद वितरण करें।

सचमुच भारतीय कालगणना हमारी महान ऐतिहासिक गौरवशाली विरासत का परिचायक है। हमें वर्ष प्रतिपदा को भव्य रूप में मनाकर भारतीय कालगणना के प्रति अपनी आस्था और श्रद्धा प्रकट करनी चाहिए। भारतीय काल गणना को वैश्विक विरासत का दर्जा दिलाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ तथा यूनेस्को जैसे मंचों से आह्वान भी करना चाहिए।

अभिनंदन, अभिनंदन
नूतन वर्ष का अभिनंदन
घर घर होवे सुख, न आवे दु : ख
कृपा करो रघुनंदन।
जीवन में बहार हो, हो मन गुलजार
सुगंधित ज्यों चंदन।
अभिनंदन, अभिनंदन
नूतन वर्ष का अभिनंदन

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि. मगरतलाव (पाली)
मो. 9829285914

प्रयास-2017 के तहत मेंटर समूह के विषय विशेषज्ञ-शिक्षकों द्वारा तैयार पाठ्यसामग्री

प्रयास–2017 की पूर्ण सफलता हेतु संस्थाप्रधानों, शिक्षकों व शिक्षा अधिकारियों ने व्यवस्थितप्रकार से योजनाएँ बनाई ही हैं ।इसी की निरंतरता में शिक्षण को बोधगम्य व प्रभावी बनाने हेतु विषय विशेषज्ञों द्वारा अपेक्षाकृत कठिन समझे जाने वाले विषयों यथा अंग्रेजी, विज्ञान एवं गणित विषय के कतिपय सूत्र तैयारकिए हैं ।उक्त सूत्र कक्षा 10 के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम उन्नयन एवं शिक्षकों हेतु उपयोगी व कारगर प्रतीत होने के कारण उनका प्रतीकात्मकसंकलन यहाँ भी प्रस्तुत किया जा रहा है ।योग्यशिक्षकवृन्दसे अपेक्षा है कि उक्त सूत्रों औरइसी प्रकार के अभ्यास करावाकर बोर्ड परीक्षा–2017 हेतु विद्यार्थियों का योग्यमार्गदर्शन कर उन्हेंतैयारकरें ताकि बोर्ड परीक्षा–2017 का उत्कृष्टपरिणाम विद्यार्थीहासिल कर सकें।

शिक्षा अधिकारियों से अपने कार्य क्षेत्र के विद्यालयों के सघन पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण के माध्यमसे बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सक्रिय भागीदारी निभाने का आग्रह है ।इसी विश्वास के साथ विषय विशेषज्ञों द्वारातैयारपाठ सर्वोपयोगार्थ प्रस्तुतहै । –वरिष्ठसंपादक

अंग्रेजी

Tense, Time and Aspects

❒ **Dr. Ram Gopal Sharma**

Short Tricks for Correct Forms of Verbs

• **EXAMPLE : (Affirmative Sentence :** साधारण वाक्य)

I	**WRITE**	**A LETTER**
Subject	**verb**	**object**

Tense	**Present**	**Past**	**Future**
Simple	**V_1 + s/es** ता है, ती है, ता हूँ, ते हैं	**V_2** ता था, ती थी, ते थे	**shall/will + V_1** गा, गे, गी
Continuous	**is/ am/are+ V_1 + ing** रहा है, रहा हूँ, रही हूँ, रहे हैं	**was/were+ V_1 + ing** रहा था, रही थी, रहे थे	**shall/will + be+ V_1 + ing** रहा होगा, रही होगी, रहे होंगे
Perfect	**have/has + V_3** चुका है, चुका हूँ, चुकी हूँ, चुके हैं	**had + V_3** चुका था, चुकी थी, चुके थे	**shall/will + have+ V_3** चुका होगा, चुकी होगी, चुके होंगे
Perfect Continuous	**have/has been+ V_1 + ing** रहा है, रहा हूँ, रही हूँ, रहे हैं+समय	**had been+ V_1 + ing** रहा था, रही थी, रहे थे+समय	**shall/will+have+been+V_1+ing** रहा होगा, रही होगी, रहे होंगे+समय

Examples

Simple	I write a letter.	I wrote a letter.	I shall write a letter.
Continuous	I am writing a letter.	I was writing a letter.	I shall be writing a letter.
Perfect	I have written a letter.	I had written a letter.	I shall have written a letter.
Perfect Continuous	I have been writing a letter.	I had been writing a letter.	I shall have been writing a letter.

EXAMPLE : (Negative Sentence : नकारात्मक वाक्य**) I DO NOT WRITE A LETTER**

Subject	**Helping Verb (First Part)**			
I	**Do/am/did/was/have/had/shall**	**not**	**Rest part of helping verb**	**Use V_1 in all simple present and simple past tense**
You	**Do/are/were/have/had/shall**			
He/She/It	**Does/is/was/has/had/will**			
We/They	**Do/are/were/have/shall**			

EXAMPLE : (Interrogative Sentence प्रश्नवाचक वाक्य) DO I WRITE A LETTER?

Take first part of H.V. before Subject in all types of tenses.

• **CONDITIONS :**

Adding of S or ES :

1. end of the verbs that has sibilant sounds - ss, ch, x, sh, o, z - add --'es'
2. verbs ending 'y' before vowel - add 's'
3. verbs ending 'y' before consonant ---- add 'ies' in place of 'y'
4. rest verbs - add 's'

Tense, time and aspects are different concepts in English.

Tense refers to the form of verb

Time is universal concept - present/past/future

Aspect (continuous/perfect) refers to the state of action

1. Present Simple-

Affirmative Sentence - V_1/s/es

Negative/Interrogative - do/does+V_1

-habitual actions, universal truths, proverbs, newspaper headlines, commentary, Historical past, habits ….

Adverbials-always, never, seldom, rarely, often, generally, usually, sometimes, daily, in the morning, everyday…..

Once a week/month/year

Stative verbs- be, have, appear, seem, sound, smell, taste, look, think, recognize, consider, know, remember, assume can be used

It sounds nice.

You look happy.

I know you.

He looks intelligent.

I get up early in the morning.

Man is mortal

The college reopens in July.

2. Present Continuous-

is/am/are+v_1+ing

Adverbials-now, at present, at this moment/time, now-a-days, these days, look,…., today

Look, She is packing her luggage.

The boys are playing in the garden now.

His health is gradually increasing.

3. Present Prefect- has/have+v_3

Adverbials-just, yet, recently, so far, already

It is first/second time .....

I have just bought a pen.

She has just gone out.

She hasn't finished the work yet.

I have known him for 10 years. (stative verb)

4. Present Prefect Continuous - has/have been+ V_1+ing -

Adverbials - since/for/ all day/ all morning/ all night…(present tense) for two days/ weeks/months/years - for a long time

He has been working since morning

He is tired as he has been doing his work for two hours.

She has been reading since I came.

She has been reading a novel since morning

It has been raining all day.

5. Past Simple -

Affirmative Sentence - V_2

Negative/Interrogative - did+V_1

Adverbials-yesterday/ ago/ last week…./ in 2000/ once/one day/ the other day in those days, at that time

It is time/It is high time ....V_2/were

if/as if/as though/would that/I wish/if only ...V_2/were

I went there yesterday.

Would that I were a bird!

It is time we started our study.

6. Past Continuous-

was/were+ V_1+ing

Adverbials - When/while (past tense)

When I entered the room, she was reading.

When I was going to market, I saw a snake.

While I was cooking, she was making a noise.

7. Past Prefect- had+v_3 -

Adverbials - just, yet, recently, so far, already+ past tense

Before/ after (v_2)

He said that he had already done the work.

I had reached before my teacher came.

The patient died after the doctor had come.

8. Past Prefect Continuous-

had been + V_1+ing

Adverbials - since/for/all day/all morning/all night,….+past tense

She was tired as She had been working since Monday.

Futurity in English-Generally shall/will+V_1 is not used with temporal like when/before/after/if/unless/until/ in case/as soon as etc.

9. Future Simple- shall/will + V_1

Adverbials - tomorrow, next, in 2015 / If-v_1……..will+v_1

(When/before/after/if/unless/ until/in case+v_1.....shall/will+v_1)

When I reach there, I will ring you.

If you invite me, I will attend your party.

10. Future Continuous

shall/will be+ v_1+ ing

Adverbials - At this time+ tomorrow/ next…

We shall be travelling at this time tomorrow.

When I reach home, she will be waiting for me at the door.

11. Future Prefect

Shall/will+ have+V_3

Adverbials - by +time

She will have done it by the time I reach.

12. Future Prefect Continuous

.. shall/will have been + V_1+ ing

Adverbials - since/for…+ next, tomorrow/ by+time/ when/before…V_1

13. Conditionals

If+V_1/V_1+s/es……will+V_1

If you invite me, I will come.

If+V_2/did+V_1/Were….Would +V_1

If you invited me, I would come.

If+had+V_3……Would have+V_3

If I had come, I would have come.

If+V_1/s,es..... V_1/s,es

If you heat ice, it melts.

Exercise

Fill in the blanks with the correct tense form of the verb given in the bracket (1-80)

1. Sangeeta …….. (go) to a party last night.
2. I …….. (wait) for Mohan since 6 P.M.
3. It is second time you …….. (abuse) me.
4. If you …….. (invite) me, I would have attended your marriage.
5. Lata always …….. (sing) in Hindi but she …….. (sing) in Tamil today.
6. I …….. (teach) English for twenty years.
7. If I …….. (answer) one more question, I would have passed.
8. Ravi …….. (read) English two hours daily.
9. I …….. (receive) her letter two weeks ago.
10. She always …….. (rest) after lunch.
11. He …….. (die) last Monday, he …….. (suffer) from cancer since 1998.
12. I shall inform you as soon as he …... (come).
13. Amit went home after he …….. (finish) his work.\
14. Don't disturb me. I …….. (read) a novel.
15. I was sure that I …….. (see) that

man before.
16. She …….. (write) a novel for five years but she …….. (not finish) it yet.
17. Wood …….. (float) on water but iron …….. (not float)
18. Please wake him up, he …….. (sleep) for three hours.
19. I have not finished …….. (paint) the colour.
20. Water …….. (boil) at 1000 C.
21. We …….. (go) to the cinema last evening, in fact, we go every Sunday.
22. Had I gone to Agra, I …….. (see) the Taj Mahal.
23. When I ……. (see) him last week, he … (work) in the garden.
24. If I …….. (be) a bird, I would fly high in the sky.
25. He walks as if the Earth …….. (belong) to him.
26. The sun …….. (rise) in the east and …….. (set) in the west.
27. We …….. (pay) the telephone bill last week.
28. It is first time I …….. (come) here.
29. I will wait here until Mohan …….. (come).
30. Trees ….. (be) very useful for us.
31. Pawan often …….. (come) late.
32. Versha has always …….. (help) the poor.
33. Drive carefully, children …….. (play) on the road.
34. It is time, you …….. (start) earning your own livelihood.
35. Every day last week, my aunt …….. (break) a plate.
36. They were building that bridge when I …….. (be) here last year, they …….. (not finish) it yet.
37. If I …….. (be) a ghost, I …….. (try) to frighten all the people I dislike.
38. Lend me your rubber, I …….. (make) a mistake and wish to rub it out.
39. If I …….. (have) time I would have visited the exhibition.
40. I ……..... (not like) the dance last night.
41. Only the wearer …….. (know), where the shoe …….. (pinch)
42. If you heat butter it …… (melt).
43. Mr. Rahul is one leave so Mr. Watson …….. (teach) English these days.
44. If the car had not broken down, we …….. (reach) in time.
45. If we had taken the other road, we …….. (arrive) earlier.
46. Situ usually …….. (go) to bed at nine o'clock.
47. If the doctor …….. (not give) me oxygen, I would have died.
48. Nisha …….. (not go) to school yesterday.
49. Some women are shouting for help, somebody …….. (fall) into the well.
50. I wish I …….. (be) a millionaire.
51. I wish I …….. (know) his address.
52. I …….. (not see) her since she left college.
53. When he …….. (reach) the stadium, the match had already started.
54. Look, a man …….. (run) after the bus, he wants to catch it.
55. He talks as if he …….. (be) a millionaire.
56. If he had invited me, I …….. (attend) his marriage.
57. The sun …….. (shine) during the day.
58. Gowri told me his name after he …….. (leave).
59. If I …….. (have) her address, I would have called on her.
60. If we …….. (have) Mohan in our team, we would have won the match.
61. He usually …….. (sit) at back of the class but he …….. (sit) in front row today.
62. AIDS ……. (be) a fatal disease.
63. She always …….. (go) for a morning walk.
64. If the pilot …….. (not make) the mistake, the plane would not have crashed.
65. Had you told me earlier I …….. (attend) the meeting.
66. We …….. (go) to the theatre last evening.
67. The match ……. (begin) before they reached the stadium.
68. Last Saturday, we …….. (go) to visit some friends in a neighboring town.
69. He often …….. (come) here.
70. I dislike …….. (watch) cricket.
71. The weather ……. (be) warmer yesterday than it is today.
72. Neha went out at ten o'clock, and she…….. (not return) yet.
73. I …….. (write) to him last week, but he …… (not reply) yet.
74. I wish I …….. (be) a prince.
75. Her health …….. (improve) greatly since she …….. (go) to live in the country.
76. They …….. (not speak) to each other since they had that quarrel.
77. This road …….. (run) from Jaipur to Agra.
78. I enjoy …….. (read) novels.
79. Death ……. (come) to everyone sooner or later.
80. If you …….. (be) a fish, the cat would eat you.

Fill in the blanks with the correct tense form of the verb given in bracket. (81-85)

When I reached her place, a man (81) …….. (sit) there. He had a familiar face, but I (82) …….. (cannot recognize) him. She told me his name after he (83) …….. (leave). I then (84) …….. (remember) he used to visit us at Dehradun. I asked her when he (85) …….. (come) again.

Fill in the blanks with the correct tense form of the verb given in bracket. (86-90)

I (86) …….. (expect) him yesterday. He (87) …….. (not come) yet. No one knows what has (88) …….. (happen) to him. Perhaps he (89) …….. (reach) here tomorrow. You can (90) …….. (see) him then.

Correct the following sentences. (91-125)

91. This road is **running** from Jaipur to Agra.
92. The ship has **sank**.
93. If you **would have seen** the movie, you would have liked it.
94. He is **reading** ten hours daily.
95. I did not **knew** the answer.
96. Why did you **went** there?
97. Dead men **tells** no tales.
98. He always **help** me.

99. It **is** raining for a week.
100. Dutta **is** living here since 1998.
101. He said that he **wants** to go home.
102. I wish I **was** as tall as you.
103. I **have received** her letter two weeks ago.
104. He **is working** in the post office for ten years.
105. I **am knowing** all the facts about him.
106. The bell **has gone** before I reached the school.
107. I **live** in Delhi since 1995.
108. I **have passed** the BA Degree Exam in 1990.
109. I **am having** a large family.
110. He **is knowing** English.
111. **Did** you not **finish** your exercise yet?
112. I **am going** to school by bus every day.
113. Last night I **eat** ice cream.
114. I **have seen** that film last week.
115. They **were playing** chess since morning.
116. If I **will have** time I shall visit the exhibition.
117. We **got** everything ready long before they arrived.
118. He walks as if he **is** a king.
119. We **have had** a very enjoyable holiday last month.
120. The earth **is moving** round the sun.
121. Did you **saw** the match yesterday?
122. I **have had** my dinner an hour ago.
123. I **have met** her last Sunday.
124. He never **tease** girls.
125. I **am working** in this office since 1995.

Key to the Exercise

1. went
2. have been waiting
3. have abused
4. had invited
5. sings, is singing
6. have been teaching
7. had answered
8. reads
9. received
10. rests
11. died, had been suffering
12. comes
13. had finished
14. am reading
15. had seen
16. has been writing/has not finished
17. floats, does not float
18. has been sleeping
19. painting
20. boils
21. went
22. would have seen
23. saw/was working
24. were
25. belonged
26. rises, sets
27. paid
28. have come
29. comes
30. are
31. comes
32. helped
33. are playing
34. started
35. broke
36. was have not finished
37. were, would try
38. have made
39. had had
40. did not like
41. knows, pinches
42. melts
43. is teaching
44. would have reached
45. would have arrived
46. goes
47. had not given
48. did not go
49. has fallen
50. were
51. knew
52. have not seen
53. reached
54. is running
55. were
56. would have attended
57. shines
58. had left
59. had had
60. had had
61. sits, is sitting
62. is
63. goes
64. had not made
65. would have attended
66. went
67. had begun
68. went
69. comes
70. watching
71. was
72. has not returned
73. wrote, has not replied
74. were
75. has improved, went
76. has not spoken
77. runs
78. reading
79. comes
80. were
81. was sitting
82. could not recognized
83. had left
84. remembered
85. would come
86. expected
87. has not come
88. happened
89. will reach
90. see
91. runs
92. sunk
93. had
94. reads
95. know
96. go
97. tell
98. helps
99. has been raining
100. has been living
101. wanted
102. were
103. received
104. has been working
105. know
106. had gone
107. have been living
108. passed
109. have
110. knows
111. have you not finished
112. go
113. ate
114. saw
115. had been playing
116. If I have time
117. had got
118. were
119. We had a very
120. moves
121. see
122. had
123. met
124. teases
125. have been working

Reader and Chief Resource Person
ELTI, Govt. IASE, Bikaner
Mo. 9460305331

विज्ञान

मानव पाचन तन्त्र संरचना तथा क्रियाविधि को समझने का आसान तरीका

विज्ञान विषय को जटिल समझा जाता है। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। विज्ञान को चित्रों और प्रयोगों के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। हमारा शरीर विभिन्न तंत्रों से मिलकर बना है। उनमें एक महत्त्वपूर्ण तन्त्र पाचन तन्त्र भी है। पाचन तंत्र वास्तव में शरीर का वह हिस्सा है जिसके माध्यम से शरीर रूपी मशीन को चलाने के लिए काम आने वाली ऊर्जा को बनाने के लिए आवश्यक तत्त्व प्राप्त होते हैं। सीधे शब्दों में कहें तो यदि हम भोजन नहीं करें तो शरीर रूपी मशीन को ऊर्जा नहीं मिलेगी। यानी शरीर रूपी मशीन का यह महत्त्वपूर्ण भाग है। लेकिन यह जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही जटिल भी है। इस कारण इसके प्रति समझ बनाने में विद्यार्थियों को परेशानी होती है। वे कभी इसका चित्र याद करते हैं तो कभी इसके तंत्र के विभिन्न अंगों में होने वाली क्रियाओं को याद करते हैं।

प्रयास 2017 के तहत ऐसी विधि तैयार की जिसके माध्यम से विद्यार्थी पाचन तंत्र और उसकी क्रियाविधि के बारे में सरलता से समझ बना सकते हैं। चित्र के साथ ही उसका नामांकन कर संबंधित अंगों द्वारा संपादित किए जाने वाले कार्यों को बताया है। अत: विद्यार्थी इस चित्र के माध्यम से पाचन तंत्र, उसके विभिन्न अंग, विभिन्न अंगों के कार्य तथा विभिन्न अंगों में होने वाली पाचन संबंधी क्रियाओं के बारे में आसानी से समझ बना सकते हैं।

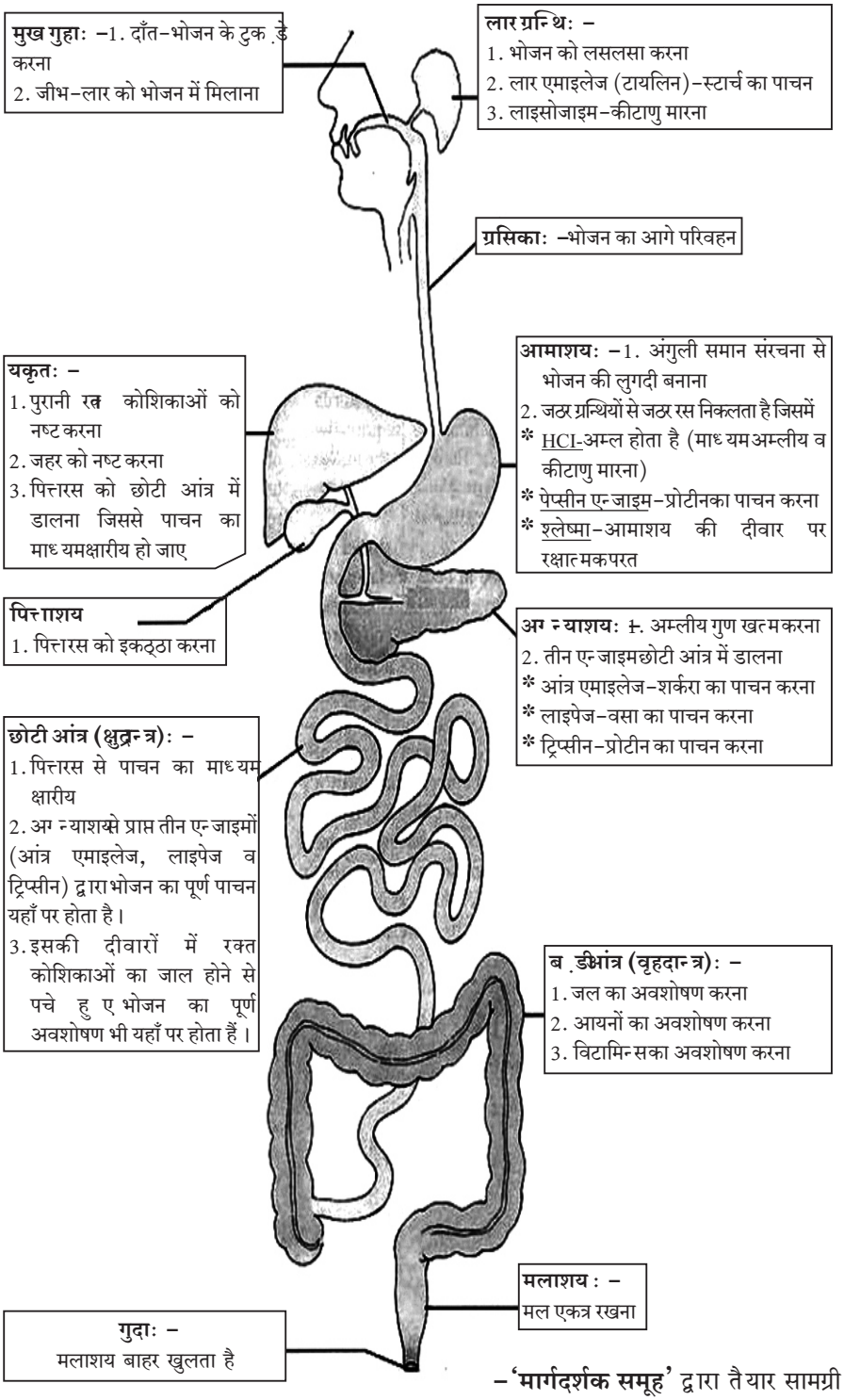

–'मार्गदर्शक समूह' द्वारा तैयार सामग्री

गणित

वृत्त : क्षेत्रफल व परिधि

(a) वृत्त के भाग:–

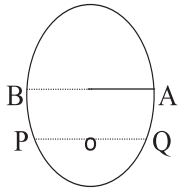

O ⟶ वृत्त का केन्द्र

OA ⟶ वृत्त की त्रिज्या = r

OB ⟶ वृत्त की त्रिज्या = r

AB ⟶ वृत्त का व्यास = OA+OB

$= r+r$

$=2r$

व्यास = 2 x त्रिज्या

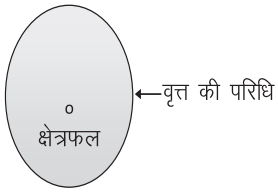

छायांकित भाग ⟶ क्षेत्रफल

वृत्त की परिधि = $2\pi r$

वृत्त का क्षेत्रफल = πr^2

यहाँ $\pi = \frac{22}{7}$ या =3.14

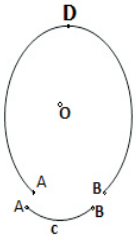

परिधि के भाग (टुकड़े) चाप कहलाते है।

चाप A C B ⟶ लघु चाप

चाप A D B ⟶ दीर्घ चाप

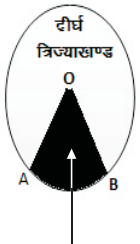

लघु त्रिज्याखण्ड
(क्षेत्रफल का भाग)

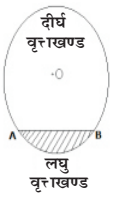

<u>महत्त्वपूर्ण सूत्र:–</u>

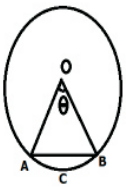

(i) वृत्त के चाप A C B की लम्बाई = वृत्त की परिधि $\times \frac{\theta}{360^\circ}$

$= 2\pi r \ \frac{\theta}{360^\circ}$

(ii) वृत्त के दीर्घ चाप की लम्बाई = वृत्त की परिधि – लघु चाप की लम्बाई

(iii) वृत्त के लघु त्रिज्याखण्ड का क्षेत्रफल

= वृत्त का क्षेत्रफल $\times \frac{\theta}{360^\circ}$

$= \pi r^2 \frac{\theta}{360^\circ}$

(iv) वृत्त के दीर्घ त्रिज्याखण्ड का क्षेत्रफल = वृत्त की क्षेत्रफल – लघु त्रिज्याखण्ड का क्षेत्रफल

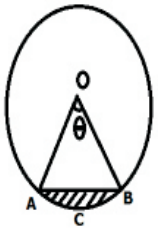

(v) वृत्त वृत्तखण्ड का क्षेत्रफल = त्रिज्याखण्ड AOBCA का क्षेत्रफल–Δ AOB का क्षेत्रफल

$= \frac{\pi r^2 \theta}{360^\circ} - \frac{1}{2} r^2 \sin\theta$

(vi) दीर्घ वृत्तखण्ड का क्षेत्रफल=वृत्त का क्षेत्रफल–लघु वृत्तखण्ड का क्षेत्रफल

नोट:–

1. वृत्त का चतुर्थांश वृत्त का एक त्रिज्याखण्ड होता है जिसका कोण $\theta = 90^\circ$ होता है।
2. घड़ी की सुई के प्रश्नों में सुई की लम्बाई वृत्त की त्रिज्या r के स्थान पर लेंगे।
3. यदि घड़ी की सुई मिनट की सुई है तो कोण $\theta = 6' \times$ समय
4. यदि घड़ी की सुई घण्टे की सुई है तो कोण $\theta = \frac{1'}{2} \times$ समय
5. वृत्ताकार पहिये द्वारा लगाये गए 1 चक्कर की लम्बाई
   = पहिये की परिधि
   $= 2\pi r$
6. पहिये द्वारा तय की गई दूरी = चक्करो की संख्या X परिधि
7. पहिये द्वारा लगाये चक्करों की संख्या = $\frac{\text{तय की गई दूरी}}{2\pi r}$

–'मार्गदर्शक समूह' द्वारा तैयार सामग्री

देव! यह आशीष शुभ दो

चल सकें हम ध्येय पथ पर
सह सकें बाधा अनेकों।
मातृ-पद में लीन तन-मन
भावना विकसित वरण दो
देव! यह आशीष शुभ दो।।।।।

क्षुद्र जग की वासनाएँ
स्वार्थमूलक भावनाएँ
दूर हों, जीवन सफल हो
बस यही गति यही मति दो।।
देव! यह आशीष शुभ दो।।2।।

मातृ-सेवा के व्रती हम
निज बनें सबको बनायें।
देश का सौभाग्य जागे
सिद्ध वह संजीवनी दो।।
देव! यह आशीष शुभ दो।।3।।

साभार : **'राष्ट्रवंदना'** पुस्तक से

परीक्षा सामयिक

माध यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक प्रयास

❒ हरीश कुमार वर्मा

बालक का सर्वांगीण विकास विद्यालय के आकर्षक व सुन्दर पर्यावरण एवं भौतिक, शैक्षिक, मानवीय संसाधनों के द्वारा ही संभव है।

बालक का मूल्याँकन हम विद्यालय में परीक्षा प्रणाली के द्वारा ही करते हैं ,वह परीक्षा चाहे प्रायोगिक, मौखिक व लिखित होती है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली ऐसी है कि बालक को निरन्तर अध ययनशील रहना प .डत है। परीक्षा के टेस्ट, अर्द्धवार्षिक, प्रायोगिक, प्री बोर्ड तथा वार्षिक व बोर्ड परीक्षा के विभिन्न सोपानों को पार करने के बाद ही वह कक्षा दस व बारह उत्तीर्ण कर पाता है।

परीक्षा प्रणाली के अलावा कुछ घटक ऐसे हैं ,जो अभिप्रेरणा व मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं , जैसे-शिक्षकों द्वारा व्यक्तिगत मार्गदर्शन, अभिभावक, समाज के नागरिक एवं घर-परिवार का सकारात्मक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि।

नकारात्मक विचार, प्रता .डनाएँ, ईर्ष्या, स्वार्थपरक दृष्टिकोण बालकों के परिणाम में बाधक सिद्ध होते हैं। विद्यालय में कक्षा-शिक्षण के अन्तर्गत प्रायोगिक कार्य, सहशैक्षिक पद्धतियों से शिक्षण, पाठ्यक्रम नवाचार, क्रियात्मक अनुसंधान एवं नवीन शोध आधारित शिक्षण बालकों को परीक्षा में उत्तीर्ण करवाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

बोर्ड की कक्षाओं में मेरिट में स्थान प्राप्त करने के लिए विद्यालयों के शिक्षकों एवं संस्था प्रधान की प्रमुख भूमिका रहती है। विद्यालय में शिक्षण के अलावा बालक को घर पर 6 से 8 घण्टे नियमित स्वाध याय करना अतिआवश्यक है। लिखित कार्य, व्यक्तिगत नोट्स तैयार करना, सामान्य ज्ञान में अभिवृद्धि, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी ई-पाठ्यक्रम की तैयारी, कक्षा में विशेष शिक्षण आदि घटक बालकों को अपने श्रेणी में विशेष स्थान प्राप्त कराने में सहायक हो सकते हैं। अतः इन पर समुचित ध यान दिया जाना चाहिए।

मेरिट में स्थान प्राप्त करने का स्वर्णिम

अवसर गिनी चुनी संस्थाओं को ही मिल पाता है। यदि प्रत्येक विद्यालय कक्षा दस व बारह के विद्यार्थियों को उच्चतम श्रेणी व मेरिट में स्थान दिलाने के लिए विशेष प्रयास करें, तो निश्चित ही सफलता मिल सकेगी।

बालकों को हम कक्षा में पूर्ण एकाग्रता से शिक्षण कार्य करावें, उसको व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करें, गत वर्षों के बोर्ड-प्रश्न पत्रों को हल करवाते समय अतिरिक्त कक्षाओं द्वारा शिक्षण कराना, अभिभावकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके भी बोर्ड परीक्षा परिणाम में वृद्धि की जा सकती है।

मेरिट में स्थान प्राप्ति हेतु 13 सूत्रीय कार्यक्रमः

1. कक्षा 10 व 12 की बोर्ड परीक्षा में मेरिट में स्थान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को स्वयं अपनी नियमित दिनचर्या बनाकर अध ययन करना चाहिए, अपने अध ययन को सुव्यवस्थित कर शैक्षिक वातावरण बनाकर 6 से 8 घण्टे स्वाध याय करना चाहिए।
2. कक्षा में प .ढाने वाले शिक्षकगण भी अपनी-अपनी कक्षा के सर्वश्रेष्ठ, प्रतिभावान बालकों की सूची बना लेवें, और उन्हें व्यक्तिगत रूप से समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करें।
3. कक्षा 9 से 11 में वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित होते ही स्वयं संस्था प्रधान, सर्वोच्च प्राप्तांक लाने वाले बालकों के माता-पिता को आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित करें तथा ग्रीष्मकाल में पृथक से अध ययनहेतु अभिप्रेरित करें।
4. विद्यालय में समस्त विषयाध यापक भी कठिन विषयों के लिए कक्षा 9 व 11 के बालकों की पृथक् से सूची बनाकर उनकी कठिनाइयों का निराकरण करें।
5. प्रतिभावान विद्यार्थियों के माता-पिता को विद्यालय में प्रार्थना स्थल, पर्व-जयन्ती, सार्वजनिक समारोह तथा अभिभावक सम्मेलन में आमंत्रित कर प्रशंसा पत्र प्रदान करें। छात्रों की विभिन्न कठिनाइयों के सम्बन्ध में परस्पर चर्चा कर उन्हें निरन्तर आगे ब .ढाने के लिए सुझाव प्रदान करें।
6. प्रतिवर्ष माह जुलाई या सत्र के आरम्भ में श्रेष्ठ बालकों की सूची बनाकर उनकी लिखित परीक्षा लेकर आगे की प .ढाई हेतु सकारात्मक सुझाव एवं स्वाध याय हेतु अभिप्रेरित भी करें।
7. प्रत्येक विषयाध यापक को पाठ की इकाई के अध ययन के पश्चात् उस इकाई से सम्बन्धित वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरात्मक, अतिलघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नों का निर्माण कर उन्हें, कक्षा में बालकों की सहायता से हल कराया जाना चाहिए।
8. बालकों में प्रश्नों को भली प्रकार समझकर, सटीक एवं प्रभावशाली भाषा में उत्तर देने की कला का विकास करना चाहिए। स्वयं अध यापक को उदाहरण स्वरूप कुछ प्रश्नों को कक्षा में आदर्श उत्तर के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए ताकि बालक शीघ्र ही अपना मनोबल ब .ढा सके। निबन्धात्मक प्रश्न के प्रत्येक भाग का पृथक्-पृथक् परिच्छेदों में उत्तर देने का अभ्यास छात्रों को कराना चाहिए।
9. प्रत्येक जाँच परीक्षा, अर्द्धवार्षिक परीक्षा, प्री-बोर्ड परीक्षा में मेधावी छात्रों के प्राप्तांकों की समीक्षा कर, जिन विषयों में अपेक्षाकृत कम प्राप्तांक है, उनमें विशेष

मार्गदर्शन प्रदान करावें एवं कठिन परिश्रम द्वारा समय-समय पर आगे ब.ढानेकी प्रेरणा स्वयं अध्यापकप्रदान करें।

10. प्रतिभावान चयनित छात्रों को गत 5 वर्षों के बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्रों को हल, कराकर बिन्दु वाऽत्तर लिखने का भी अभ्यास कराना चाहिए ताकि परीक्षा में उत्तर लिखने की कला व तकनीकी का स्वतः विकास हो सके।
11. प्रतिवर्ष माह जुलाई से ही कक्षा में प्रतिभावान छात्र/छात्राएँ अपनी उपस्थिति शत-प्रतिशत सुनिश्चित करें। आकस्मिक कारणों से यदि ऐसे छात्र कक्षा में उपस्थित नहीं हो पाए तो विषयाध्यापक का दायित्व है कि उन्हें अतिरिक्त समय प्रदान कर उस अवधि में प.ढाए गएप्रकरणों को पुनः समझानेका प्रयास करें क्योंकि बोर्ड परीक्षा में किसी एक प्रश्न को छो.ड्देने या उसका गलत उत्तर देने पर अंक काटे जाते हैं तथा छात्र की वरीयता भी प्रभावित होती है।
12. प्रतिभावान विद्यार्थियों के घर व अध्ययन कक्ष में समस्त पाठ्य सामग्री, सामान्य ज्ञान वृद्धि हेतु आवश्यक पुस्तकें, दैनिक समाचार पत्र तथा स्वयं की स्वाध्यायकी दिनचर्या लिखित में एक कैलेण्डरके रूप में अंकित करावें। घर के सभी सदस्य एवं विद्यालय के शिक्षक सभी मिलकर बालक को व्यक्तिगत रूप से अभिप्रेरित करें, ताकि स्वयं बालक अपने आप को मेरिट में स्थान प्राप्त करने के लिए तैयार कर सकें।
13. विद्यालय के संस्था प्रधान अपने कक्ष में प्रतिभावान बालकों की सूची को प्रदर्शित करें तथा गत 5 वर्षों में जिले में मेरिट में स्थान प्राप्त करने वाले बालकों को आमंत्रित कर उनकी प्रतिभा से अपने विद्यालय के बालकों को अवगत कराएँ, साथ ही चर्चा-परिचर्चा से बालकों को लाभान्वितकरने का प्रयास करे।

कक्षा 10-12 में मेरिट हेतु कुछ टिप्स

1. पाठ्य पुस्तकों एवं संदर्भ पुस्तकों से बालक स्वयं पूर्व में ही लिखकर अपने नोट्स तैयारकरें।
2. स्वयं का मनोबल बनाए रखें, अतिविश्वास से दू रहें।
3. समय पर नियंत्रण रखें, परीक्षा में प्रश्न-पत्र के 3 घण्टे के समय को आवश्यकतानुसार उत्तर लिखने के लिए पूर्व में ही विभाजन कर लें।
4. स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन, एकाग्रता एवं परिश्रम पर पूर्ण भरोसा रखें।
5. घर के वातावरण को स्वाध्याय के अनुकूल बनाएँ।
6. स्वयं का लक्ष्य (टारगेट) बनाकर पूर्व में तैयारीप्रारम्भ करें।
7. कठिन विषयों पर अधिक ध्यान दिया जाए।
8. एकाग्रचित्त होकर पूर्ण विश्वास के साथ प.ढाईं जुट जाएँ।
9. चिन्ता नहीं, प.ढाईकरें। असफलता की आशंका का त्यागकरें।
10. अपने गुरुजनों से समय-समय पर मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करें। अपनी कमजोरियों को दू करने का प्रयास करें।
11. माता-पिता, अभिभावक की प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं बुजुर्गों की मंगलकामनाएँ सदैव आत्मविश्वास ब.ढाती है जो सहायता करती है।

उपर्युक्त टिप्स एवं सूत्र लेखक की प्रायोजना है। इसकी क्रियान्विति स्वयं बालक एवं विद्यालय के शिक्षकों की सूझ-बूझ का परिचायक सिद्ध होगी। अन्य प्रयास भी बालक को मेरिट में स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकेंगे। विद्यालय में कुशल प्रबन्धनएवं प्रशासन के द्वारा संस्था प्रधान अपने श्रेष्ठतम प्रयत्नों से संस्था की सौरभ को चहु ओर फैलाने में सार्थक हो सकेगा। अन्तमें,

कोई भी मंजिल
रह सकती कब तुम से दू है,
साथियों कदम ब.ढाना होगा,
इतनी शर्त जरूर हैं।

आइये, हम बच्चें के साथ उपर्युक्त टिप्स को साझा कर उन्हें परीक्षाओं में उत्तम अंक दिलाने में भागीदार बनें।

15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स,
वैशाली अपार्टमेन्ट के आगे, मनवाखे.डा रोड,
हिरणमगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.)
मो: 9982045522

लघुकथा

बालिका

❐ **पूर्णिमा मित्रा**

टाउन हॉल में वृषाली 'वत्सला' का अभिनंदन किया गया। इस मौके पर उन्होंने 'बालिका शिक्षा में हमारी भूमिका' पर लम्बा चौ.डाभाषण दिया। श्रोताओं के हाथों की तालियों से पुलकित होकर अपनी सीट पर वापिस बैठ गई। बैठते ही उन्हें अपने घर में प.डेजूठे बर्तनों का ख्याल आया। फिर क्या था, उन्होंने फौरन मोबाइल पर महरी को डांटना शुरू कर दिया। प्रत्युत्तरमें जैसे ही महरी ने अपनी बीमारी का हवाला दिया। वे झल्ला कर बोली, ''तू बीमार है तो अपनी जगह अपनी छोरी को काम करने नहीं भेज सकती? दो दिन तेरी छोरी स्कूल नहीं जाएगी तो कोई आसमान नहीं टूट प.डेगा।''

दाँत पीसकर खटाक से अपना मोबाइल ऑफ किया। अपने पास बैठी सुशीला जी से बोली, ''जब से सरकार ने निः शुल्कशिक्षा और मिड डे मील योजना चालू की है। सस्ते में घरेलू काम करने वाली बच्चियाँ मिलनी ही मुश्किल हो गई।''

''इसीलिए तो मैं गाँव से अपने निठल्ले देवर की तीसरी छोरी को ले आई हूँ। अब दस साल तक झा.डूपोंछे और बर्तन माँजने से मुक्ति। ऊपर से बैठे-बैठे चाय-नाश्ता और खाना मिलता रहेगा।'' सुशीला उनके दिल पर छुरियाँ चलाते हुए बोली। एक गहरी साँस लेकर वह गि.डगि.डाते हुए बोली, ''मौका मिले तो उसके जैसी ले आइए, मेरे लिए कोई बच्ची। इन घरेलू कामों के टेंशन के मारे मैं बालिका शिक्षा पर पूरा ध्यानहीं दे पा रही हूँ।''

''वो तो है। बालिका बिना हम जैसियों का काम कहाँ चलता है।'' सुशीला मुस्कुराकर दू सरीतरफ देखने लगी।

ए-59, करणी नगर,
नागणेचीजी रोड, बीकानेर-334003
मो. 8963826490

परीक्षा सामयिक

परीक्षा है पर भयभीत न हों

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

कहा जाता है कि जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है जीवन है तो संघर्ष है, वरना कुछ भी नहीं। यह भी कहा जाता है कि जीवन एक कसौटी है। जो पग-पग पर परीक्षा लेती है। जिसने हिम्मत न हारी, उसकी जीत होती है।

जिन्दगी में यदि परीक्षा इतनी महत्त्वपूर्ण है तो इससे घबराना कैसा?

परीक्षा को लेकर अच्छे-अच्छों के छक्के छूट जाते हैं। फिर बच्चों की बिसात ही क्या? अध्ययनरत बच्चों को वर्ष में कितनी बार परीक्षा के दौर से गुरजना पड़ता है। कुछ बच्चे तो परीक्षा को सहज रूप से स्वीकार कर हँसते-हँसते, खुशी-खुशी परीक्षा देते हैं और उसमें कामयाबी भी हासिल करते हैं। किन्तु कुछ बच्चे परीक्षा को भूत समझते है। परीक्षा का नाम लेते ही उनके पसीने छूटने लगते है। उनका खाना-पीना हराम हो जाता है, दिन का चैन और रातों की नींद गायब हो जाती है। उनकी सारी खुशियाँ काफूर हो जाती हैं। देखा आपने परीक्षा का चमत्कार! कहीं खुशी तो कहीं ग़म है।

हम थोड़ा इतिहास में चलें। प्राचीन समय में शिक्षा गुरुओं द्वारा आश्रम में दी जाती थी। बालक आश्रम में रह कर ही अध्ययन करता था और जब उसकी शिक्षा पूर्ण हो जाती तो अंत में गुरु उनकी परीक्षा लेते थे। जब शिष्य परीक्षा में सफल हो जाता तब ही उसकी शिक्षा पूर्ण मानी जाती थी। उस समय की परीक्षा आज की तरह कोई साधारण परीक्षा नहीं थीं। शिष्यों को परीक्षा के कठिन दौर से गुजरना पड़ता था। वे परीक्षाएँ सफल जीवन एवं जीवन निर्वाह से जुड़ी होती थी। जिन्हें शिष्य अपनी सूझ-बूझ और आश्रम में अर्जित शिक्षा से उत्तीर्ण कर लेता था। यही नहीं, प्राचीन समय में देवताओं और ऋषि-मुनियों को भी परीक्षा के दौर से गुजरना पड़ता था। भारतीय समाज में ऐसी कई परीक्षाओं की दंत कथाएँ आज भी प्रचलित हैं।

परीक्षा का अर्थ है-परि+ईक्षा। यानि किसी के गुण, दोष, शक्ति, योग्यता आदि की ठीक ठीक स्थिति जानने या पता लगाने की क्रिया या भाव अर्थात् इम्तिहान (जाँच पड़ताल)। किन्तु आज के युग में परीक्षा का मायना-परीक्षा में उच्च स्तर पर कामयाबी हासिल करने से है। यानी परीक्षा परिणाम में मेरिट या उसके निकट अधिकतम अंक लाने से है। बेरोजगारी और प्रतिस्पर्धा ने परीक्षा पैटर्न को और भी दुरूह बना दिया है। ऐसे में कामयाबी की चिंता बालकों और युवाओं के लिए परेशानी का सबब बन जाती है। ऐसे में हर कोई यह कहता पाया जाता है कि-

सताती है परीक्षा। रुलाती है परीक्षा।
कमबख्त कब खत्म होगी ये परीक्षा।।

यह तो परीक्षा का 'माइनस पोइण्ट' यानि कि नकारात्मक पहलू हुआ कि परीक्षा भय पैदा करती है। किन्तु परीक्षा का दूसरा सकारात्मक पहलू भी है कि-परीक्षा बुद्धि-लब्धि और मानसिक क्षमता को नापने का वह पैमाना है जिसके माध्यम से परीक्षार्थी की योग्यता, दक्षता और बौद्धिक विकास का पता लगा कर, विभिन्न सोपानों के माध्यम से जब वह सफलता हासिल करता हुआ मंजिल पर पहुँचता है, तो उसकी खुशी शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। ऐसे समय में ढेरों बधाइयाँ, शुभकामनाएँ एवं ढेरों आशीर्वाद उसके लिए किसी संजीवनी से कम नहीं होते। ऐसे छात्र परीक्षी से डरते नहीं। बल्कि परीक्षा को चुनौती मान पूर्ण तैयारी के साथ उससे लड़ने की क्षमता विकसित करते हैं। तभी तो विजयश्री उनके चरण चूमती है।

परीक्षा की चुनौती को स्वीकार करने से पूर्व आवश्यक है उसकी पूर्ण तैयारी कर ली जाएँ। सैनिक जब युद्ध में लड़ने जाता है तो वह डरता नहीं। मौत का भय उसे नहीं सताता। वह बड़े साहस, हिम्मत, वीरता और जिन्दादिल्ली से दुश्मनों से लोहा लेता है। वह ऐसा इसलिए करता है कि दुश्मनों से लड़ने से पूर्व उन्हें युद्धाभ्यास के साथ-साथ उसे मानसिक रूप से इस तरह तैयार किया जाता है कि साक्षात् मौत सामने आने के बाद भी वह कदम पीछे नहीं हटाता। उस वीर शहीद की मौत शहादत बन जाती है जो दूसरों के लिए देशभक्ति और मातृभूमि पर मर मिटने की प्रेरणा देती है।

इन उद्धरणों से और जीवन में घटित घटनाओं से पता चलता है कि डरता वही है जो कमजोर है। कमजोरी भय और चिंता उसे पग-पग पर डराती है। परीक्षा का भय और चिंता उसे है जो पढ़ाई में कमजोर है। बालक की पढ़ाई की कमजोरी के पीछे एक नहीं कई कारण होते हैं। जिसकी सही जानकारी कर उसका निराकरण कर उसे आगे बढ़ाया जा सकता है। बालकों की पढ़ाई के निम्नांकित कारण हो सकते हैं -

- बालक का जन्मजात मंद बुद्धि का होना।
- बालक में किसी असाध्य बीमारी का होना अथवा उसमें किसी शारीरिक अक्षमता का होना।
- जन्म से अथवा बचपन में माता-पिता या उनमें से किसी एक का चल बसना। अथवा उनके आपस में सम्बन्ध विच्छेद होना।
- माता-पिता का अशिक्षित होना।
- परिवार का गरीब होना। जिसके कारण बालक का अर्थोपार्जन में लगना।
- पिता का व्यसनग्रस्त होना।
- बालक का आसपास का वातावरण ठीक न होना।
- बालक का बुरी संगत में पड़ना अथवा आपराधिक प्रवृत्ति के कामों में पड़ना।
- शिक्षा के समुचित अवसर प्राप्त न होना।
- भय युक्त वातावरण में पढ़ना।
- शैक्षिक संसाधनों का समय पर न मिलना।
- शिक्षा की प्रारंभिक कमजोरी का निदान न होना।
- अकसर विद्यालय से भाग जाना अथवा विद्यालय में अधिक अनुपस्थित रहना।

यदि अध्ययन-अध्यापन की कमजोरी है तो घबराइए मत। जी हाँ! परीक्षा एक चुनौती है। उसे स्वीकार करें। पढ़ाई सम्बन्धी अपनी हर कमजोरी का पता लगाएँ। उसे हर सम्भव दूर करने की कोशिश करें। अपनी पढ़ाई सम्बन्धी कमजोरी को कैसे दूर करें? इसके उपाय करें और परीक्षा में सफलता हासिल करें।

- नियमित रोजाना दो घण्टे पढ़ाई करें। किसी महापुरुष ने कहा है कि जो छात्र रोजाना दो घण्टे पढ़ता है, उसे दुनिया की

कोई ताकत असफल नहीं कर सकती।

- अपनी मदद खुद करें। दू सरोंके भरोसे न रहें। कहा है जो व्यक्ति खुद अपनी मदद नहीं करता, उसकी मदद भगवान भी नहीं करते।
- विषय विशेष की कमजोरी को दू र करने के लिए उस विषय पर विशेष ध्यानदें। आवश्यकता महसूस करें तो अच्छे ट्यूटर की सहायता लें।
- समय पर होमवर्क पूरा करें।
- हिन्दी-अंग्रेजी की लेखनी (हैण्डराइटिंग) को सुधारें। वर्तनी सुधार पर ध्यानदें।
- गणित के सवाल ज्यादा से ज्यादा खुद हल करें। किसी गाइड-कुंजी अथवा मित्र की कॉपी से नकल न करें।
- अंग्रेजी में व्याकरणएवं शब्दकोश पर ज्यादा ध्यानदें।
- रटने की प्रवृत्ति को छो ड़ें।पाठ-प्रश्न अथवा बिन्दु ओंको थो ड़े अन्तरालमें फिर से प ढ़ें।
- विषय के नोट्स बनाएँ। प्रश्नों की परिभाषा एवं मुख्य-मुख्य बिन्दु ओं को ज्यादा याद करें।
- सभी प्रकार के प्रश्न हल करने की दक्षता हासिल करें।
- कक्षा के मेधावी छात्रों से मित्रता करें। प ढ़ाईमें उसकी सहायता लें। मेधावी मित्र-सर्वोत्तम गाइड है।
- विद्यालय के गुरु जनों का आदर करें। प ढ़ाईमें उनकी मदद लें।
- विद्यालय की प ढ़ाईके अलावा अन्य इतर गतिविधियों जै से शरारत, बदमाशी, हँसी-ठिठोली, मजाक आदि में ज्यादा शामिल न हो।
- बुरी आदतों औ रबुरी लतों से बचें।
- समय पर सोएँ एवं समय पर जागें।
- सभी विषयों को बराबर महत्त्वदें।
- घर पर प ढ़ाईके क्रम को सतत् जारी रखें। ज्यादा थकावट व तनाव होने पर थो ड़ाआराम कर लें। रिलेक्स हो लें। हो सके तो थो ड़ाघूम लें, खेल लें अथवा टी.वी. देख लें।
- आत्मविश्वासबनाए रखें। यह दृ ढ़प्रतिज्ञा करें कि मैं सफलता प्राप्त करके ही रहू ँगाइसके लिए हर संभव प्रयास करूँगा।
- प ढ़ाईको बोझ न समझें। उसे सहज रूप में लें। यह सोचें प ढ़ाई उज्ज्वल भविष्य के निर्धारण का अहम् अंग है। इस ओर गंभीरता से ध्यानदें।
- जीवन का लक्ष्यनिर्धारित करें औ रउसे प्राप्त करने के लिए उस ओर ब ढ़ें।
- अपने इष्ट देव का सदै वस्मरण करें। उनका ध्यानधरें।

यह सच है, समस्या है तो समाधान भी है। परीक्षा है तो उपाय भी। परीक्षा है तो घबराने की जरूरत नहीं। नियमित प ढ़िए,मन लगा कर प ढ़िए औ रआगे ब ढ़िए।यही सफलता की कुंजी है। नियमित प ढ़नेवाला तो यही कहेगा-

वर्ष भर जो प ढ़े हैं, नहीं परीक्षा से घबराएँ।
वह तो यही कहता जाए, रोज परीक्षा के दिन आएँ।।

सेवानिवृत प्रधानाध्यापक
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे
छोटीसाद ड़ी, प्रतापग ढ़ (राज.)-312604
मो. 9460607990

राजस्थान दिवस विशेष

धरती राजस्थान की....।

❐ मनमोहन अभिलाषी

धोरों की यह धरा हमारी धरती राजस्थान की,
स्वाभिमान की रक्षा करके पाया है सम्मान भी।
कभी नहीं सिर झुकाया इसने
दु श्मन के रण क्षेत्र में,
पाण्डव भी जैसे जीते थे
कौरव से कुरुक्षेत्र में।
उसी तरह यहाँ की संतानें
मिशाल बनी बलिदान की। धोरों की यह....
राणा प्रताप ने स्वाभिमान रख
घास की रोटी खाई थी,
नहीं झुकेंगे रिपु के आगे
यह सौगन्ध दिलाई थी।
स्वामी भक्ति में पन्ना भी
बन गई गाथा इन्सान की। धोरों की यह....
झोंक दिया जिसने निज जीवन
जीते जी ज्वाला च ढ़कर,
सुन्दरता में चाँद भी लज्जित
जब देखो उससे ब ढ़कर।
सब कुछ जिसने अर्पण करके
महिला जगत जगान की। धोरों की यह....
मिलकर सब रहते यहाँ पर
खिलते इक फुलवारी में,
श्रम से सिंचित कर्मठ होकर
दिया रक्त हर क्यारी में।
स्वाभिमान रख रखी धरोहर
रजपूती राणा शान की। धोरों की यह...
इसी धरा पर राजस्थानी
हाड़ौती अरु ब्रजभाषा,
धोरों में भी खूब चमकती
हीरे के कण सी आशा।
आशा में ही अमर रहे हैं
यहाँ सब प्राणी प्रान भी। धोरों की यह...
विकसित नवजीवन हो यहाँ का
नूतन शत-शत उद्योग लगें,
राजस्थानी प्रवासी आकर के
अब इसका उपयोग करें।
स्वच्छ-स्वस्थरखें हम इसको
शपथ राष्ट्र अभियान की। धोरों की यह...

'गुप्त सदन', एस.बी.के. गर्ल्स हा.से.स्कूल के पास,
मंडी अटलबंद, भरतपुर-321001, **मो: 9983409454**

आलेख

वर्तमान आवश्यकता : मूल यपरक शिक्षा

❒ गोपेश शरण शर्मा 'आतुर'

मूल्य का अर्थ है ऐसा उद्देश्य जो व्यक्ति को किसी सामाजिक आदर्श अथवा व्यक्तिगत उच्चता आदि से जो ड़े।अच्छे और बुरे के विषय में लोगों की धारणाएँ अथवा नैतिक सिद्धांत ही मूल्य कहे जाते हैं।शिक्षा मानव को पशुता से मुक्त करके एक सामाजिक प्राणी बनाती है।जो शिक्षा अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में सफल नहीं होती है वह निरर्थक है। वर्तमान परिवेश में जबकि दु नियाएक मंच पर आ गई है वर्तमान शिक्षा की मूल्यपरकता नितान्त आवश्यक है जिससे अनेक समस्याओं एवं संघर्षों से युक्त आज के दैनंदिन जीवन में एक शिक्षित व्यक्ति नैतिकता का अनुसरण करता हु आसमाज का एक ऐसा उपयोगी और सुयोग य नागरिक बन सके जो मानवता की रक्षा और उसके विकास में सहायक हो।

नैतिक शिक्षा के लिए पिछले कई वर्षों से प्रयास हो रहे हैं किन्तु ऐसा लगता है कि मर्ज ब ढ़ताही जा रहा है, ज्यों ज्यों दवा की जा रही है। दैनंदिन सामाजिक घटनाओं को देखकर चारित्रिक ह्रास निरंतर प्रतीत होता है। अतः शिक्षा का, जो कि चरित्र के सुधार का एक सबल साधन है, मूल्यपरक होना नितांत आवश्यक है, जिससे उसके द्वारा नैतिकता उत्पन्न कर चरित्र के संकट की निवृत्ति का प्रयास हो सकें।

अब प्रश्न यह होता है कि वे मूल्य क्या हो जो शिक्षा के द्वारा दिए जाएँ। इस ग लोबलतथा ऑनलाइन वाले युग में, जबकि दु नियाएक हो गई है, वे मूल्य निर्धारित किए जाएँ जो सार्वजनीन तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित हों तथा जिनकी टकराहट किन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों से न हो। एक मत के अनुसार पहले मूल्य निर्धारित किए जाएँ फिर उन्हें शिक्षा द्वारा आचरण में उतरवाने का प्रयास किया जाए। इस दिशा में केवल औपचारिकता से समस्या का समाधान नहीं होगा।

इस संबंध में 'राजस्थान पत्रिका' में, 'शिक्षा में बदलाव जरूरी' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित जस्टिस विनोद शंकर दवे (उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश) की यह टिप्पणी मननीय है –'गिरता लिंगानुपात, नशीले पदार्थों का सेवन, तामसिक भोजन, जीवन में ब ढ़ती राक्षसी प्रवृत्तियाँ, अश्लील विज्ञापन और फिल्मों की वजह से बलात्कार जै से अपराध ब ढ़ रहे हैं।लोगों के मन से कानून का सम्मान गायब होता जा रहा है। लोगों को कानून तो ड़नेमें ज्यादा मजा आने लगा है। आज की शिक्षा पद्धति में भी बहु त खामियाँ है। हम पेशेवर लोग तो तै यार कर रहे हैं, लेकिन ऐसे नागरिक तै यार नहीं कर रहे हैं, जिनमें सामाजिक प्रतिबद्धता हों। देश और संविधान के प्रति सम्मान हों। जो चारित्रिक व नैतिक धरातल पर ईमानदार हों। हमें युवाओं को नैतिकता युक्त शिक्षा, घर में अच्छे संस्कार और अच्छा सामाजिक परिवेश उपलब्ध कराना होगा।''

अतः सर्वसम्मति से ऐसे मूल्य निर्धारित किए जाएँ जो नैतिकता की दृष्टि से सर्वमान्य हों तथा उनकी अनुपालना हेतु प्रभावी प्रयास हों। सर्वसम्मति का कारण कतिपय समाचार पत्रों के शीर्षकों पर विचार करने से प्रकट होता है।

- ''गीता पाठ के विरोध में उतरे अमरीकी सीनेटर विक।'' (राजस्थान पत्रिका–05.03.2015)
- Iran: Will let Google in if it accepts cultural rules" (The Times of India-02.03.2015)
- इसी प्रकार 'सूर्य नमस्कार' को विद्यालयों में अनिवार्य करने पर विरोध के स्वर मुखरित हु ये।

अतः सभी संबंधित भारतीय संविधान एवं कानून से अविरुद्ध ऐसे नैतिक मूल्य निर्धारित करें जो नैतिकता हेतु वांछनीय हो, उनकी कठोरता से अनुपालना हो तथा प्रभावी पर्यवेक्षण हो।

संबंधित से आशय उन घटकों से है जो शिक्षा प्रदान करने में सहायक हैं।इस परिवर्तित तथा विकासशील युग में शिक्षा प्रदान करना केवल विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय का ही कार्य नहीं माना जा सकता है।सभी स्रोत जो शिक्षा प्रदान करने में सहायक हैं उनका समेकित प्रयास वांछनीय है। शिक्षा प्रदाता घटकों में निम्नांकित का उल्लेख समीचीन प्रतीत होता है: –

1. परिवार 2. शिक्षण संस्थाएँ 3. समाज 4. सरकार 5. जनसंचार के माध यम 6. पुस्तक आदि।

इन सभी को संगठित होकर एक योजनानुसार शिक्षा में नैतिकता पर बल देना चाहिए, जिससे दिन–प्रतिदिन गिरता नैतिक स्तर उन्नत हो तथा शिक्षा मानव को संयमी, सदाचारी और शिष्ट बनाने में सहायक हो।

परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है। आज बहु त से परिवारों में बालकों की गोद में लैपटॉप, कान में इयर फोन तथा हाथ में रिमोट कंट्रोल देखे जा सकते हैं।अतः माता–पिता एवं परिवार के अन्य वरिष्ठ सदस्यों का कर्त्तव्य है कि बालक क्या और क्यों देख रहा है? क्या उन्हें उन बातों की आवश्यकता भी है या नहीं, इस बात का ध यान रखें। इंटरनेट के लाभ–हानियों तथा दु रुपयोगों से उन्हें परिचित कराएँ तथा इस दिशा में सावधान करें। उन्हें बताएँ: –

खोज नित य अनेक करते आ रहे हैं,
आदमी उस ओर दौ ड़े जा रहे हैं,
बाद में उनकी बताते हानियाँ हैं,
इक कहानी नहीं बहु त कहानियाँ हैं।

इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों के प्रति सावधान करने का प्रथम दायित्व परिवार का है क्योंकि व्यक्ति की शिक्षा परिवार से ही आरम्भ होती है।परिजनों को अपने नैतिक तथा स्तरीय आचरण से बालकों को शिक्षित करना चाहिए तथा घर में उसी प्रकार का वातावरण रखना चाहिए।

प्रत्येक शिक्षण संस्था में अनुशासन समिति होनी चाहिए जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी तथा अभिभावकों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए। समय–समय पर नैतिक मूल्यों को उजागर करने

वाले कार्यक्रम होने चाहिए। पत्रिका, भित्ति पत्रिका, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रवचन आदि द्वारा ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जिससे शिक्षार्थी चारित्रिक मूल्यों की उपयोगिता समझते हुए उनके प्रति आकर्षित हों। समाज में क्षेत्रवार नैतिकता का प्रसार करने वाली समितियों का गठन होना चाहिए जो समय-समय पर जनसभाओं, नुक्कड़ नाटकों तथा गोष्ठियों द्वारा चरित्र के प्रति जागरूक करें।

सरकार को निर्धारित मूल्यों की प्रभावी अनुपालना कराने हेतु व्यवस्था करनी चाहिए तथा समुचित दण्ड एवं पुरस्कार की व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसे दस्ते तैयार करने चाहिए जो घर-घर जाकर आकस्मिक निरीक्षण करें तथा देखें कि घटकों द्वारा निर्धारित नैतिक मूल्यों के विरुद्ध तो कोई कार्य नहीं हो रहा है।

मीडिया शिक्षा प्रदान करने का एक सशक्त साधन है। लोगों को समाचार प्रदान करने तथा विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षित करने में दैनिक समाचार पत्र विशेष स्थान रखते हैं। नित्य प्रातः काल आबाल वृद्ध सभी दैनिक समाचार पत्र की उत्सुकता पूर्ण प्रतीक्षा करते हैं। समाचार पत्र भी कहता है :-

मेरे हित नित ही कितनी पलकें बिछती हैं,
और प्रतीक्षा पल की युग जैसी लगती है।
गृह प्रवेश पर छीना झपटी सब करते हैं,
पास पड़ौसी भी कितनी इच्छा रखते हैं।

एक घर में सभी आयु वर्ग के लोग दैनिक समाचार पत्र पढ़ते हैं। अतः उसमें ऐसी सामग्री का होना उपयुक्त नहीं होगा जो बालकों, किशोरों आदि के लिए उपयुक्त न हो। दैनिक समाचार पत्रों के परिशिष्टों में विभिन्न मुद्राओं में स्त्री-पुरुषों के चित्र दिए जाते हैं, जो सार्वजनिक रूप से उपयोगी नहीं होते हैं। अतः ऐसे चित्रों तथा औषधियों के लिए पृथक पत्रिकाएँ होनी चाहिए जिससे आवश्यकतानुसार लोग उन्हें देख सकें।

यह इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया का युग है। इस क्राँति ने जहाँ अनेक सुविधाएँ उत्पन्न की हैं तथा लाभ पहुँचाया है वहीं अनेक समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। उदाहरणार्थ समाचार पत्रों में निम्नांकित प्रकार शीर्षक देखकर चिन्ताएँ बढ़ जाती है :-

● मोबाइल फोन के कारण बढ़े दुष्कर्म। ● सोशल मीडिया का दुरुपयोग। ● बच्चों के लिए खतरनाक बना ऑनलाइन वर्ल्ड। ● चैटिंग से गुस्साए पति ने की पत्नी की हत्या। ● लेखक पर फेसबुक पोस्ट के जरिए लोगों को दुष्कर्म के लिए उकसाने का आरोप। ● फेसबुक एडिक्ट होने से बचें। ● टेक्नोलॉजी से फर्टिलिटी पर दुष्प्रभाव। आदि-आदि।

अतः मूल्यपरक शिक्षा द्वारा इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया के सदुपयोग के प्रति प्रेरित किया जाए। प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा के लिए समिति गठित हो तथा उन पुस्तकों को प्रतिबंधित किया जाए जो मूल्यपरक शिक्षा के विपरीत हों। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा की सामग्री और पुस्तकें अनिवार्य रूप से हों। कारण और कार्य की एकरूपता हो। जितना श्रम अनैतिक कार्यों को रोकने के लिए किया जा रहा है उतना ही श्रम उन्हें उत्पन्न करने वाले कारणों को रोकने के लिए भी किया जाना चाहिए, तभी आशानुरूप फल की प्राप्ति होगी।

केवल उपदेश देने या नारे लिख देने मात्र से नैतिकता नहीं आएगी। उसके लिए इन घटकों द्वारा प्रभावी प्रयास एवं पर्यवेक्षण वांछनीय है। नारे लिख देने के विषय में एक कवि ने लिखा है :-

सत्य, अहिंसा, दया प्रेम से
अपना तो इतना नाता है,
दीवारों पर लिख देते हैं
दीवाली पर पुत जाता है।

अतः शिक्षा प्रदान करने वाले सभी घटक मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने के लिए सचेष्ट रहें जिससे दिनो-दिन गिरता हुआ नैतिक स्तर उन्नत हो तथा मानवीय गुणों का विकास हो। कहीं ऐसा न हो कि एक समय ऐसा आए जब दुष्कर्मियों को देखकर पशु यह सोचने लगें कि क्या ये वे ही प्राणी है, जिन्हें हम मनुष्य कहा करते थे।

प्लॉट नं. 28, लेन नं. 2,
मदरामपुरा, सिविल लाइंस,
जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2225961

पुण्य पुरातन देश हमारा,
मानवता आदर्श रहा।
संस्कृति का पावन मंगल स्वर,
कोटि कण्ठ से नित्य बहा।।

इस माह का गीत

होळी आयी रे...

हाँ रे होळी आयी रे
या सुणो संदेशो कांई ल्याई रे,
कै होळी आयी रे।

रंग बिरंगी होली खेली
भारत माँ रा बेटा नै,
अपणो सब भण्डार लुटायो
भामाशा सा सेठां नै,
लाल लुटाकर अमर हुई
या पन्ना धायी रे,
कै होळी आयी रे ।।1।।

मेरा तो है गिरधर नागर
और न दूजो कोई रे,
जाके सिर पर मोर मुकुट है
मेरो तो बस सोई रे,
श्याम रंग में रंगी कि
देखो मीरा बाई रे,
कै होळी आयी रे ।।2।।

एक रंग है पद्मनियां रो,
एक रंग है झाँसी रो,
एक रंग है चन्द्रशेखर रो
भगतसिंह री फांसी रो,
राणा शिवा रे रंग रो
दुनियां पार न पायी रे,
कै होळी आयी रे ।।3।।

रंग बिरंगी होळी है या
रंग आपणों छांटो रे,
भारत माँ रा सब बेटा नै
रंग बसंती बांटो रे,
जनम-जनम नहीं छूटै
ऐसी करो रंगाई रे,
कै होळी आयी रे ।।4।।

साभार : '**आपांरा गीत**' पुस्तक से

शैक्षिक उन्नयन

शिक्षक की भूमिका

❒ मदनलाल मीणा

सभी देश काल एवं शिक्षा पद्धति में शिक्षक का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल में गुरु को सबसे श्रेष्ठ माना गया है। सच यह भी है कि शिक्षक अपने ज्ञान के आधार पर छात्र का बौद्धिक स्वरूप निर्मित करता है तथा छात्र के भविष्य निर्माण में शिक्षक का स्नेहिल एवं अनुशासित योगदान रहता है। इसीलिए कहा गया है कि ''शिक्षक का व्यक्तित्व वह धुरी है जिस पर शिक्षा व्यवस्था घूमती है।'' शिक्षक ही राष्ट्र का गौरव है एवं राष्ट्र का जीवन है। जिस प्रकार भवन निर्माण में योग ईंट का होता है, वही योग राष्ट्र निर्माण में शिक्षक का होता है। डॉ. राधाकृष्णन् ने भी कहा है कि ''शिक्षक छात्र का मार्गदर्शन ही नहीं करता बल्कि वह राष्ट्र का भी मार्गदर्शक होता है।''

शिक्षक की इस श्रेष्ठ महानता की पहचान कराने के बाद आज के विषय पर गम्भीरता से चिन्तन करें, तो प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या आज की परिस्थितियों में शिक्षक अपनी कोई भूमिका छात्र के शैक्षिक उन्नयन में निभा रहा है? या वह महज शिक्षा देने का एक सूत्रीय 'कोरम' पूरा कर रहा है। मेरे विचार से छात्र के शैक्षिक उन्नयन में शिक्षक ही सब कुछ कर सकता है क्योंकि विद्यालय की इमारत, उसके उपकरण तथा वातावरण चाहे कितने ही अच्छे हों, प्राचार्य या प्रबन्धकार्यकारिणी समिति भी कितनी ही अच्छी क्यों न हो, यदि उस विद्यालय में कुशल शिक्षक नहीं हो तो छात्र का शैक्षिक उन्नयन नहीं हो सकता।

कटु सत्य यह भी है कि आज का शिक्षक अपनी सहभागिता छात्र के शैक्षिक उन्नयन में पूर्णतः नहीं दे रहा है, जिस कारण छात्रों के शैक्षिक उन्नयन का ग्राफ दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है और इस गिरते ग्राफ की जिम्मेदारी से शिक्षक अपने को अलिप्त नहीं कर सकता है। एक शिक्षक अपने शिक्षण की सफलता इसी बात को मानता है कि उसके द्वारा कक्षा में दिया गया ज्ञान छात्र-छात्राओं ने कितनी अधिक मात्रा में ग्रहण किया तथा उस ज्ञान को ग्रहण करने से

परीक्षाफल पर क्या प्रभाव पड़ा?

छात्र का शैक्षिक उन्नयन एक बहुत बड़ी चुनौती है। क्या शिक्षक वर्तमान सामाजिक परिवेश में इस चुनौती को स्वीकार करेगा यह भी एक अहम प्रश्न है? कटु सत्य यह भी है कि जिस प्रकार छात्र शैक्षिक उन्नयन का ग्राफ गिर रहा है, उसी प्रकार शिक्षक के कार्य सम्पादित करने की ऊर्जा में भी गिरावट आ रही है। इसलिए यदि हम सच्चे मन से छात्रों के शैक्षिक उन्नयन हेतु चिन्तित हैं तो मेरे दृष्टिकोण से शिक्षक सामान्य क्रियाकलापों में आंशिक अतिरिक्त भूमिका निभाकर छात्रों का शैक्षिक उन्नयन कर सकता है। शिक्षक को छात्र उन्नयन हेतु निम्नांकित बिन्दुओं पर प्रयास करना होगा: -

1. शिक्षक को अपनी शिक्षण विधि अधिक सुरुचिपूर्ण, नित्य नवीन एवं सहज-सरस-सरल बनानी चाहिए।
2. शिक्षण सामग्री को रोचक-आकर्षक बोधगम्य एवं अधिक स्पष्ट बनाने हेतु सहायक सामग्री का भी प्रयोग करना चाहिए जिससे कि छात्र विषयवस्तु को अधिक स्पष्ट समझ सके, परन्तु ध्यान यह भी रखना चाहिए कि सहायक सामग्री साधन है, साध्य नहीं।
3. शिक्षण एक सोद्देश्य गतिशील एवं उत्पादक प्रक्रिया है इसलिए जो भी सामग्री शिक्षक द्वारा पढ़ाई जाए, वह छात्र के दृष्टिकोण से चयनित हो।
4. शिक्षक अपने शिक्षण सामग्री का निर्माण स्थूल से सूक्ष्म, सरल से कठिन, साधारण से असाधारण आदि छोटी-छोटी इकाइयों में विभक्त कर शिक्षण कार्य करें।
5. शिक्षक का शिक्षण ऐसा हो कि छात्र-छात्राओं की ज्ञानेन्द्रियों को प्रेरित एवं उत्साहित करके ज्ञान ग्रहण की पिपासा जगाकर उसे तृप्ति प्रदान कर सके।
6. छात्र के शैक्षिक उन्नयन का केवल यह उद्देश्य नहीं होना चाहिए कि शिक्षक के सम्पर्क में पढ़नेवाला छात्र विषयी ज्ञान प्राप्त कर सफलता अर्जित करे, बल्कि उस छात्र का सर्वांगीण उन्नयन होना चाहिए।
7. शिक्षक जो विषयवस्तु छात्र को पढ़ाता है, उस विषयवस्तु को छात्र कितना सीख रहा है, इसके लिए पाठ्यक्रम का इकाईवार मूल्यांकन करते रहना चाहिए। मूल्यांकन में असफल छात्रों के उन्नयन हेतु शिक्षक को अधिक प्रयास करना चाहिए।
8. शिक्षक को छात्रों के अभिभावकों से भी सम्पर्क बनाए रखना चाहिए।
9. शिक्षक को शैक्षिक उन्नयन हेतु यह भी प्रयास करना चाहिए कि छात्र का भाषा ज्ञान अच्छा हो।

अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षक शैक्षिक उन्नयन हेतु उपर्युक्त बिन्दुओं पर कितना क्रियाशील होगा या व्यावहारिक पहलू उसे क्रियाशील होने में कितना हतोत्साहित करेंगे।

मैं ने प्रारम्भ में ही कहा है कि छात्र का शैक्षिक उन्नयन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, परन्तु हमें श्रेष्ठ लक्ष्य लेकर ही आगे बढ़ना है और इस चुनौती को स्वीकार करना है तथा अपनी महानता का परिचय देना है।

हमें प्रोफेसर हुंमायूं कबीर के इस कथन को याद रखना चाहिए कि ''**अच्छी शिक्षा के अभाव में अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रणाली नष्ट हो जाती है और अच्छे शिक्षक के कारण खराब से खराब शिक्षा प्रणाली भी अच्छी बन जाती है।**''

अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि. मेघवालों की ढाणी
(राजबेरा) तह. शिव, बा.डमेर
मो: 9928173922

शिक्षक के अनुभव

राजकीय विद्यालय

❒ डॉ. ललित श्रीमाली

यहाँ हम एक ऐसे समुदाय के अनुभवों को साझा कर रहे हैं जिसके हिस्से में निजी विद्यालय तो दूरकी कौड़ी है, राजकीय विद्यालय भी इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में आया है। बात दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र से जुड़ी हुई है। जब मैं जुलाई 2002 में इस गाँव में खुलने वाले पहले विद्यालय का पहला शिक्षक बना था। राजसमंद जिले की खमनोर पंचायत समिति के नेडच ग्राम पंचायत के राजस्व गाँव भूमलियो का गुडा की राजीव गाँधी स्वर्ण जयंती पाठशाला में नियुक्त हुआ। यह गाँव अरावली की पहाड़ियोंके बीच होने के यहाँ रास्ता बहुत ही दुर्गम था और चारों तरफ 6-6 किमी. तक सड़कमार्ग से संपर्क नहीं था। पंचायत मुख्यालय से एक पगडंडी ही थी। उस समय में वहाँ पहुँचा तो पता चला कि गाँव में रहने वाले केवल 7 आदिवासी परिवार ही है। जो वहीं पर खेती-बारी और बकरी-पालन कर अपना गुजर-बसर कर रहे हैं। उनको गाँव में स्कूल खुलने पर कोई विशेष खुशी नहीं थी।

मैं जब गाँव में पहुँचा तो सबसे पहले एक बुजुर्ग मिले। उनको परिचय दिया कि आपके गाँव में जो स्कूल खुला हुआ है तो उसमें अध्यापक के रूप में नियुक्त हुआ हूँ, उन्होंने कोई रुचि नहीं दिखाई।

अब मैं ने उनसे पूछा-'आपका नाम क्या है?'

वे तपाक से बोले-'आप बताओ।'

मैं ने कहा-'मैं पहली बार इस गाँव में आया हूँ आपका नाम कैसे बता सकता हूँ।'

वे बोले-'मेरा नाम तो आपको बताना ही पड़ेगा।'

मैं ने फिर गुस्से से कहा-'मैं कोई लोक-देवता या भैरुजी थोड़ी हूँ, जो आपका नाम बता दूँ।'

उन्होंने फिर कहा-'तो आप रुपये किसके ले रहे हो?'

मैं ने कहा-'मैं किससे रुपये ले रहा हूँ?'

वे बोले-'सरकार से, सरकार आपको किसकी तनख्वाह दे रही है, आपको पता होना चाहिए मेरा नाम।'

गाँव में इस पहले परिचय से ही मैं समझ गया कि इन लोगों की सरकार और सरकारी कारिंदों के प्रति सोच अच्छी नहीं है। इसके बाद मैं सभी के घर जाकर बच्चें को स्कूल भेजने के लिए कहकर आया। लेकिन किसी ने अपने बच्चें को दो-तीन दिन तक नहीं भेजा तो मुझे चिंता हुई कि ये लोग बच्चें को भेजेंगे या नहीं। मैं ने इस बात का पता किया तो यह सामने आया कि जब स्कूल की बिल्डिंग का काम पूरा हुआ तब ठेकेदार ने इनको पूरी मजदूरी नहीं दी। इसलिए वे अपने बच्चें को स्कूल नहीं भेजेंगे। मैं ने बड़ी मुश्किल से उन्हें समझाया कि 'ठेकेदार ने आपको भुगतान नहीं किया उसमें मेरी स्कूल की और बच्चें की क्या गलती है। आप सभी बच्चें को भेजो।' इसके बाद कुछ अभिभावकों ने बच्चें को भेजना शुरू किया लेकिन समस्या अभी तक बनी हुई थी।

इस दौरान मेरी मुलाकात नाथद्वारा निवासी श्री कृष्णगोपाल गुर्जर से होती है, वे भी मेरी तरह ही मोलेला स्कूल में कार्यरत थे। उन्होंने बताया कि 'ये लोग अपने बच्चें से घर का काम करवाते हैं; जैसे-छोटे भाई-बहनों को रखना, बकरियों को चराना आदि। आप तो अगली बार नाथद्वारा आओ तो मुझसे मिलकर जाना या मैं फोन करूँ तो आप आ जाना। मैं कुछ व्यवस्था करता हूँ।' तीन-चार दिन बाद उनका फोन आया तो मैं मेरे गाँव के स्कूल आने योग्य सभी बच्चें की सूची लेकर नाथद्वारा पहुँचा। उन्होंने बीसानीमा धर्मशाला में राजस्थानी मूल के अमेरिकी परिवार से मिलाया जो श्रीनाथजी के परमभक्त थे और इस क्षेत्र के लोगों की मदद करना चाहते थे। उन्होंने अपना नाम गुप्त रखते हुए मुझे सभी बच्चें के लिए स्कूल बैग, ड्रेस, मौजे, जूते और स्वेटर दिए। श्री कृष्णगोपाल ने बताया कि 'ये लोग हर साल ये सामग्री देते हैं परन्तु ले जाने वाले नहीं मिलते हैं। आप अब देखना आपकी स्कूल में बच्चे आते है या नहीं।' 'मैं ने जब सामग्री स्कूल में वितरित की तो कम पड़ गयी क्योंकि जब गाँव वालों को पता चला कि निःशुल्क सामग्री मिल रही है तो उन्होंने कुछ दूसरे रहने वाले परिवारों के बच्चें को भी मेरी स्कूल में दाखिल करवा दिया। मुझे दुबारा श्री कृष्णगोपाल से सम्पर्क करके और सामग्री लानी पड़ी।'

इस घटना के बाद गाँव वालों का स्कूल के प्रति नजरिया एकदम ही बदल गया। लेकिन उनकी एक नई धारणा बन गयी कि ये सब सरकार ने भेजा है और सरकार सभी स्कूल में भेजती है कई जगह बाँटा ही नहीं जाता है और स्कूल वाले खा जाते हैं। मैं ने उन्हें समझाने का प्रयास भी किया कि यह सामग्री एक दानदाता द्वारा दी गयी है और सरकार का कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन वे नहीं माने। मेरे स्कूल का नामांकन जरूर बढ़ाया। बच्चे भी बराबर आने लगे। लेकिन एक दूसरी तरह की घटना और हुई। पास के गाँव की स्कूल के अध्यापकजी मेरे पास आए और कहा- आपने राजस्थानी की कहावत सुनी है या नहीं।

मैं ने कहा- कौनसी?

तो बोले- 'नवो मास्टर और जूनो वेद्य।'

और समझाने लगे कि 'आप नए हो इसलिए जोश है हमें कई साल हो गए हैं इस नौकरी में थोड़ा ध्यान रखो। आपके इस तरह सामग्री लाकर स्कूल में देने से इस क्षेत्र का माहौल खराब हो रहा है। हमें दिक्कत हो रही है। आप काम से काम रखो, फालतू काम मत करो।' इन दोनों तरह की घटनाओं से हम यह कह सकते हैं कि राजकीय विद्यालयों के प्रति स्थानीय घटनाएँ प्रभावित करती हैं समुदाय की सोच को।

व्याख्याता (हिंदी शिक्षण)
म.नं. बी-15, वर्धमान नगर-सी
उत्तरी सुन्दरवास, उदयपुर (राज.)-313001
मो. 09461594159

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

चिंतन

प्रसन्नता पर हमारा अधिकार

❒ महेशचन्द्र श्रीमाली

आनन्द या प्रसन्नता कब और कैसे मिलती है ? उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह अनुभूति का विषय है। अमीर, अथवा साधनों से सम्पन्न व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं है तो अभावों व गरीबी में जीवनयापन करने वाला व्यक्ति आनन्द व प्रसन्नता से भरा जीवन व्यतीत कर रहा है। ऊँचे पद पर आसीन होने व प्रतिष्ठा पाने वाला व्यक्ति भी दुःखी मिल सकता है। इससे ऐसा लगता है कि आनन्द व प्रसन्नता न तो धन में है और न ही पद प्रतिष्ठा में, बाहरी साधनों की भरमार भी हमें प्रसन्न नहीं कर सकती। प्रसन्नता कोई बाजार में प्राप्त होने वाली वस्तु भी नहीं है। लोग अपनी शारीरिक सुन्दरता, अस्तित्व, मित्रों, सम्बन्धियों से प्रशंसा में प्रसन्नता को खोजते हैं और वह उन्हें कभी भी प्राप्त नहीं होती है। उसको प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में वे दुःखी हैं। छोटी-छोटी बातों से सुखी होना व दुःखी होना आम प्रवृत्ति बन गयी है, किन्तु इसके पीछे उनका दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण होता है। नकारात्मक सोच के कारण वे सुख को खोज नहीं पाते। बड़ी सफलताओं व प्रसन्नताओं को प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में जीवन के सुखद क्षणों को निरर्थक गंवा बैठते है। प्रसन्नता व दुःखी होना बाहरी वस्तु न होकर हमारे भीतर उठते विचारों का विषय है। हम जाने-अनजाने में प्राप्त होने वाली प्रसन्नता पर ध्यान नहीं देते हैं, अपना स्वभाव हमेशा दुःखी रहने का बना देते हैं और सदा नकारात्मक विचारों पर अधिक ध्यान देते हैं। क्या हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया जा सकता है ? तो सहज में उत्तर मिल जाएगा कि इस कमी को दूर किया जा सकता है। बस केवल हमें नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान न देकर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा। हमें अपना आत्मविश्वास जगाना होगा तथा अपने भूतकाल में जो भी उपलब्धियाँ हमने प्राप्त की, उसको याद कर भविष्य के लिए संकल्प लेकर एक के बाद दूसरा कार्य पूर्ण करने का प्रयास करना होगा। समस्याएँ, जटिलताएँ तो सभी काल में हमारे जीवन में बनी रहती हैं, उन पर विजय प्राप्त करने का सरल उपाय आत्मविश्वास है। प्रतिस्पर्धा के दौर में दूसरों को हम सुखी मानते हैं और मन में ऐसी सोच बैठते हैं कि हम अमूक कार्य करने में असक्षम है। दूसरे व्यक्ति के जीवन को कामयाब मानकर हम अपने जीवन को हीनता, निराशा, हताशा की ओर धकेल देते हैं। कभी-कभी हम दूसरों को बलवान, शक्तिशाली, सामर्थ्यवान मान बैठते हैं जबकि अपने स्वरूप को नहीं पहचान पाते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम अपने को किसी से छोटा नहीं आँके और निरन्तर धैर्य व आत्मविश्वास से ओत-प्रोत होकर मंजिल पाने का प्रयास करते रहें तो सफलता पैर छूने लगती है। एक बात और है कि प्रसन्नता किसी वस्तु के प्राप्त करने से हो सकती है तो ऐसे कार्य भी बहुत हैं जो दूसरों की सहायता कर, कमजोर को संबल प्रदान कर, उनके दुःखों में हाथ बंटाकर प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है। विद्यादान को महान दान कहा गया है। अतः इस कार्य को करने से मन में प्रसन्नता व खुशी होती है। वास्तविक स्थिति यह है कि हमें सदैव प्रसन्न रहने के उपाय व कार्य करने चाहिए। हमारा मन संतोष, आत्मविश्वास, संकल्पों व सेवा आदि कार्य में लगा रहेगा तो हम पाएँगे कि हम सदा प्रसन्न रहेंगे। जब निरंतर ऐसा होता रहेगा तो आनन्द व प्रसन्नता जीवन में सदा बनी रहेगी क्योंकि वो तो प्रत्येक व्यक्ति के पास पहले से मौजूद होती है। हम जहाँ भी जाएँगे अपनत्व, सम्मान मिलने के साथ प्रसन्नता स्थायी रूप से मिलती रहेगी।

अतः अपने दायित्वों का भली-प्रकार निर्वहन कर हम संतुष्टि से ओतप्रोत होकर जीना प्रारम्भ कर सकते हैं। जीवन में ईमानदारी, सच्चाई के साथ निरन्तर प्रयासरत रहने पर किसी भी कार्य को करना कठिन नहीं होता है। जब मन दुःखी हो तो किसी पुस्तक का सहारा लेकर अध्ययन में समय व्यतीत करने से भी संतुष्टि प्राप्त हो सकती है। यदि हमारी रुचि गाने-बजाने में है तो उसमें भी आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। कहने का तात्पर्य है कि प्रसन्नता, संतुष्टि पाने में स्वयं को सक्षम समझना चाहिए तथा सदैव प्रसन्न रहने के उपाय करते रहना चाहिए। वास्तव में प्रसन्नता का भण्डार हमारे पास मौजूद है, हम उसे छिपा कर बैठे हैं। अगर हम हमारी प्रसन्नता को बाहर उजागर करने में सफल हो जाएँ तो यह प्रवृत्ति एक दिन हमको सुखी व समृद्ध बना देगी और सदैव जहाँ भी हम उपस्थित होंगे वहाँ सारा वातावरण खुशी से भर जाएगा। आइए! हम अच्छी बातों की शुरूआत अभी से ही करने लग जाएँ क्योंकि प्रसन्नता पर हमारा अधिकार है।

3-थ-8, हिरण मगरी सेक्टर 5
प्रभातनगर, उदयपुर-313002
मो. 9414851013

ज्ञान की बैटरी

एक सज्जन के पास बड़ी सुन्दर टॉर्च थी। वे जब चाहते उसे जलाकर अंधेरे में प्रकाश फैला देते। इस प्रकार उन्होंने उस टॉर्च का बहुत दिनों तक उपयोग किया। लेकिन एक दिन अकस्मात् उस टॉर्च का जलना बन्द हो गया। उन्होंने आव देखा न ताव उसे पत्थर पर पटक दिया। परिणामस्वरूप वह सुन्दर टॉर्च पत्थर से टकराकर चूर-चूर हो गई। एक जानकार आदमी ने जब यह कृत्य देखा तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने उस सज्जन को पास बुलाकर समझाया कि टॉर्च के न जलने का कारण बैटरी के सैल का खत्म हो जाना है, न कि टॉर्च में कोई यांत्रिक गड़बड़ी।

बहुत से लोग अज्ञानता के कारण इस बात को नहीं समझ पाते हैं कि आत्मा में जब तक ज्ञान की बैटरी और श्रद्धा का बल्ब कार्य करेगा तभी तक वह अंधकार में प्रकाश देगी, नहीं तो वह अपना कार्य बन्द कर देगी। अतः आत्मा में ज्ञान रूपी सैल होना बहुत जरूरी है। आज प्रमादवश लोग आत्मा को ही विकारग्रस्त समझ लेते हैं जबकि गड़बड़ी कहीं दूसरी जगह होती है।

हृदय की बैटरी में परमेश्वर की आज्ञा का बल्ब और श्रद्धा रूपी सैल लगा लेने पर अन्धकार से आप स्वयमेव मुक्त हो जायेंगे।

संकलन : **सत्यनारायण नागौरी**, व्याख्याता, राउमावि. केलवा डा (राजसमंद) 313325, **मो: 9610334431**

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2017

1. **माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा–2017 के सुचारु आयोजन एवं परीक्षा अवधि में राजकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य के निर्विघ्न संचालन हेतु समुचित व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में दिशा–निर्देश।**
2. **आगामी शैक्षिक सत्र 2017–18 से राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना लागू करने के संबंध में।**
3. **शैक्षिक सत्र 2016–17 एसआईक्यूई कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर योगात्मक आकलन–चतुर्थ योगात्मक आकलन की तिथि संशोधन।**

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा–2017 के सुचारु आयोजन एवं परीक्षा अवधि में राजकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य के निर्विघ्न संचालन हेतु समुचित व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में दिशा–निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक शिविरा–माध्य/मा/अ–3/बोर्ड परीक्षा निर्देश/2017/01 दिनांक :15.02.2017 ● (1) समस्त मण्डल उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा (2)समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम/द्वितीय) ●विषय:–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा–2017 के सुचारु आयोजन एवं परीक्षा अवधि में राजकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य के निर्विघ्न संचालन हेतु समुचित व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में दिशा–निर्देश। ● प्रसंग:–समसंख्यक निर्देश परिपत्र क्रमांक–शिविरा–मा/माध्य/अ–3/बोर्ड परीक्षा निर्देश/ 2016 दिनांक–12.4.16

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत लेख है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित की जाने वाली उच्च माध्यमिक स्तर की परीक्षाएँ 02 मार्च, 2017 से तथा माध्यमिक स्तर की परीक्षाएँ 09 मार्च, 2017 से प्रारम्भ हो रही है। बोर्ड परीक्षा राज्य में सबसे बड़ी सार्वजनिक परीक्षा है। इसके सफल संचालन के लिए शिक्षा विभाग की भी महती जिम्मेदारी है। उक्त क्रम में निम्नानुसार निर्देश प्रदान किए जाते हैं :

1. समस्त मण्डल उप निदेशक (माध्यमिक शिक्षा) एवं जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम/द्वितीय) को दिनांक : 09 फरवरी, 2017 को बोर्ड कार्यालय में बोर्ड परीक्षाओं के आयोजन सम्बन्धी जानकारी देने तथा इस संदर्भ में बोर्ड एवं शिक्षा अधिकारियों की पारस्परिक अपेक्षाओं का आदान–प्रदान कर परीक्षाओं के प्रभावी एवं सफल संचालन के संबंध में विचार–विमर्श हेतु आयोजित मण्डल/जिला शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक) की बोर्ड अधिकारियों के साथ संयुक्त बैठक में प्रदत्त निर्देशों के अनुरूप परीक्षाओं के सुचारु आयोजन हेतु आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करें। उक्त बैठक में बोर्ड द्वारा प्रदत्त परीक्षा आयोजन बाबत् निर्देश पुस्तिका का गहनता से अध्ययन करते हुए प्रदत्त निर्देशों की पालना स्वयं तथा अधीनस्थ अधिकारियों/केन्द्राधीक्षकों/संस्था प्रधानों/परीक्षा ड्यूटी में विभिन्न दायित्वों के निर्वहन हेतु नियुक्त अधिकारियों तथा कार्मिकों से करवाई जानी सुनिश्चित की जाए।
2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों को यह निर्देशित किया जाता है कि बोर्ड परीक्षा के दौरान जिला स्तर पर जिला कलक्टर की तरफ से स्थानीय अवकाश घोषित किए जाने की स्थिति में बोर्ड परीक्षाएँ निर्बाध रूप से संचालित की जाने हेतु जिला प्रशासन के समन्वय से आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करें।
3. **बोर्ड परीक्षा अवधि में वीक्षक ड्यूटी नियोजन एवं निर्बाध शिक्षण व्यवस्था हेतु :** बोर्ड परीक्षा हेतु गठित विभिन्न स्तर के उड़नदस्ता प्रभारियों, विभागीय निरीक्षण अधिकारियों तथा अन्य स्रोतों से मिले पृष्ठ पोषण के आधार पर बोर्ड परीक्षा के आयोजन हेतु विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर केन्द्राधीक्षक/जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर लगाई जाने वाली वीक्षक ड्यूटियों में अनियमितता एवं बिना आवश्यकता के लगाई जाने वाली वीक्षक ड्यूटियों के कारण परीक्षा अवधि में विशेषत: ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शैक्षणिक व्यवस्था बाधित होने संबंधी बातें सामने आई हैं। बोर्ड परीक्षा में निष्फल प्रयोजनार्थ लगाई जाने वाली वीक्षक ड्यूटियों की प्रवृत्ति पर प्रभावी नियंत्रण तथा परीक्षा अवधि में राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थी हितार्थ शिक्षण कार्य के निर्विघ्न एवं सुचारु संचालन हेतु प्रासंगिक परिपत्र दिनांक : 12.4.16 द्वारा प्रसारित स्थाई निर्देशों के अनुवर्तन में विभिन्न स्तरों पर निम्नानुसार कार्यवाही सम्पादित की जानी सुनिश्चित करें : –

I. कतिपय मामलों में यह देखने में आया है कि जिन विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा केन्द्र स्थापित है, वहाँ पदस्थापित अधिकारियों/शिक्षकों की परीक्षा ड्यूटी अन्यत्र परीक्षा केन्द्रों/बोर्ड नियंत्रण कक्ष/उड़नदस्ता/माइक्रो ऑब्जर्वर/पेपर कॉर्डिनेटर आदि कार्यों हेतु लगा दी जाती है तथा उस परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा कार्य हेतु अन्यत्र स्थानों से अधिकारी/शिक्षक प्रतिनियुक्त किए जाते हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। अत: अपरिहार्य स्थितियों के अलावा बोर्ड परीक्षा केन्द्र वाले विद्यालयों से अधिकारियों/शिक्षकों की ड्यूटी अन्यत्र नहीं लगाई जाए।

II. जिस विद्यालय में बोर्ड का परीक्षा केन्द्र है, उस विद्यालय के एक शिक्षक को छोड़कर (जो उस विद्यालय के परीक्षार्थी विद्यार्थियों हेतु निर्धारित परीक्षा केन्द्र पर एस्कॉर्ट्स के रूप में नियुक्त किया जाता

है) अन्य किसी भी शिक्षक को अन्यत्र परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा ड्यूटी हेतु नहीं लगाया जाए।

III. परीक्षा केन्द्र वाले विद्यालय में पदस्थापित सभी शिक्षकों की वीक्षक के रूप में ड्यूटी लगाई जाए, बशर्ते कि किसी व्यक्ति विशेष को तात्कालिक कारणों (रक्त-संबंधी के उक्त केन्द्र पर परीक्षार्थी होने अथवा विषयाध्यापक से संबंधित विषय की परीक्षा दिवस को अथवा अन्य किसी आवश्यक कारण) से वीक्षण कार्य करने से प्रतिबंधित नहीं किया गया हो।

IV. वीक्षण ड्यूटी से शेष शिक्षकों हेतु संस्था प्रधान द्वारा विद्यालय की बोर्ड कक्षाओं के अतिरिक्त कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु परीक्षा समाप्ति के उपरांत नियमित कक्षा शिक्षण/उपचारात्मक शिक्षण (रेमेडियल टीचिंग) की व्यवस्था समय प्रबंधन करते हुए सुनिश्चित की जाए, जिससे कि विद्यार्थियों का नियमित शिक्षण कार्य एवं अभ्यास स्थानीय परीक्षाओं के आयोजन तक जारी रखा जा सके। वीक्षण कार्य एवं शिक्षण कार्य, दोनों हेतु विद्यालय के समस्त शिक्षकों की ड्यूटी रोटेशन के आधार पर लगाई जाए।

V. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में पदस्थापित शिक्षकों को शहरी क्षेत्र में स्थित किसी भी बोर्ड परीक्षा केन्द्र पर किसी भी स्थिति में वीक्षक ड्यूटी पर नहीं लगाया जाए।

VI. प्रारम्भिक शिक्षा के विद्यालयों में पदस्थापित शिक्षकों की ड्यूटी यथासंभव माध्यमिक शिक्षा के परीक्षा केन्द्रों पर नहीं लगाई जाए।

VII. **वीक्षक ड्यूटी अभिलेख संधारण :** – बोर्ड परीक्षा में ड्यूटी के नाम से अनियमितता की प्रवृत्ति पर प्रभावी नियंत्रण हेतु समस्त केन्द्राधीक्षकों को स्पष्ट हिदायत प्रदान की जाती है कि वीक्षक- ड्यूटी से संबंधित रजिस्टर का पृथक् से संधारण करते हुए प्रति दिवस वीक्षक-ड्यूटी करने वाले शिक्षकों की प्रविष्टि उक्त रजिस्टर में आवश्यक रूप से करें। इसी प्रकार समस्त वीक्षकों से परीक्षा दिवस से पहले पूर्व सूचनार्थ हस्ताक्षर करवा लिए जाएँ तथा परीक्षा दिवस को वीक्षक-ड्यूटी पर उपस्थिति स्वरूप भी हस्ताक्षर करवाए जाएँ। केन्द्राधीक्षक परीक्षा केन्द्र पर आने वाले समस्त उड़नदस्ता प्रभारियों/विभागीय निरीक्षण अधिकारियों को परीक्षा संबंधी अन्य अभिलेखों के साथ उक्त वीक्षक-ड्यूटी रजिस्टर का अवलोकन करवाते हुए हस्ताक्षर करवाएँगे। केन्द्राधीक्षक उक्त वीक्षक-ड्यूटी रजिस्टर में अंकित शिक्षकों के अलावा अन्य किसी भी शिक्षक की किसी भी स्थिति में बोर्ड परीक्षा प्रयोजनार्थ उपस्थिति प्रमाणित नहीं करेंगे। बोर्ड परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण करने वाले समस्त उड़नदस्ता प्रभारियों तथा विभागीय अधिकारियों को भी निर्देशित किया जाता है कि वे बोर्ड परीक्षा केन्द्र के निरीक्षण के दौरान वीक्षक-ड्यूटी रजिस्टर का आवश्यक रूप से अवलोकन करते हुए इस तथ्य का विश्लेषण करें कि केन्द्राधीक्षक द्वारा वीक्षक-ड्यूटी हेतु नियोजित शिक्षकों की व्यवस्था आवश्यकतानुरूप ही की गई है अथवा नहीं। केन्द्राधीक्षक द्वारा निर्देशों के विपरीत कार्यवाही पाई जाने की अवस्था में उक्त तथ्य का खुलासा निरीक्षण रिपोर्ट में करते हुए संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को अवगत करवाया जाना सुनिश्चित करें। जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा किसी भी अनियमितता पर तत्काल प्रसंज्ञान लिया जाकर संबंधित के विरुद्ध सक्षम स्तर पर अनुशासनिक कार्यवाही प्रस्तावित की जाएगी। साथ ही संबंधित परीक्षा केन्द्र / विद्यालय में व्यवस्था दुरुस्तीकरण की कार्यवाही भी तत्काल सुनिश्चित की जाएगी।

VIII. **जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय की दायित्वबद्धता:–** बोर्ड परीक्षा आयोजन हेतु शासन स्तर से गठित 'जिला स्तरीय परीक्षा संचालन समिति' के सदस्य सचिव के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) सम्पूर्ण जिले में परीक्षा के सुचारू एवं सफल संचालन हेतु प्रथमत: जिम्मेवार होते हैं। उक्तानुरूप बोर्ड परीक्षा में वीक्षक-ड्यूटी के नाम पर मानवीय संसाधनों के दुरुपयोग को रोके जाने तथा उक्त परीक्षा के दौरान क्षेत्राधिकार के विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा के साथ-साथ शिक्षण व्यवस्था के भी सुचारू संचालन हेतु भी संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी का उत्तरदायित्व होता है। चूंकि जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक / माध्यमिक - प्रथम) परीक्षा आयोजन संबंधी क्रियाकलापों / गतिविधियों के समयबद्ध क्रियान्वयन हेतु बोर्ड कार्यालय के सीधे सम्पर्क में होते हैं , अत: बोर्ड परीक्षा के दौरान वीक्षकों की ड्यूटी लगाए जाने से संबंधित कार्य के सुसंगत एवं आवश्यकतानुरूप निष्पादन हेतु जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय स्तर पर एवं केन्द्राधीक्षकों से निम्नांकित विवरणानुसार कार्य सम्पादन अपेक्षित है :-

- बोर्ड परीक्षाओं के प्रारम्भ होने से पूर्व ही सम्पूर्ण जिले के बोर्ड परीक्षा केन्द्रों से संबंधित सम्पूर्ण विवरण/सामग्री बोर्ड कार्यालय से समन्वय रखते हुए यथा समय प्राप्त करने की कार्यवाही सुनिश्चित करें।
- कार्यालय में कार्यरत अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक प्रकोष्ठ) को उक्त कार्य हेतु दायित्वबद्ध करते हुए समस्त परीक्षा केन्द्रों को आवंटित परीक्षार्थी संख्या के अनुरूप प्रति परीक्षा दिवस हेतु वांछित वीक्षकों की संख्या का विवरण यथासमय तैयार करने हेतु निर्देशित करें।
- तत्पश्चात् 'शाला दर्पण' की सहायता से प्रत्येक परीक्षा केन्द्र से संबंधित/समीपवर्ती राजकीय विद्यालय में कार्यरत स्टाफ के अनुरूप उपलब्ध वीक्षक संख्या का विवरण तैयार करावें। समस्त परीक्षा केन्द्रों हेतु केन्द्राधीक्षक/सहायक केन्द्राधीक्षक/पेपर कॉर्डिनेटर/ माइक्रो ऑब्जर्वर के नियुक्ति आदेश समय पर जारी करते हुए केन्द्राधीक्षकों एवं समस्त राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों की संयुक्त बैठक आयोजित कर बोर्ड परीक्षा के लिए समस्त परीक्षा केन्द्रों हेतु उचित संख्या में वीक्षकों की व्यवस्था एवं परीक्षा अवधि में समस्त विद्यालयों में समुचित समय प्रबंधन करते हुए शिक्षण व्यवस्था जारी रखे जाने बाबत् निर्देशों की क्रियान्विति हेतु पाबन्द किया जाना सुनिश्चित करें।
- निजी शिक्षण संस्थाओं/राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों एवं उन माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के परीक्षा केन्द्रों, जहाँ

सीमित स्टाफ के कारण अन्य स्थानों से वीक्षक लगाए जाने हैं, ऐसे समस्त परीक्षा केन्द्रों पर वीक्षकों की प्रतिनियुक्ति का कार्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) कार्यालय द्वारा यथासमय सम्पन्न कर लिया जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में वीक्षकों की आवश्यकतानुसार प्रतिनियुक्ति उसी ब्लॉक (यथा संभव परीक्षा केन्द्र से सम्बन्धित ग्राम पंचायत क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों को प्राथमिकता देते हुए) के समीपवर्ती राजकीय विद्यालयों, जहाँ परीक्षा केन्द्र नहीं है, से की जाए। परीक्षा केन्द्र पर प्रतिनियुक्त वीक्षकों की ड्यूटी सम्पूर्ण परीक्षा दिवसों हेतु नियोजित करते हुए जिस दिन कम वीक्षकों की आवश्यकता हो, उक्त दिवस हेतु वीक्षक ड्यूटी से मुक्त समस्त शिक्षकों को उनके पदस्थापित विद्यालय में शिक्षण कार्य के लिए उपस्थिति देने हेतु निर्देशित करें ।

- ग्रामीण क्षेत्रों में प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वीक्षण कार्य हेतु ड्यूटी अपरिहार्य स्थिति में लगाई जा सकती है। इस प्रकार की आपात स्थिति में केन्द्राधीक्षक द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत में प्रारम्भिक शिक्षा विभाग द्वारा स्थापित नॉडल विद्यालय के संस्था प्रधान से उचित समन्वय रखते हुए समीपवर्ती प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक की ड्यूटी वीक्षण कार्य हेतु लगाई जा सकती है, जिसका कार्योत्तर अनुमोदन संबंधित ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी से करवाया जाए। जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक शिक्षा), जो कि जिला स्तरीय परीक्षा संचालन समिति के सदस्य होते हैं, उक्त बाबत् समुचित निर्देश क्षेत्राधिकार के अधीनस्थ ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारियों को प्रदान करेंगे।
- जिला शिक्षा अधिकारी बोर्ड परीक्षा के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखें कि सभी केन्द्रों पर आवश्यकतानुसार वीक्षक उपलब्ध हों तथा वीक्षक-ड्यूटी के नाम पर निष्फल प्रयोजनार्थ अध्यापकों की प्रतिनियुक्ति भी नहीं की जाए। इस हेतु वे संबंधित ग्राम पंचायत क्षेत्र हेतु शासन के आदेश दिनांक:- 28.01.2017 द्वारा नामित पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (संबंधित ग्राम पंचायत क्षेत्र के माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय के संस्था प्रधान) को दायित्वबद्ध कर संबंधित ग्राम पंचायत क्षेत्र के लिए इस बात की सुनिश्चितता हेतु निर्देशित करें कि किसी भी स्थिति में ग्राम पंचायत क्षेत्र के बोर्ड परीक्षा केन्द्र पर वीक्षकों का अभाव भी न रहे तथा क्षेत्र के समस्त विद्यालयों (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा) में परीक्षा के दौरान निर्बाध अध्ययन-अध्यापन कार्य भी जारी रहे।
- **मण्डल उपनिदेशक द्वारा समुचित पर्यवेक्षण एवं प्रभावी प्रबोधन :-** मण्डल उपनिदेशक द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्राधिकार में उपर्युक्तानुसार प्रदत्त निर्देशों की कठोरता से पालना एवं अक्षरश: क्रियान्विति सुनिश्चित की जाएगी। उक्त कार्य के प्रभावी प्रबोधन हेतु उपनिदेशकों द्वारा सम्पूर्ण परीक्षा अवधि के दौरान अधीनस्थ जिलों में बोर्ड परीक्षा केन्द्रों तथा विद्यालयों का सतत निरीक्षण करते हुए केन्द्राधीक्षकों द्वारा वीक्षण ड्यूटी में बरती जा रही पारदर्शिता एवं संस्था प्रधानों द्वारा विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था के सुचारू संचालन की वस्तुस्थिति का परीक्षण किया जाएगा। किसी भी स्थिति में निर्देशों/नियमों की अवहेलना/उदासीनता पाई जाने पर तत्काल संबंधित अधिकारी/कार्मिक के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनिक कार्यवाही प्रारम्भ की जानी सुनिश्चित करेंगे ।

4. गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी बोर्ड परीक्षा के शान्तिपूर्वक संचालन, परीक्षाओं के दौरान लाउड स्पीकर्स, ध्वनि विस्तारक यन्त्रों पर पाबन्दी लगाने, परीक्षा केन्द्रों पर नकल व अनुचित साधनों का उपयोग करने वाले परीक्षार्थियों के विरुद्ध समुचित कार्यवाही व परीक्षा केन्द्रों पर किसी प्रकार की असामान्य स्थिति उत्पन्न न हों, इस हेतु शासन स्तर पर लिए गए निर्णयानुसार 'जिला स्तरीय परीक्षा संचालन समिति' निम्नानुसार गठित की गई है:-

(I)	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
(II)	जिला पुलिस अधीक्षक	सह-अध्यक्ष
(III)	जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम)	सदस्य सचिव
(IV)	जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-द्वितीय)	सदस्य
(V)	जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक)	सदस्य

इस कार्य में सभी संबंधित उप-खण्ड मजिस्ट्रेट, वृत्ताधिकारी, तहसीलदार एवं थानाधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में संयुक्त निरीक्षण कर आवश्यक व्यवस्था व परीक्षा संचालन सुनिश्चित करेंगे। ये सभी अधिकारी जिला परीक्षा संचालन समिति के दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्य करेंगे।

परीक्षाओं के दौरान अनुचित साधनों के प्रयोग को रोकने हेतु 'राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम-1992' को प्रभावी ढंग से लागू किए जाने एवं अधीनस्थ प्रशासनिक अधिकारियों को क्षेत्र के दौरे के दौरान बोर्ड परीक्षा केन्द्रों का आवश्यक रूप से निरीक्षण करने हेतु शासन स्तर पर समस्त जिला कलक्टर एवं जिला पुलिस अधीक्षकों को निर्देशित किया गया है। उक्तानुरूप जिला प्रशासन से आवश्यक समन्वय एवं सहयोग प्राप्त किया जाना सुनिश्चित करें।

5. प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) एवं मण्डल उप निदेशक (माध्यमिक शिक्षा) कार्यालय में विगत वर्षों के अनुरूप ही जिला/संभाग स्तरीय परीक्षा नियंत्रण कक्ष दिनांक : 27 फरवरी 2017 से अन्तिम परीक्षा समाप्ति तक प्रात: 7:00 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक स्थापित किए जाने हैं। नियन्त्रण-कक्ष में विविध पारियों में नियुक्त कर्मचारियों के पारी-वार नाम, नियन्त्रण कक्ष के फोन नंबर, ई-मेल पते के संबंध में सूचना बोर्ड कार्यालय के फैक्स संख्या 0145-2632869 पर आवश्यक रूप से प्रेषित की जावे।

बोर्ड कार्यालय में परीक्षाओं के सुसंचालन हेतु केन्द्रीय परीक्षा नियन्त्रण कक्ष दिनांक : 27.02.2017 को प्रात: 6:00 बजे से प्रारम्भ होगा, जो परीक्षा समाप्ति तक प्रतिदिन प्रात: 6:00 से रात्रि 12:00 बजे तक कार्य करता रहेगा। इस कण्ट्रोल रूम के टेलीफोन नंबर 0145-2632866, 2632867, 2632868 तथा फैक्स नंबर 0145-2632869 हैं। बोर्ड द्वारा अन्य आवश्यक निर्देशों के

साथ आपको पूर्व में प्रेषित प्रपत्र 'अ' के निर्देशानुसार परीक्षा पूर्व किए जाने वाले कार्यों की सुनिश्चितता यथा समय की जाए। प्रपत्र 'ब' के अनुसार सभी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ निर्देशानुसार 'सूचना प्रेषण कोड' के माध्यम से बोर्ड नियन्त्रण कक्ष को दूरभाष पर नियमित रूप से भेजी जाए तथा प्रपत्र बी.आर., वी.जी., पी.सी.एम.ओ. आदि प्रारूपों में प्रत्येक परीक्षा दिवस को सभी सूचनाएँ भरकर बोर्ड परीक्षा नियन्त्रण कक्ष को फैक्स पर भेजी जाए।

6. निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर में राज्य स्तरीय नियन्त्रण कक्ष की स्थापना की गई है, जो दिनांक 27.02.2017 से परीक्षा समाप्ति तक प्रात: 07.00 बजे से रात्रि 9.00 बजे तक कार्यरत रहेगा, जिसके टेलीफोन नंबर 0151-2544043 तथा फैक्स नंबर 0151-2201861 हैं।

7. किसी भी परीक्षा केन्द्र पर निजी विद्यालय का कोई भी कर्मी वीक्षक/पर्यवेक्षक/ अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक या परीक्षा संबंधी अन्य कार्यों के लिए नियुक्त नहीं किया जाए। आवश्यकता पड़ने पर इनकी पूर्ति प्रारम्भिक शिक्षा के शिक्षकों से की जावे। इन्हें यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता बोर्ड द्वारा देय होगा।

8. गत वर्ष की परीक्षाओं में संदिग्ध, लापरवाह अथवा दण्डित कर्मियों को इस वर्ष की परीक्षाओं में नियुक्त नहीं किया जावे।

9. जिला शिक्षा अधिकारियों व उपनिदेशकों को बोर्ड द्वारा प्रदत्त अग्रिम राशि का सम्पूर्ण हिसाब कार्य समाप्ति के एक माह की अवधि में अवश्य भेजा जाना सुनिश्चित किया जावे। यह संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं उपनिदेशकों की जिम्मेवारी होगी।

10. सभी जिला शिक्षा अधिकारी परीक्षा केन्द्रों पर होमगार्ड व पुलिस स्टाफ की तैनातगी के लिए सूची व संख्या से पुलिस अधीक्षक को अवगत कराएँगे।

11. बोर्ड परीक्षा केन्द्रों पर समुचित फर्नीचर की व्यवस्था होना आवश्यक है। जहाँ फर्नीचर की कमी है, वहाँ 'जिला परीक्षा संचालन समिति' की अनुशंषा पर बोर्ड द्वारा किराए का फर्नीचर उपलब्ध कराया जाएगा।

12. प्राय: यह देखने में आया है कि केन्द्राधीक्षक प्रश्नपत्र वितरण के दिन ही अचानक चिकित्सा अवकाश ले लेते हैं, जिससे प्रश्नपत्र वितरण जैसे अति महत्त्वपूर्ण कार्य में बाधा उत्पन्न होती है। इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए संबंधितों का मेडिकल बोर्ड की अनुशंषा पर ही अवकाश स्वीकृत किया जाए।

13. बोर्ड के परीक्षा केन्द्र वाले विद्यालयों के संस्था प्रधानों को फुटकर व्यय, टेलीफोन इत्यादि के लिए बोर्ड द्वारा निर्धारित राशि दी जावे।

14. जिन उ.प्रा.वि. को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है, उनके संस्था प्रधानों को परीक्षा आयोजन हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान करने एवं परीक्षा आयोजन में नियुक्त प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों को तुरन्त कार्यमुक्त करने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक शिक्षा) से आदेश जारी करवाए जाएँ।

15. जिन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा का केन्द्र स्थापित है, वहाँ यथा संभव उक्त विद्यालय के वरिष्ठतम व्याख्याता, जिन्हें आहरण-वितरण का अधिकार दिया हुआ है, को ही केन्द्राधीक्षक नियुक्त किया जाए।

16. विद्यार्थियों में नकल की प्रवृत्ति पर प्रभावी रोकथाम की पुख्ता व्यवस्था करने तथा अनुचित साधनों की रोकथाम हेतु 'राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम-1992' का प्रचार-प्रसार समाचार-पत्रों एवं टी.वी. के माध्यम से किया जावे। परीक्षाओं के प्रश्न पत्र लीक होने तथा उत्तर पुस्तिकाएँ गिरने जैसी विभिन्न प्रकार की अफवाहों का तुरन्त खंडन कर प्रेस विज्ञप्ति दी जाए। परीक्षा व्यवस्था में कोताही बरतने वाले अधिकारियों/ कार्मिकों के विरुद्ध तत्काल कार्यवाही प्रारम्भ की जाए।

17. परीक्षा अवधि के दौरान परीक्षा केन्द्रों पर अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने, हॉस्टल चलाने तथा कोचिंग कक्षाएँ चलाने पर पाबंदी लगाने बाबत् आदेश जारी किए जाएँ। यदि विद्यालय में हॉस्टल चलाना अपरिहार्य हो, तो वहाँ हॉस्टल की निगरानी हेतु एक ऑब्जर्वर लगाया जाए।

उपर्युक्तानुसार प्रदत्त निर्देशों के साथ ही बोर्ड एवं विभाग द्वारा समय-समय पर प्रसारित सम-सामयिक निर्देशों का पालन तत्परता से किया जाना सुनिश्चित करावें, जिससे कि बोर्ड परीक्षाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ सुचारू रूप से सम्पन्न करवाया जा सके।

● **(बी.एल.स्वर्णकार)आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,बीकानेर

2. आगामी शैक्षिक सत्र 2017-18 से राजकीय माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना लागू करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/22423/2015-16/175 दिनांकः 13.02.2017 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारंभिक/माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● विषय : आगामी शैक्षिक सत्र 2017-18 से राजकीय माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना लागू करने के संबंध में। ● प्रसंगः शासन उप सचिव, प्रथम शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग, जयपुर का पत्रांक : पं.4 (9) शिक्षा-1/2008 पार्ट जयपुर, दिनांक 08.02.2017

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि आगामी शैक्षिक सत्र 2017-18 से राजकीय/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना लागू करने का निर्णय लिया गया है। यह योजना विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 10 के विद्यार्थियों के कम्प्यूटर कौशल प्रशिक्षण हेतु विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के माध्यम

से स्ववित्त पोषित योजना के रूप में लागू की जा रही है, जिसके विस्तृत दिशा-निर्देश संलग्न हैं। अतः उक्त राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में सत्र 2017-18 से 'क्लिक' योजना प्रारम्भ करने के सम्बन्ध में आप अपने अधीनस्थ समस्त राजकीय विद्यालयों को निर्देशित करें। (संलग्न- यथोपरि)

● **(अरुण कुमार शर्मा)** उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग ● क्रमांकः प.4(9) शिक्षा-1/2008 पार्ट जयपुर दिनांक 8.2.2017 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकोनर। राज्य परियोजना निदेशक, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद राजस्थान, जयपुर ● विषय : आगामी शैक्षिक सत्र 2017-18 से राजकीय माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना लागू करने के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत आगामी शैक्षिक सत्र 2017-18 से राजकीय माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना लागू करने का निर्णय लिया गया है। यह योजना विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 10 के विद्यार्थियों के कम्प्यूटर कौशल प्रशिक्षण हेतु विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के माध्यम से स्ववित्त पोषित योजना के रूप में लागू की जा रही है, जिसके विस्तृत दिशा-निर्देश संलग्न हैं। ये दिशा निर्देश सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सहमति से जारी किए जा रहे हैं।

अतः उक्त राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में सत्र 2017-18 से 'क्लिक' योजना प्रारम्भ करने के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही कराने का श्रम करें।

● **(महेश गेरयानी) शासन उप सचिव, प्रथम**

'क्लिक' योजना के संबंध में दिशा-निर्देश (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge)

1. प्रस्तावना

1.1 माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत आने वाले राजकीय माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय व स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान कर उनमें तकनीकी कौशल विकसित करने हेतु राजस्थान नॉलेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आर.के.सी.एल.) के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्रों के सहयोग से स्वैच्छिक व स्ववित्तपोषण आधारित कम्प्यूटर कौशल प्रशिक्षण हेतु 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना लागू की जा रही है।

2. उद्देश्य :

2.1 योजना का मूल उद्देश्य 'डिजिटल इंडिया' संकल्पना को साकार करते हुए राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को भावी डिजिटल युग की माँग के अनुरूप कौशल से सम्पन्न करने व व्यवसाय की तकनीकी चुनौतियों से निपटने के योग्य बनाने हेतु विद्यालय स्तर पर अकादमिक विषयवस्तु के ज्ञानार्जन के साथ-साथ समानान्तर रूप से कम्प्यूटर ज्ञान कौशल का विकास करना व व्यावसायिक दक्षता प्रदान करना है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रशिक्षण कार्य किया जाएगा।

3. आधारभूत संसाधन : (Infra Structure)

3.1 ऐसे राजकीय माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय व स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल जिनमें आई.सी.टी. योजनान्तर्गत या किसी अन्य राजकीय योजना, भामाशाह, सांसद व विधायक क्षेत्रीय विकास योजना या विद्यालय कोष के माध्यम से उपलब्ध कम्प्यूटर संसाधनों युक्त कम्प्यूटर लैब स्थापित है उसे यथावत संचालित रखते हुए इस योजना हेतु उपयोग में लिया जाएगा।

3.2 विद्यालय में उपलब्ध कम्प्यूटर लैब के समस्त हार्डवेयर संसाधनों व सॉफ्टवेयर पर विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति का एकाधिकार रहेगा। विद्यालय प्रशासन द्वारा निर्धारित समय सारणी अनुसार आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्रों द्वारा लैब का उपयोग इस योजना के प्रयोजन हेतु किया जाएगा।

3.3 कम्प्यूटर लैब के रखरखाव, मरम्मत, सुरक्षा इत्यादि का समग्र उत्तरदायित्व पूर्वतः विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति का होगा। विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति के निर्देशन में आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्रों द्वारा लैब का उपयोग पूर्ण सावधानी से किया जाएगा व उपकरणों की संरक्षा सुनिश्चित की जाएगी।

3.4 प्रथम चरण में ऐसे राजकीय माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय व स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल का चयन किया जाएगा जिनमें कक्षा 6 से 10 तक न्यूनतम नामांकन 200 है एवं आवश्यक संसाधनों युक्त कम्प्यूटर लैब उपलब्ध है। प्रशिक्षण योजना में पंजीकरण संख्या न्यूनतम 200 से कम रहने की स्थिति में कक्षा 5 के विद्यार्थियों को भी पंजीकृत किया जा सकेगा।

3.5 प्रस्तावित योजना के लिए कम्प्यूटर लैब व अन्य आवश्यक संसाधनों के प्रबंधन एवं विकास हेतु सांसद व विधायक क्षेत्रीय विकास कोष, भामाशाह सहयोग या अन्य स्रोत का उपयोग विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति द्वारा किया जा सकता है।

4. संचालन (Execution) :-

4.1 प्रस्तावित योजना पूर्णतः स्ववित्तपोषण आधार पर संचालित होगी।

4.2 योजना से जुड़ने वाले विद्यालय की विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति इस आशय का प्रस्ताव पारित करेगी। **(परिशिष्ट-क)**

4.3 पारित व अनुमोदित प्रस्ताव के आधार पर ही विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र के साथ MoU पर कार्यवाही शुरू करेगी व प्रशिक्षण की समस्त कार्यवाही समझ पत्र में उल्लेखित निर्देशों के अधीन रहेगी। **(परिशिष्ट–ख)**

4.4 आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र के साथ लागू किए जाने वाले MoU पर विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति के अध्यक्ष के रूप में संस्था प्रधान हस्ताक्षर के लिए अधिकृत होगा।

4.5 अभिभावक एवं विद्यार्थी की स्वयं की इच्छा से लिखित सहमति के अनुसार ही विद्यार्थी का पंजीकरण इस योजना–अंतर्गत किया जाएगा।

4.6 कक्षा 6 से 8 तथा कक्षा 9 से 10 के लिए पृथक –पृथक पाठ्यक्रम आर.के.सी.एल. के सहयोग से निर्धारित किया गया है। आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र द्वारा नियोजित अनुदेशक, योजना में पंजीकृत विद्यार्थियों को अध्यापन करवाएगा व प्रशिक्षण प्रदान करेगा। **(परिशिष्ट–ग)**

4.7 विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति द्वारा इस योजना का व्यापक प्रचार–प्रसार, प्रबोधन व मॉनिटरिंग की जाएगी।

4.8 प्रस्तावित योजना में विद्यार्थियों से शुल्क का संग्रहण मासिक आधार पर विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति द्वारा किया जाएगा। आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र को शुल्क का भुगतान विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति द्वारा सीधा ही किया जाएगा व इस संदर्भ में आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र द्वारा विद्यार्थियों से किसी प्रकार से प्रत्यक्ष संपर्क नहीं किया जाएगा। निर्धारित शुल्क के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार या नाम से कोई वित्तीय भार या शुल्क विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति द्वारा वहन नहीं किया जाएगा। **(परिशिष्ट–घ)**

4.9 इस योजना हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम अनुसार विद्यार्थियों को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु निम्नानुसार संख्यात्मक अनुपात में अनुदेशक का नियोजन कर आर.के.सी.एल. के अधिकृत ज्ञान केन्द्र द्वारा किया जाएगाः–

- 200 से 249 विद्यार्थियों के नामांकन पर–एक मुख्य अनुदेशक
- 250 से 399 विद्यार्थियों के नामांकन पर– एक मुख्य व एक सहायक अनुदेशक
- 400 से अधिक विद्यार्थियों के नामांकन पर– एक मुख्य व दो सहायक अनुदेशक

4.10 कम्प्यूटर लैब का उपयोग सावधानी से किया जाएगा व किसी उपकरण पर स्वामित्व नहीं जताया जाएगा।

4.11 निर्धारित प्रशिक्षण पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थियों के ज्ञान का मूल्यांकन करने व मान्य प्रमाण पत्र प्रदान करने का दायित्व आई.टी. ज्ञान केन्द्रों का होगा।

4.12 छात्रों का पंजीकरण, प्रशिक्षण विधि, अध्ययन सामग्री, मूल्यांकन तथा प्रमाण पत्र आदि का कार्य ज्ञान केन्द्र राज्य स्तरीय कमेटी के सुझाव के अनुसार करेंगे।

4.13 आई.टी. ज्ञान केन्द्रों द्वारा समय–समय पर व शिक्षा विभाग द्वारा मांग किए जाने पर योजना संबंध में प्रगति रिपोर्ट व अन्य दस्तावेज उपलब्ध करवाए जाएँगे।

4.14 इस योजना हेतु कार्यरत अनुदेशक व अन्य समस्त कार्मिक विद्यालय में उपस्थिति के दौरान विद्यालय प्रशासन के पूर्ण नियंत्रण में अनुशासित ढंग से 'क्लिक' योजना से संबंधित कार्य का ही निष्पादन करेंगे। एस.डी.एम.सी. रिपोर्ट के आधार पर ही अनुदेशक का कार्य सम्पादन माना जाएगा व विपरीत कार्य व्यवहार रिपोर्ट पर तुरंत कार्यमुक्ति की जाएगी।

4.15 आई.टी. ज्ञान केन्द्र द्वारा अनुदेशक का नियोजन योग्यता के आधार पर किया जाना आवश्यक है। अनुदेशक की योग्यता निम्न में से कोई एक होनी चाहिए।

MCA, MSC-IT/CS, PGDCA, BCA, B-TECH समकक्ष या अधिक। (विशेष परिस्थितियों में स्थान विशेष हेतु योग्यता शिथिलन के संबंध में विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति तथा आई.टी. ज्ञान केन्द्र परस्पर सहमति से योग्यता में शिथिलन हेतु प्रस्ताव जिला निष्पादक समिति को भेजेंगे व अनुमोदन पश्चात् शिथिलन योग्यता सहित अनुदेशक नियोजित किया जा सकेगा।)

4.16 प्रदेश के सभी विद्यालयों के छात्रों का पंजीकरण, प्रशिक्षण विधि, अध्ययन सामग्री तथा मूल्यांकन के गुणवत्ता में समरूपता बनाए रखने के लिए राज्य स्तरीय कमेटी का गठन किया जाएगा तथा इस कमेटी के सुझाव तथा निर्णय सभी पक्षों को मान्य होंगे।

इस राज्य स्तरीय कमेटी में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद के दो सदस्य, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के एक सदस्य, आर.के.सी.एल. के दो सदस्य, दो आई.टी. ज्ञान केन्द्र तथा आवश्यकता होने पर अन्य दो आमंत्रित सदस्यों को मनोनीत किया जाएगा।

4.17 राज्य स्तरीय कमेटी के गठन की प्रक्रिया राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा की जाएगी।

5. सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र (आई.टी.जी. के.) के चयन का आधार (Selection Criteria):–

5.1 विद्यालय स्थानीय स्तर पर अपने नजदीकी आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र का चयन करेगा।

5.2 विद्यालय के समीपस्थ स्थित आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र की सूचना www.rkcl.in साइट पर उपलब्ध है। अनुपलब्धता की स्थिति में विद्यालय प्रशासन नजदीकी आर.के.सी.एल. कार्यालय या एडीपीसी राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान कार्यालय से सम्पर्क कर सूचना प्राप्त कर सकता है। आर.के.सी.एल. द्वारा जिले में स्थित समस्त सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्रों की अद्यतन सूची मय पता एडीपीसी राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान कार्यालय को उपलब्ध करवाई जाएगी।

5.3 आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र की प्रामाणिकता हेतु निम्न दस्तावेजों का होना आवश्यक हैः–

i आर.के.सी.एल. द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र (आई.टी.जी. के.) को जारी किया गया अधिकार पत्र।

ii आर.के.सी.एल. के सेवाप्रदाता तथा अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र के मध्य का अनुबंध पत्र जिसमें मान्यता अवधि की तिथि स्पष्ट रूप से अंकित हो।

iii प्रति एक आई.टी. ज्ञान केन्द्र केवल एक ही विद्यालय हेतु प्रशिक्षण का कार्य करेगा।

5.4 नजदीक स्थित आई.टी. ज्ञान केन्द्र के चयन के पश्चात् विद्यालय के द्वारा आर.के.सी.एल. राज्य मुख्यालय को सूचित किया जाएगा व आर.के.सी.एल. राज्य मुख्यालय द्वारा संबंधित संस्था प्रधान के नाम पत्र जारी कर चयनित आई.टी. ज्ञान केन्द्र के चयन की स्वीकृति जारी की जाएगी। इस प्रक्रिया के पश्चात् ही विद्यालय व आई.टी. ज्ञान केन्द्र द्वारा आगामी प्रशिक्षण प्रक्रिया प्रारम्भ की जाएगी।

6. पर्यवेक्षण एवं संबलन (Supervision & Support):–

6.1 विद्यालय का समय निर्धारित शिविरा पंचांग अनुसार ही रहेगा व प्रस्तावित योजना अंतर्गत प्रशिक्षण हेतु समय सारणी का निर्धारण विद्यालय स्तर पर कालांशों का समायोजन कर किया जाएगा।

6.2 विद्यालय में उपलब्ध कम्प्यूटर प्रशिक्षित शिक्षक इस योजना हेतु संबलनकर्त्ता का कार्य करेंगे।

6.3 विद्यालय संस्था प्रधान स्वयं व उनके द्वारा मनोनीत शिक्षक योजना क्रियान्विति की अद्यतन स्थिति की विद्यालय स्तर पर निरंतर मॉनिटरिंग करेंगे।

6.4 योजना की क्रियान्विति स्थिति, गुणवत्ता इत्यादि की सुनिश्चितता हेतु क्षेत्रीय व जिला स्तरीय विभागीय व रमसा अधिकारियों द्वारा समय-समय पर पर्यवेक्षण व मॉनिटरिंग की जाएगी।

6.5 विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति की प्रत्येक बैठक में इस योजना की प्रगति, विद्यार्थी पंजीकरण स्थिति, अनुदेशक की दक्षता, वित्तीय स्थिति आदि बिंदुओं की समीक्षा की जा कर प्रभावी सुधार और संबलन के प्रयास किए जाएँगे।

7. रिकार्ड संधारण (Record Keeping):–

7.1 विद्यालय में योजना के रिकॉर्ड का संधारण पृथक से किया जाएगा तथा विद्यार्थियों की उपस्थिति पंजिका कम्प्यूटर लैब में संधारित की जाएगी।

7.2 विद्यालय में आर.के.सी.एल. द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र अनुदेशक की विजिट के रिकार्ड का संधारण विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति सचिव द्वारा रखा जाएगा।

7.3 योजना से संबंधित सभी प्रकार के वित्तीय प्रबंधन हेतु विद्यालय द्वारा पृथक बैंक खाते का संधारण किया जाएगा तथा यह बैंक खाता पूर्णतः इसी योजना को समर्पित होगा। बैंक खाते का संचालन व खाते से आहरण विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति अध्यक्ष व सचिव के संयुक्त हस्ताक्षर से होगा।

7.4 विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति तथा आर.के.सी.एल. के आई.टी. ज्ञान केन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से जारी समझ पत्र ही योजना की क्रियान्विति का मूल आधारभूत दस्तावेज होगा। सुलभ संदर्भ हेतु विद्यालय के रिकार्ड में समझ पत्र को सुरक्षित संधारित किया जाएगा।

8. 'क्लिक' (Computer Literacy Initiative for Comprehensive Knowledge) योजना के क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग एवं पर्यवेक्षण :

8.1 क्लिक योजना के क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग एवं पर्यवेक्षण हेतु विभिन्न स्तरों पर निम्नानुसार व्यवस्था की जाएगीः–

i राज्य स्तर पर– राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

ii जिला स्तर पर – राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद् की जिला कलक्टर की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय निष्पादक समिति (आदेश की प्रति परिशिष्ट 'ड' पर संलग्न है।)

iii विद्यालय स्तर पर– विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC)/विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC)

9. विविध (Misclleneous):–

9.1 विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति एवं आई.टी. ज्ञान केन्द्र द्वारा संयुक्त बैठक हर मास समाप्ति पर की जाएगी। बैठक में योजना के सफल निष्पादन हेतु मैत्रीपूर्ण ढंग से विचार विमर्श कर समन्वयकारी निर्णय लिए जाएँगे।

9.2 आदर्श विद्यालयों की ब्लॉक स्तरीय व जिला स्तरीय बैठकों में भी इस योजना की प्रगति की मासिक समीक्षा की जाएगी व व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

9.3 आर.के.सी.एल. के अधिकृत सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान केन्द्र व विद्यालय प्रशासन के मध्य मत-भिन्नता व विवाद की स्थिति में विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति द्वारा हस्तक्षेप कर मैत्रीपूर्ण ढंग से मामला सुलझाया जाएगा।

9.4 विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति द्वारा अनिर्णय की स्थिति में अनुशंषा सहित बकाया विवादास्पद मामला निर्णय हेतु जिला निष्पादन समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। जिला निष्पादन समिति की प्रत्येक बैठक में आर.के.सी.एल. का प्रतिनिधि सदस्य उपस्थित होगा व इस योजना में प्रगति की समीक्षा की जाएगी।

9.5 जिला स्तर पर अनिर्णित मामले अग्रेषण टिप्पणी सहित राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद् को भिजवाए जाएँगे। राज्य स्तर पर इस आशय हेतु गठित विशेष समिति द्वारा इन मामलों का अंतिम निस्तारण किया जाएगा। राज्य स्तरीय समिति में आर.के.सी.एल. के दो प्रतिनिधि भी शामिल होंगे।

9.6 सभी प्रकार के कर यदि लागू हो तो आर.के.सी.एल. के आई.टी. ज्ञान केन्द्र द्वारा वहन किए जाएँगे।

FEE STRUCTURE FOR 'CLICK' SCHEME परिशिष्ट–'घ'

S.No.	Particulars	Details				
1	Course	Class 6	Class 7	Class 8	Class 9	Class 10
2	Course Duration	50 hrs	50 hrs	50 hrs	72 hrs	60 hrs
3	**Course Fees**	**Rs.960/- Per Year per Student (80/- per Student per month)**			**Rs. 1320/- Per Year per Studnet (110/- Per Student Per Month)**	
	Exam fee		-Nil-			-Nil-
	Examination & Certification	By RKCL	By RKCL	By RKCL		By VMOU (on payment of Rs. 300/- By Student)
4	Re-examination fee (to be paid by learner), if applicable	-Nil-	-Nil-	-Nil-	-Nil-	As per VMOU & RKCL re- examination policy.

यह शुल्क सत्र 2017–18 के लिए लागू रहेगा तथा राज्य स्तर पर इस आशय हेतु गठित विशेष समिति द्वारा योजना के आकार, अवधि, प्रारूप, पाठ्यक्रम, शुल्क संरचना में परस्पर समन्वय से सकारात्मक परिवर्तन किया जा सकेगा। ● **(महेश गेरयानी)** शासन उप सचिव–प्रथम

3. शैक्षिक सत्र 2016–17 एसआईक्यूई कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर योगात्मक आकलन–चतुर्थ योगात्मक आकलन की तिथि संशोधन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक उनि/सशि/SIQE/वो–।।/2016–17/95 दिनांक 20.02.2017 ● समस्त मण्डल उपनिदेशक–माध्यमिक एवं प्रारम्भिक, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक एवं प्रारंभिक, समस्त संस्था प्रधान रामावि/राउमावि/राप्रावि/राउप्रावि ● विषयः सत्र 2016–17 एसआईक्यूई के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर योगात्मक आकलन–चतुर्थ योगात्मक आकलन की तिथि संशोधन।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एसआईक्यूई कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्तमान में समस्त राजकीय विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली के तहत पाठ्यक्रम को चार टर्मों में विभाजित कर प्रत्येक टर्म में बच्चों का योगात्मक आकलन किया जा रहा है। शिविरा पंचांग 2016–17 में चतुर्थ योगात्मक आकलन की अवधि मार्च का चतुर्थ सप्ताह निर्धारित की गई थी। इसमें संशोधन करते हुए चतुर्थ योगात्मक आकलन की अवधि 15 से 25 अप्रेल 2017 तक निर्धारित की जाती है। योगात्मक आकलन दर्ज करने की समस्त प्रक्रियाएँ पूर्ववत् ही रहेंगी।

● **(बी.एल.स्वर्णकार) आई.ए.एस.,** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● **(एस.पी. किशन) आई.ए.एस.,** निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग सत्र 2016-17

मार्च 2017

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

मार्च 2017 ● कार्य दिवस–25, रविवार–4, अवकाश–2, उत्सव–3 ● 12 मार्च– होलिका दहन (अवकाश)। **13 मार्च–**धुलण्डी (अवकाश)। **15 मार्च–**विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव)। **29 मार्च–**चेटीचण्ड (अवकाश–उत्सव)। **30 मार्च–**राजस्थान दिवस (उत्सव)। **नोट :–** चतुर्थ योगात्मक आकलन का आयोजन (मार्च के चतुर्थ सप्ताह में) (SIQE/CCE संचालित विद्यालयों में)

अप्रैल 2017 ● कार्य दिवस–23, रविवार–5, अवकाश–2, उत्सव–3 ● 1 अप्रैल–विद्यालय समय परिवर्तन–**1.** एक पारी विद्यालय–विद्यार्थियों हेतु प्रातः 8.05 से 2.10 बजे तक। (शिक्षकों हेतु प्रातः 8 बजे से 2.10 बजे तक, संस्था प्रधान हेतु प्रात:7.50 से 2.10 बजे तक)। **2.** दो पारी विद्यालय–प्रातः 7 से सायं 6 बजे तक (प्रत्येक पारी 5.30 घंटे)। **4 अप्रैल–**रामनवमी (अवकाश–उत्सव)। **9 अप्रैल–**महावीर जयन्ती, अहिंसा दिवस (अवकाश–उत्सव) **13 से 25 अप्रैल–**वार्षिक परीक्षा का आयोजन। **14 अप्रैल–**डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयन्ती (अवकाश–उत्सव) एवं गुड–फ्राइडे(अवकाश)। **26 अप्रैल–**विद्यालय में आगामी सत्र हेतु प्रवेश प्रक्रिया का आरम्भ एवं नामांकन हेतु विद्यार्थियों के चिह्नीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ। **29 अप्रैल–**वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा परीक्षा परिणामों की प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को समीक्षा हेतु प्रेषित करना। संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर सत्रपर्यन्त हुए कार्यों की समीक्षा करना एवं आगामी सत्र की विद्यालय योजना हेतु विचार–विमर्श कर निर्णय लेना तथा योजना संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना। SDMC की साधारण सभा का आयोजन एवं करणीय कार्यों के संबंध में प्रस्ताव पारित करना।

(समय–समय पर जारी संशोधन प्रभावी होंगे)

अप्रैल 2017

रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

माह : मार्च, 2017	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.3.2017	बुधवार	उदयपुर	8	अंग्रेजी		परीक्षामाला
2.3.2017	गुरुवार	जयपुर	7	सामाजिक विज्ञान	10	लैंगिक समझ और संवेदनशीलता
3.3.2017	शुक्रवार	उदयपुर	11	अनिवार्य हिन्दी प्रथम	10	उधार माँगना भी एक कला है
4.3.2017	शनिवार	जयपुर	7	विज्ञान	12	दाब
6.3.2017	सोमवार	उदयपुर	9	संस्कृत (तृ. भाषा)	11	पर्यावरणस्य महत्त्वम्
7.3.2017	मंगलवार	जयपुर	9	विज्ञान	10	गुरुत्वाकर्षण
8.3.2017	बुधवार	उदयपुर	6	विज्ञान	12	बल
9.3.2017	गुरुवार	जयपुर	9	संस्कृत (तृ. भाषा)	13	संचारसाधनानां विकासः
10.3.2017	शुक्रवार	उदयपुर	7	सामाजिक विज्ञान	9	लोकतन्त्र और समानता
11.3.2017	शनिवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम		
14.3.2017	मंगलवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम		
15.3.2017	बुधवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम		विश्व उपभोक्ता दिवस–उत्सव
16.3.2017	गुरुवार	उदयपुर	7	विज्ञान	17	कचरा प्रबंधन
17.3.2017	शुक्रवार	जयपुर	9	हिन्दी	17	पत्र एवं कार्यालयी अभिलेखन
18.3.2017	शनिवार	उदयपुर	9	हिन्दी	16	अलंकार : अर्थ एवं प्रकार
20.3.2017	सोमवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	17	मेले
21.3.2017	मंगलवार	उदयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	18	तरह–तरह के घर
22.3.2017	बुधवार	जयपुर	7	सामाजिक विज्ञान	19	कला एवं स्थापत्य
23.3.2017	गुरुवार	उदयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	19	यातायात के साधन
24.3.2017	शुक्रवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	22	कैसे बचाएँ ईंधन
25.3.2017	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
27.3.2017	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
28.3.2017	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
30.3.2017	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राजस्थान दिवस–उत्सव
31.3.2017	शुक्रवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	19	स्वच्छ घर – स्वच्छ गाँव

आवश्यक सूचना

'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय–समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBBJ बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग–अलग संलग्न करें।

–वरिष्ठ संपादक

जन्म दिवस विशेष

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना के स्वर

❒ मधुबाला शर्मा

आधुनिक युग की मीरा के नाम से विख्यात एवं छायावादी काव्य धारा की पोषिका महादेवी वर्मा का हिन्दी कवयित्रियों में अत्यन्त महत्त्व है। वे आत्म-वेदना एवं प्रणय की पीड़ा को रहस्यमय आवरण में लपेटकर भावुकता के साथ अभिव्यंजित करने में सफल रही हैं। इनके काव्य में छायावादी काव्य-चेतना के अनुरूप वेदना, करुणा आदि की अधिकता है तो घोर वैयक्तिकता, रहस्यात्मकता एवं नारी-सुलभ स्नेहशीलता की मार्मिक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। इन्होंने अपने हृदय की तीव्र वेदना एवं करुणा को अपने काव्य गीतों में अतीव कौशल एवं लालित्य के साथ निरुपित किया है।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 में श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा के घर फर्रूखाबाद (उ.प्र.) में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में तथा शेष प्रयाग में हुई। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर बाद में वहीं पर शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया और प्रयाग विद्यापीठ में प्राचार्या रहीं। वेद, उपनिषद आदि के साथ संस्कृत साहित्य का गहन अध्ययन कर आपने प्राकृत, बंगला, गुजराती, उर्दू आदि के साहित्य का अध्ययन किया। चित्रकला, संगीत तथा अन्य ललित कलाओं में रुचि होने से साहित्य के साथ कला का समन्वय करने में ये सफल रहीं। आत्मानुभूति की गहनता, रागात्मकता, विराट विरह-वेदना, अज्ञात सत्ता के प्रति आध्यात्मिक प्रणय-निवेदन, प्रकृति की सर्वात्मवादी छवियों का अंकन, मानवीकरण आदि इनकी कविता के मूल स्वर हैं।

छायावादी युग की प्रसिद्ध गायिका महादेवी वर्मा का काव्य लौकिक प्रेम-विरह तथा अलौकिक प्रियतम मिलन और मानवीय करुणा-वेदना की अभिव्यक्ति से परिपूर्ण है। इस विशेषता के कारण उनके काव्य में भावपक्ष और कलापक्ष का श्रेष्ठ संयोजन हुआ है। महादेवी के काव्य में अनुभूति की जो गहराई है, वह अगाध तथा अनुपम है। महादेवी के काव्य में गीति-काव्य के भी सभी तत्त्व समाविष्ट हैं, साथ ही उसमें तल्लीनता, भावोद्रेकता, विरह व्यथा, मानवीय करुणा के साथ मधुर पदयोजना विद्यमान है।

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम और वेदना की मार्मिक गहनता दिखाई देती है। इनकी वेदना न तो कृत्रिम है और न ही आरोपित, अपितु उसमें एक सहज स्वाभाविकता है। उनकी वेदना हृदय के कई तलों में व्याप्त और अत्यन्त गहन है। वे जहाँ कहीं भी देखती हैं, उन्हें सारा संसार दुःख का सागर दिखाई देता है और सर्वत्र एक तड़प, एक टीस सुनाई देती रहती है। वे सदा वेदना में ही निमग्न रहना चाहती हैं, कारण कि वेदना ने उनके हृदय में चिर-निवास कर लिया है। वैसे भी जब वेदना ही प्राणों से लिपटी हो, तो फिर उससे छुटकारा कैसे मिल सकता है। इसी संदर्भ में वे कहती हैं -

प्रिय! जिसने दुःख पाला हो
जिन प्राणों से लिपटी हो
पीड़ा सुरभित चंदन सी।

महादेवी वर्मा के काव्य में तीव्र विरहानुभूति और प्रेम वेदना के साथ करुणा की प्रधानता भी दिखाई देती है। वस्तुतः करुणा की प्रधानता उनके काव्य में वैयक्तिक कारणों से भी है और कुछ बौद्धदर्शन के प्रभाव से भी। साथ ही उनके ही मतानुसार ''छायावाद एक प्रकार से व्यथा और करुणा की अभिव्यक्ति है। जब इस जीवन का आधार ही वेदना है तो इसमें करुणा का प्राधान्य स्वतः सिद्ध हो जाता है।'' उन्होंने स्वयम् स्पष्ट किया है -

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास।
अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।

करुणा से ओत-प्रोत रहने के कारण महादेवी वर्मा ने जीवन को वेदना का पर्याय माना है और स्पष्ट बतलाया है कि करुणा जल में स्नान करने से ही दुःख उज्ज्वल हो जाता है तथा विषाद की कालिमा धुल जाती है। इसलिए वे कहती हैं -

मेरे बिखरे प्राणों में सारी करुणा ढुलका दो।

महादेवी वर्मा की काव्यानुभूति अतीव सशक्त है। उनकी अनुभूति में कृत्रिमता एवं आडम्बर का अभाव है, इस कारण उन्होंने जिन भावों का उद्रेक किया है, वे अत्यन्त सहज, स्वाभाविक और भावनामय हैं। उनके उद्गारों में हार्दिक निर्मलता एवं तरलता दिखाई देती हैं। उनका सिहर उठना और पुलकित होना वेदनानुभूति से गम्य है। उनके काव्य में भावोद्रेक की स्वाभाविकता देखी जा सकती है। यथा-

जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करुणा कितने संदेश,
मन में छा जाते बार-बार।

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना के साथ आध्यात्मिकता एवं रहस्यवादिता का पुट दिखाई देता है। उनकी आध्यात्मिकता वस्तुतः विरह की एक साधना है, जिसमें वे स्वयं को जलाकर भी अपने परिवेश को आलोकित करना चाहती हैं। यद्यपि महादेवी ने निर्गुण के प्रति प्रणय भाव की अभिव्यक्ति की है तथापि उन्होंने उसमें सगुण का सामन्जस्य भी स्थापित किया है।

दूसरी ओर महादेवी ने विरहानुभूति में अदृश्य प्रियतम में अभेद स्थापित किया है और उसका आध्यात्मिक साधना से साक्षात्कार कर पाने का संकेत किया है। परन्तु लौकिक जगत् में उसका विरह बना ही रहता है। इस सम्बन्ध में वे कह उठती हैं -

मैं कण-कण में ढाल रही अलि
आँसू के मिस प्यार किसी का।

महादेवी वर्मा के काव्य में विरह व्यथा का आवेग उस प्राकृतिक झरने की तरह है जो निरन्तर प्रवाहित होता रहता है और अविरल गति से चट्टानों पर टकराता रहता है। इस टकराहट की कोई सीमा नहीं है। महादेवी की विरह व्यथा भी सीमाहीन है। अतः अत्यन्त आवेगमयी स्थितियों में भी वे अपने जीवन दीपक को निरन्तर जलाए रखने की कामना व्यक्त करती हुई कह उठती हैं -

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल,
युग-युग प्रतिपल प्रिय का पथ आलोकित कर।

महादेवी अपने प्रियतम का चिर विरह चाहती है, इसलिए वे मिलन की बात कम ही करती हैं।स्वप्नावस्था में मिलना होता भी है तो पलकों की ओट में ही रह जाता है। इसलिए वे निरन्तर विरह व्यथा में डूबे रहने की इच्छा सकारण व्यक्त करते हुए कहती हैं -

शून्य मेरा जन्म था, अवसान है मुझको सवेरा।
प्राण आकुल के लिए संगी मिला केवल अंधेरा।
मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ।

निरन्तर विरह व्यथा से आक्रान्त महादेवी ने स्वयम् को दीपशिखा कहा है। दीपक निरन्तर जलता रहता है, यही स्थिति विरही की भी होती है। एक अन्यगीत में उन्होंने अपने आपको 'नीर भरी दुःख की बदली' कहा है। वह बदली स्वयं आँसू बहाती है, परन्तु इससे लोक हित होता है। अपनी व्यथा का वर्णन करते हुए वे कहती हैं :-

मैं नीर भरी दुःख की बदली।
स्पन्द में चिर स्पन्द बसा,
क्रन्दन में आह विश्व हँसा,
नैनों में दीपक से जलते,
पलकों में निरझरनी मचली।

विरह-वेदना की अधिकता के कारण महादेवी जी ने जीवन की तुलना विरह के कमल से की है और बतलाया है कि चाहे बसन्त हो या बरसात, विरही जीवन सदा एक जैसी हालत में पीड़ा भोगता रहता है।

महादेवी जी के काव्य में अनुभूति की तीव्रता नारी जनोचित सात्विकता से ओत-प्रोत है। उनकी विरह-वेदना में कोमल हृदय की तड़पन और मार्मिकता है। उसमें सभी के प्रति समान करुणाशीलता एवं अपनत्व है। विशेषकर लोकमंगल की भावना उसमें प्रधान है, यह नारी-सुलभ सात्विक चेतना के कारण ही समाविष्ट हो सकी है। महादेवी वर्मा ने अपनी अनुभूति को सात्विकता के साथ-साथ सत्यानुभूति से भी समन्वित किया है। उन्होंने लिखा भी है -

हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद,
छा जाता जीवन में वसन्त,
लुट जाता चिर संचित विराग।

विरह वेदना की मार्मिक गायिका होने के कारण महादेवी वर्मा को आधुनिक काल की मीरा कहा जाता है। मीरा की तरह महादेवी ने अपना सर्वस्व अपने अदृश्य प्रियतम के ऊपर अर्पित कर दिया। वह अदृश्य प्रियतम ही उनका आराध्य है। वह निर्गुण और निराकार है, वह असीम और अनन्त है, वही जीवन और वेदना है। इसी विरह-वेदना को वे कुछ इस प्रकार प्रकट करती हैं -

क्या पूजा क्या अर्चन रे?
उस असीम का सुन्दर मंदिर मेरा लघुतम
जीवन रे।

महादेवी वर्मा ने कहीं प्रेम की, कहीं विरह की, कहीं सौन्दर्य की और कहीं करुणा की अनुभूतियों को गीतिकाव्य के रूप में व्यक्त किया है। तीव्र अनुभूति की निश्छल अभिव्यक्ति ही पाठक को भाव-विभोर करने की क्षमता रखती है। कवयित्री को अपनी असहायता, अपने एकाकीपन की कैसी अनुभूति हुई है कि उसे इतने बड़े संसार में कोई भी अपना प्रतीत नहीं होता और वे कह उठती हैं -

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली,
मैं नीर भरी दुःख की बदली।

यह सही है कि अनुभूति की गहनता अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग खुद खोज लेती है। विरह व्यथा से ग्रस्त व्यक्ति एकान्त और अंधेरे को अपना संगी बना लेता है। भावना की अनुभूति की यह सच्चाई महादेवी के गीतों में है। इसके साथ ही महादेवी जी साधिका भी है। उन्होंने असीम, अलौकिक प्रिय सम्बन्धी अपनी गहन अनुभूतियों को लौकिक स्तर पर भी व्यक्त किया है। जैसा कि साधना की चरम अवस्था में ज्ञाता और ज्ञेय में भेद नहीं रह जाता। तादात्म्य की सच्ची अनुभूति महादेवी जी के काव्य में परिलक्षित होती है।

इस प्रकार महादेवी वर्मा के काव्य में अनुभूति की सघनता और वेदना की तीव्रता आद्यन्तविद्यमान है।उनकी गहन अनुभूतियों का निर्झर अत्यन्तमोहक है। उसका आस्वादन करने वाला भाव-विभोर हुए बिना नहीं रह सकता। कल-कल कर बहती सरिता, झर-झर कर झरते निर्झर के संगीत से कौन सहृदय प्रभावित नहीं होगा? वेदना, करुणा, आशा, निराशा की सच्ची अनुभूतियों को महादेवी जी के काव्य में देखा जा सकता है। महादेवी जी की वेदना प्राकृतिक झरने की तरह अविरल है। उसमें जल स्रोत की तरह अखण्ड गति है। वे पीड़ा की गायिका है, तभी तो उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। ऐसी महान् लेखिका महादेवी वर्मा को शत-शत नमन, साहित्य जगत् उनका सदैव ऋणी रहेगा।

अध्या., रा.उ.मा.विद्यालय,
मोरखाना (बीकानेर), **मो. 9414452701**

ब्रह्मवादिनी गार्गी

गार्गी ब्रह्मवादिनी थी। ज्ञान और तपस्या पर उसका अधिकार बड़ा था। प्राचीन काल में स्त्रियों को दो प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी। 1. गृहशास्त्र, 2. वेदाध्ययन।जो स्त्रियाँ विवाह कर गृहस्थाश्रम स्वीकार करती थीं उन्हें सद्योद्वाहा कहते थे और जो स्त्रियाँ ब्रह्मचर्य का पालन कर वेदाध्ययन करती थी उन्हें ब्रह्मवादिनी कहते थे। उस समय माता-पिता ब्रह्मवादिनी कन्याप्राप्ति के लिए ईश्वर से मनौती माँगते थे। ब्रह्मवादिनी गार्गी का नाम वाचक्नवी भी था। क्योंकि वह वचक्नु की कन्या थी। गर्ग गोत्र में उत्पन्न होने के कारण इसका नाम गार्गी हुआ गार्गी का अधिकार इतना श्रेष्ठ था कि ऋषियों को तर्पण करते समय गार्गी को अर्घ्य देने का उल्लेख है।

एक बार राजा जनक की राजसभा में याज्ञवल्क्य जी पधारे। उस समय उनके साथ विवाद करने अपनी श्रेष्ठता प्रस्थापित करने में भी सभी विद्वान असफल हुए तब सभी ने अपनी हार स्वीकार की, गार्गी आयी और उसने याज्ञवल्क्य जी से दो मार्मिक प्रश्न पूछे। गार्गी के प्रश्न सुनकर ही लोगों ने उसकी विद्वत्ता मान्य की। ब्रह्मतत्व का वर्णन याज्ञवल्क्य के बिना दूसरा कोई भी नहीं कर सकता। ऐसा गार्गी के द्वारा प्रमाणित करने पर ही याज्ञवल्क्य जी को 'अजेय पद' प्राप्त हुआ विद्वत्सभा में गार्गी की इतनी बड़ी साख' थी। रामायण काल में गार्गी के समान महान विदुषी भारतवर्ष में हुई यह हम भारतीय स्त्रियों को गौरवास्पद है।

साभार-'**प्रातः स्मरणीय महिलाएँ**'पुस्तक से

एस.आइ.यू.ई.

विशेष अधिगम समर्थन पैकेज

❒ प्रेमनारायण गुर्जर

आरटीई 2009 के तहत 6-14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निः शुल्कशिक्षा का अधिकार प्राप्त है। इसमें यह भी प्रावधान है कि बच्चों को आयु अनुसार कक्षा में प्रवेश दिया जाए तथा विद्यालय मे प्रवेश के बाद विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। ताकि वे बच्चे अपनी कक्षा के अन्य सहपाठियों/बच्चों के साथ पढ़ाई जारी रख सकें। कई बच्चे नियमित अध्ययन के बाद भी किन्हीं कारणों से नामांकित कक्षा स्तर को प्राप्त नहीं कर पाते और उन्हें अन्य बच्चों के साथ कक्षा के पाठ्यक्रम को ढोना होता है, फलस्वरूप वे कक्षा में पिछड़ते जाते हैं और अन्ततः शाला त्याग देते हैं। ऐसे बच्चों के साथ विद्यालय/कक्षा स्तर पर कोई विशेष कार्य नहीं किया जाता, जिससे उनके शैक्षिक स्तरों को बढ़ाया जा सके और न ही उनके अनुसार किसी प्रकार की उपयुक्त शिक्षण सामग्री है जिस पर काम किया जा सके।

इसी क्रम में माध्यमिक शिक्षा विभाग, रा.मा.शि. परिषद् जयपुर, बोध शिक्षा समिति जयपुर एवं यूनीसेफ के समन्वित प्रयासों से विशेष अधिगम समर्थन कार्यक्रम की योजना बनाई है, इसका लाभ उन सभी बच्चों को मिलेगा जो नामांकित कक्षा के अनुरूप शैक्षिक स्तर पर नहीं है। इसके तहत् प्रथम चरण में राज्य के प्रति ब्लॉक से एक आदर्श विद्यालय का चयन कर नामांकित कक्षा स्तर से पिछड़े बच्चों के साथ उपयुक्त सामग्री के साथ काम करके देखा जाना तय किया गया। इन विद्यालयों का चयन निम्नलिखित आधार पर किया गया है -

- चयनित विद्यालय प्रथम चरण का आदर्श विद्यालय हो।
- संस्था प्रधान विशेष अधिगम समर्थन से सहमत हो और इस पर होने वाले व्यय की व्यवस्था कर सके।
- प्राथमिक कक्षाओं मे नामांकन 100 अथवा अधिक हो।
- भौतिक संसाधनों की पर्याप्तता।

यह कार्यक्रम दिसम्बर 2016 से अप्रैल 2017 तक पायलेट के रूप में संचालित किया जा रहा है। शिक्षक साथियों एवं बच्चों के लिए विशेष अधिगम कार्यक्रम के तहत पैकेज के रूप में शिक्षण सामग्री निर्मित की गई है। इस सामग्री में एक शिक्षक संदर्शिका सहित बच्चों के लिए पठन, लेखन सामग्री, अभ्यास कार्य एवं आकलन हेतु अभ्यास पत्रक है। सामग्री को समझने व इसके उपयोग के लिए निम्नांकित बिन्दु ध्यातव्य है : -

- पैकेज में मुख्य रूप से चार प्रकार की सामग्री को शामिल किया गया है।
- प्रथम दो तरह की सामग्री में आधार रेखा आकलन पत्रक, आउटकम आकलन पत्रक व सीखने सिखाने की गतिविधियों को संदर्शिका के रूप में शामिल किया है।
- दूसरी दो तरह की सामग्री में विशेष अधिगम समर्थन सामग्री को रखा गया है जिसमें बच्चों के लिए गतिविधियाँ, अभ्यास पत्रक व रचनात्मक आकलन हेतु पत्रक है।
- विशेष अधिगम सामग्री में लैडर चार्ट बच्चों के साथ काम करने का प्रारूप देता है। इसके अनुसार बच्चे के काम करने की योजना का निर्धारण करने में मदद मिलती है। इसे अग्रांकित चार्ट से समझा जा सकता है।
- सर्वप्रथम 'लर्निंग लेवल आकलन पत्रक' द्वारा बच्चे का स्तर निर्धारण करना है।
- स्तर निर्धारण के पश्चात बच्चे के साथ सीखने की शुरूआत विषय के अनुसार गतिविधि द्वारा अवधारणा की स्पष्टता के साथ करना है।
- गतिविधि द्वारा सिखाई गई अवधारणा पर अभ्यास हेतु अभ्यास पत्रक पर काम किया जाना आवश्यक है। अभ्यास पत्रक उपसमूह व व्यक्तिगत दोनों तरह से काम में लिए जा सकते हैं। कार्य योजना, अभ्यास पत्रक तथा रचनात्मक आकलन पत्रक संदर्शिका में शामिल हैं।
- अभ्यास पत्रकों पर अभ्यास करवाने के उपरान्त सतत् आकलन हेतु रचनात्मक आकलन कार्यपत्रक का इस्तेमाल किया जाना है। सतत् रचनात्मक आकलन पत्रक अवधारणा/सोपान/लैडर या दो-तीन छोटी-छोटी उप-अवधारणाओं/सोपान/लैडर के लिए समेकित रूप से दिया गया है।
- आकलन पर रही स्थिति के अनुसार शिक्षक को अपनी योजना को संगठित करना है। जिन बच्चों के लिए ये अभ्यास पर्याप्त नहीं हो पाते हैं, उन बच्चों को इन कार्यपत्रकों के पीछे या नोटबुक में अतिरिक्त अभ्यास कराना समीचीन रहेगा।
- महीने के अन्त में या कक्षा के सम्पूर्ण कार्य के पश्चात् 'लर्निंग आउटकम आकलन पत्रक' द्वारा योगात्मक आकलन किया जाना है।
- इसके उपरान्त बच्चे का स्तर क्रमोन्नत करने का निर्णय लिया जाएगा।
- बच्चों का रचनात्मक आकलन दर्ज करने के लिए विषय के अनुसार आकलन सूचकों की सतत् रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट/आकलन प्रपत्रों में शिक्षक टिप्पणी के लिए स्थान दिया गया है। अतः इसे वहीं पर उसमें दर्ज किया जाना है।
- विषय के अनुसार सतत् रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट ABC ग्रेड में ही दी जानी है। जिनका अर्थ है -
  - A स्वतंत्र रूप से कर पाना
  - B शिक्षक व साथियों से मदद लेना।
  - C विशेष मदद से काम कर पाना।
- एक कक्षा की सामग्री लगभग एक माह की है। अतः एक माह बाद बच्चों का योगात्मक आकलन दर्ज किया जाएगा। जिसका प्रपत्र भी विशेष अधिगम समर्थन संदर्शिका में लगाया गया है। इस प्रपत्र में भी ABC ग्रेड देनी है। यहाँ पर इनका अर्थ रचनात्मक आकलन की ग्रेड से अलग होगा, जो निम्नवत है -

A अपेक्षित स्तर की समझ होना।

B मध्यमस्तर की समझ होना।

C आरम्भिक स्तर की समझ होना।

सामान्यतः प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरतबच्चों के स्तरों का विश्लेषण करके देखते हैं तो महसूस होता हैं कि बच्चों की सीखने की स्थिति काफी चिंतनीय है।इसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। बच्चे कक्षा दर कक्षा क्रमोन्नतहो जाते हैं ,लेकिन उनके अधिगम स्तर में अपेक्षाकृत वृद्धि नहीं हो पाती है। बच्चों की आयु एवं अनुभव के अनुसार उनके सीखने की गति में भी इज़ाफ़ा होता है। इसका तात्पर्य यह हुअकि इन बच्चों के अधिगम अंतरालों को पाटने/पूरा करने के लिए शिक्षण एवं आकलन की उचित एवं उपयुक्तशिक्षण सामग्री एवं टूल्स का निर्धारण किया जाए। अतः इन बच्चों के साथ बुनियादी अवधारणाओं एवं कौशलों के क्षेत्र में कुछ प्रतिनिधि अभ्यास कार्य करवाकर कक्षा स्तर पर लाया जा सकता है। इस तरह के प्रयास में समय और श्रम भी अधिक नहीं लगता तथा बच्चे अपने सम्मान को बनाए रखते हुए अपनी कक्षा के स्तर पर पहुँचजाते हैं।अब यहाँ अगला सवाल यह उठता है कि बच्चों के अधिगम स्तरों के अंतरालों का पता किस तरह लगाया जा सकता है ? यह पता लगाने की क्याप्रक्रिया हो सकती है ? इसके लिए कुछ बातों को समझना जरूरी होगा।

आकलन/मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों?

आकलन एवं मूल्यांकन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का वह अभिन्नअंग है जिसके बिना सीखना-सिखाना सुचारू रूप से किया नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए यदि हमको बच्चों का वास्तविक अधिगम स्तर पता नहीं है तो हम बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप काम की उपयुक्तयोजना नहीं बना सकते। इसका सीधा-सीधा अर्थ यह हुअकि हम आकलन किए बिना बच्चों का सीखना सुनिश्चित कर नहीं पाएँगे। इसीलिए आकलन को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अंतर्गुंथित माना गया है। शिक्षक के अलावा अभिभावक और स्वयं बच्चे भी अधिगम स्थिति को जानकर उपयुक्तनिर्णय लेने की स्थिति में हो सकते हैं।यदि उनको ऐसा करने का मौका दिया जाता है तो इसका मतलब सीधा-सीधा यह हुअकि प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के चार मुख्य साझीदार होते हैं ; जिनमें पहला स्वयं बच्चा, दूसराबच्चे के साथी, तीसरा अभिभावक एवं चौथाशिक्षक होता है।ये चारों साझीदार अपने-अपने तरीके से सीखने-सिखाने में भागीदारी निभाते हैं। साझेदारी निभाने के लिए समय-समय पर आकलन भी करते रहते हैं। इसलिए महत्त्वपूर्ण गतिविधि को समझना और संचालित करना उपयुक्तरहेगा।

आकलन मूल्यांकन के आधार

शिक्षक साथियों को सबसे पहले यह निर्धारण कर लेना चाहिए कि बच्चें के लिए अमुक कक्षा को पार कर लेने का अर्थ क्याहै ? अर्थात् अमुक कक्षा के कम से कम वे कौनसे आधारभूत काम हैं जिनको कर लेने पर बच्चें को उस कक्षा को पार किया हुआमाना जाएगा। यही आधारभूत काम बच्चें के स्तर के निर्धारिण का आधार होता है। इन्हीं का आकलन एवं मूल्यांकन किया जाना उपयुक्तरहेगा। ये आधार-कौशलविषयवार निम्नलिखित हैं -

भाषा (हिन्दीव अंग्रेजी)	गणित
सुनना बोलना	आकृति एवं स्थान की समझ
पढ़ना	संख्या ज्ञान की समझ
लिखाना	संक्रियाओं की समझ
व्यावहारिक व्याकरण	पैटर्न की समझ संक्रियाओं की समझ समस्या समाधान की समझ दैनिक जीवन में उपयोग की समझ

आकलन/मूल्यांकन के ये ही आधार क्यों होने चाहिए?

सामान्यतः प्राथमिक स्तर पर मूलभूत अवधारणाओं के ये ही क्षेत्र हैं ,जिनमें बच्चें को कुछ शुरुआती अवधारणाओं को सीखने का अवसर मिलता है। वह इन क्षेत्रों में सीखी हुई आधारभूत अवधारणाओं को आगे सीखने में उपयोग करता है। सीधा-सीधा यह हुअकि बच्चें के साथ प्राथमिक स्तर पर दिए गए अवधारणा/कौशल क्षेत्रों पर काम करवाकर उसको स्वयं सीखने के योग्यबनाना चाहिए। पाठ्यक्रम में बच्चें से यही अपेक्षा की गई है।

बच्चें के अपने कक्षा स्तर पर नहीं होने के पीछे मुख्य अकादमिक कारण एवं सुझाव-

सामान्यतया बच्चें का शैक्षिक स्तर नामांकित कक्षा के अनुरूप नहीं होने के मुख्य कारण निम्नलिखित हो सकते हैं -

- बच्चें का नियमित विद्यालय नहीं आना।
- विद्यालय में बालकेन्द्रित गतिविधियों का अभाव होना।
- सतत् एवं व्यापक आकलन को शिक्षण में समाहित नहीं करना।
- किसी कक्षा को पार करने से पूर्व उस स्तर की बुनियादी क्षमताओं पर बच्चें के उपलब्धिस्तर को सुनिश्चित नहीं करना।
- विषय की शिक्षण एप्रोच के अनुरूप शिक्षण कार्य को कक्षा कक्ष में संगठित नहीं किया जाना आदि।

किसी भी शिक्षा में कुछ बच्चे ऐसे होते हैं ,जो नियमित विद्यालय आते हैं फिर भी उनका सीखना पर्याप्त नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में इन बच्चें के साथ तीन तरह के कार्य किए जा सकते हैं ,जिनमें एक अवधारणा बनाने का काम, दूसरा अवधारणा की पुख्ता समझ हेतु अभ्यास का काम एवं तीसरा सीखे हुए के आकलन का काम। इन तीन चरणों पर जब पर्याप्त काम करवा दिया जाता है तो बच्चें की समझ की स्थितियाँ बेहतर बन जाती है।

बच्चें को अपने कक्षा स्तर पर लाने के लिए अतिरिक्त संबलन की त्रिस्तरीय योजना:

प्रथम स्तर : इस योजना के अंतर्गत प्रथम स्तर पर बच्चें के साथ काम की योजना बनाई जाती है, जिसके तहत सीखने की उपयुक्तगतिविधियों का निर्धारण किया जाता है। ये गतिविधियाँ बालकेन्द्रित होती हैं तथा इस विचार पर आधारित होती हैं कि इन गतिविधियों में सभी बच्चे भागीदारी निभाते हैं तथा सभी एक दूसरेकी मदद से सीखते-सिखाते हैं।

द्वितीय स्तर : बच्चें के लिए पर्याप्त अभ्यास हेतु कार्य पत्रकों की एक शृंखलातैयार की जाती है, जिससे बच्चे को अभ्यास करने का पूरा मौका मिलता है तथा बच्चे अवधारणाओं की पुख्ता समझ बना पाते हैं।ये अभ्यास विविध

प्रकार के हो सकते हैं।यही चुनिन्दा अभ्यास हैं जो बच्चे को सीखने में आ रही बाधा को दू करके उनके शैक्षिक विकास में उपयोगी होते हैं।

तृतीय स्तर : यह स्तर सीखे हु आकलन के लिए होता है ताकि इसके द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चें को जो सिखाया गया था, वह सीख लिया गया है।बच्चें की समझ के व्यावहारिक अनुभवों का विश्लेषण करके समझें तो हम पाएँगे कि बच्चे सामान्यतः कुछ आधारभूत बुनियादी अवधारणाओं व कौशलों में अपनी कक्षा के स्तर से नीचे होते हैं।उदाहरण के लिए बच्चे कक्षा 4 में परिमाप व क्षेत्रफल पर आधारित काम मानक प्रचलित आकलन विधि से नहीं कर पाते हैं तो इसका मुख्य कारण बुनियादी अवधारणाओं, संख्या एवं संक्रियाओं पर समझ का नहीं होना है।

इसी तरह उच्च प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे जब व्यावसायिक गणित (प्रतिशत, लाभ-हानि, अनुपात व सरल ब्याज आदि) पर आधारित समस्याएँ मानक प्रचलित आकलन विधि से हल नहीं कर पाते हैं तो इसका कारण भी बुनियादी अवधारणाओं एवं कौशलों में समझ का नहीं होना है।ऐसे अनुभवों को आधार मानकर यह निर्धारित किया गया है कि बच्चें को अपनी स्वाभाविक कक्षा के स्तर पर लाने के लिए यदि उन्हें इन बुनियादी अवधारणाओं एवं कौशलों पर काम करवाया जाए तो बच्चे जल्दी अपनी कक्षा के स्तर पर आ सकेंगे। यदि उन्हें पूर्व की कक्षाओं के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर काम करवाया जाएगा तो बच्चें को अपनी कक्षा के स्तर पर आने में अधिक समय लगेगा। जबकि उसमें से काफी चीजों को बच्चे पहले से ही सीख चुका होता है।इसलिए बुनियादी अवधारणाओं एवं कौशलों को ही अधिगम अन्तरालों को भरने का आधार बनाना उपयुक्त रहेगा। प्राथमिक स्तर पर बच्चें के साथ उक्त तीनों ही स्तर पर काम करना अनिवार्य है। विश्वास है कि यह 'विशेष अधिगम समर्थन पैकेज' शिक्षकों को शैक्षिक स्तर से पीछे के बच्चें के साथ काम करने में मददगार होगा और बच्चें के शैक्षिक स्तरों में इज़ाफ़ा कर सकेगा।

SIQE सलाहकार
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय
राजस्थान, बीकानेर,
मो. 9950386416

महिला दिवस विशेष

स्त्री विमर्श : विचार एवं व्यवहार

❒ डॉ. विष्णुदत्त जोशी

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में साहित्य जगत में एक नया अध्यायजुड़ा है, वह है - स्त्री विमर्श। यह संकल्पना अपनी उत्पत्ति से लेकर आज तक निरंतर चर्चा और शोध का विषय रही है।स्त्री विमर्श एक नितांत नवीन अवधारणा भी नहीं है किन्तु यह सत्य है कि पूर्व में इस विषय पर पुरुषों ने ही अधिक कलम चलाई। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लेखिकाओं ने अपने मुद्दों पर जागरूक होकर लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने पुरजोर माँग उठाई कि वे भी मनुष्य हैं तथा उन्हें भी समाज में न केवल जीने का वरन् निर्णय लेने का भी समान अधिकार है।पिछले पच्चीस तीस वर्षों में स्त्री की एक स्वतंत्र, जिज्ञासु, आत्मविश्वास से पूर्ण तस्वीर उभर कर आई है। स्त्री विमर्श की यह साहित्यिक लहर पश्चिम से उठी और वहाँ की स्त्रियों ने स्वयं अपने अस्तित्व को सदियों पुरानी दासता से मुक्त करने के लिए मशाल जलाई। इस पश्चिमी स्त्रीवादी साहित्य का मुख्य प्रेरणा-स्रोत बर्जीनिया, वुल्फ, सिमोन द बाउवा, सिल्विया पाथ, केट चोपिन, मेरी वॉल्ट स्टोन क्राफ्ट, बेट्टी, फ्रेडन और मार्गेट एटवुड की रचनाएँ है। इस साहित्य की लौ से शेष विश्व भी अछूता नहीं रहा और सभी देशों-भाषाओं में महिलाओं ने अपने अस्तित्व के लिए आवाज बुलंद करनी प्रारंभ की।

'स्त्रीवाद' अंग्रेजी के 'फेमिनिज़्म' शब्द का हिन्दी अनुवाद है। 'फेमिनिस्ट' शब्द की उत्पत्ति लेटिन शब्द 'फेमिना' से मानी जाती है। 'फेमिना' का अर्थ स्त्री है। 'स्त्री विमर्श' या 'स्त्रीवाद' का अर्थ है - जिसमें स्त्री के गुण विद्यमान हो। इसका प्रयोग सर्वप्रथम 1890 ई. के आसपास लैंगिक समता और स्त्री के अधिकारों के अर्थ में किया गया। एलिस रांसी के मतानुसार इसका सर्वप्रथम प्रयोग एक पुस्तक की आलोचना के संदर्भ में 1895 में हुआथा। सामान्यतः यह शब्द स्त्री मुक्ति आंदोलन से जुड़ाहुआहै। स्त्री विमर्श की प्रपत्तियाँ और सिद्धांत इस प्रकार है -

1. व्यक्ति सत्य ही समष्टि सत्य है।इसलिए 'पर्सनल इज पॉलिटिकल।'
2. समता, स्वतंत्रता और भाईचारा- ये प्रजातांत्रिक मूल्य नये मूल्यांकन की अपेक्षा रखते हैं।
3. सारे आर्ष ग्रन्थ, क्लेसिक्स, रीति-रिवाज, शास्त्रीय और लोककला के स्तंभ, साहित्य, दर्शन, इतिहास, मिथक, अर्थशास्त्र यहाँ तक कि भूगोल आदि की मान्यताएँभी जो स्त्री के शोषण को प्रकृति या पर्यावरण के दोहन के समकक्ष देखती हैं, बहुत कारगर ढंग से नए मूल्यांकन की अपेक्षा रखती हैं।
4. स्त्री-विमर्श पर यह आरोप बार-बार लगाया जाता है कि यह अनुभवमूलक यानी 'अम्पेरिसिस्ट' है प्रपत्तिमूलक यानी 'पेराडाइमबेस्ड' नहीं। इसलिए न इसकी मेथेडोलॉजी तय है न शोध की दिशाएँ। इसका स्पष्ट उत्तर है - प्रपत्तियाँ आकाश से नहीं टपकती, अनुभूतियाँ ही बीन-फटककर प्रपत्तियों के रूप में सजा ली जाती हैं।
5. स्त्री-विमर्श पुरुषों में स्त्री का नजरिया विकसित कर उसे अर्द्ध नारीश्वर की गरिमा देता है।
6. स्त्री-विमर्श यथास्थितिवाद से निपटने की खातिर अकादमिक विमर्श कर्त्ताओं और आंदोलनकारियों के बीच की दूरी को पाटता है।
7. स्त्री विमर्श का सिद्धांत यह मानता है कि गिने-चुने प्रतिनिधि महिला चरित्रों के विकास का हवाला देकर यह जताने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए कि स्त्रियाँ अब हाशिये पर नहीं।
8. स्त्री, समाज का एक ऐसा अंग है जो वर्ग, नस्ल आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहाँ कहीं दमन है-चाहे जिस वर्ग, जिस नस्ल की स्त्री त्रस्त है - वह उसे अपने परचम के नीचे लेता है।
9. स्त्री-विमर्श का टारगेट ग्रुप तीसरी दुनिया

के देशों की वे निम्न मध्यवर्गीयऔर निम्न वर्गीय स्त्रियाँ है जिनकी वोट के संदर्भ में भी निजी राय नहीं होती।

वस्तुतः स्त्री की शारीरिक-मानसिक बनावट पुरुष से भिन्न है। अतः उसके द्वारा सृजित साहित्य को स्त्री के विशिष्ट दृष्टिकोण से पढ़ना चाहिए। स्त्रीवादी समीक्षक साहित्य के स्वीकृत प्रतिमानों को स्वीकार नहीं करते। उनका मानना है कि औरत के लेखन में स्त्रीत्व का गुण रहेगा ही। स्त्री की सर्वोत्तम रचना स्त्री के सर्वोत्तम गुणों से सम्पन्न रहेगी ही। स्त्री की रचनागत भाषा, वाक्य विन्यास, शैली, प्रतीक और उनकी अर्थवत्ताएँ पुरुष रचनाकारों से भिन्न होंगे। अतः स्त्रियों द्वारा रचित कृतियों की पठन-प्रणाली कुछ अलग होगी।

स्त्री-विमर्श की पश्चिमी सैद्धांतिकी से उधार लेकर भारत में स्त्रियों की स्थिति और स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता को उजागर करने की कोशिश में ही भारतीय स्त्रियों की और उनके साथ पुरुषों की भी ऐसी तस्वीर सामने आती है जो पूर्णतया सही प्रतीत नहीं होती। हर देश में स्त्री-संघर्ष का अपना इतिहास है जो अपने लिए एक अलग सैद्धांतिकी की माँग करता है। इसके आधार पर ही वहाँ के स्त्री-विमर्श को समझा जा सकता है और इस बात को स्त्री-विमर्श के अनेक पैरोकारों ने बहुत पहले ही समझ लिया था। भारतीय साहित्य का स्त्री-विमर्श पश्चिम की उपज नहीं वरन् भारतीय मेधा की उत्पत्ति है। इसकी प्रेरणा अल्बेयर कामू, सिमोन द बाउवा, बर्जीनिया वुल्फ आदि चिंतक न होकर प्राचीन भारतीय स्त्रियों का जीवन और चरित्र है।

'सीता और सावित्री' दोनों सहज भारतीय चरित्र हैं जिनसे भारतीय लेखिकाएँ प्रेरणा प्राप्त करती है। सीता के बारे में सबसे बड़ा मिथ्या 'निश्शब्द समर्पण' का है। सीता अपने समय की पहली महिला थी जिसने पति के साथ घर की चौखट लाँघकर दुनियादेखी यानी पुरुष और नारी का सहअस्तित्व भारतीय स्त्री-विमर्श का प्राण है। सीता के सामाजिक सरोकार इतने अच्छे थे कि वन-प्रदेश का एक-एक व्यक्ति, ग्राम-वधूओं से लेकर केवट तक उनसे पूरा ममत्व पाता रहा। रावण की वाटिका जैसी विकट जगह में भी त्रिजटा जैसी सखी पा ली। सीता को मूक आज्ञाकारिता के कठघरे में जड़ने वाले आलोचक यह क्यों भूल जाते हैं कि सीता का सबसे बड़ा सच है लक्ष्मणरेखा लाँघ जाना यानी आपात स्थिति में अपने विवेक के हिसाब से नियमावलियों में परिवर्तन का साहस। निर्णय गलत भी हो जाएँ तो क्या, निर्णय लिए गए, यही बड़ी बात है। दस में से एक निर्णय किसका गलत नहीं होता। अपने हिसाब से उन्होंने ठीक ही निर्णय लिया। किसी को भिक्षा दी, भूखे को भोजन दिया... और यह इस तथाकथित गलत निर्णय का तेज ही था जो बाद में रावण के वध का निमित्त बना।

सावित्री का तेज भी कम विलक्षण नहीं है। यम अपने ठेठ अर्थ में एक परम-पुरुष ही तो था, कायदे से जिसकी छाया भी जीते जी उन पर नहीं पड़नी थी, पर उन्होंने हिम्मत की, नियमावलियाँ ताक पर रखीं, उसके पीछे गई, उसे बहस में हराया और अभीप्सित प्राप्त करके लौटीं। एक अन्य रोचक चरित्र पार्वती का है। उन्होंने सबसे पहली बगावत तो पिता से की, फिर उस पूरी संभ्रान्तवादी (इलीटिस्ट) व्यवस्था से, जो अविकसित जनों को भूत-पिशाचवादी से एकाकार करके देखती है और किसी सामाजिक समारोह में उन्हें बराबरी का दर्जा नहीं देती। पिता के जिस असंगत व्यवहार के प्रतिकार में वे आग में कूदी, उसमें पति ही नहीं, उनके सब गण-दूतों की अवज्ञा शामिल थी। शिव बेचारे तो खुद औढर दानी हैं - 'आशुतोष!' उन्हें और सदय होने का पाठ पढ़ाती पार्वती हमें लोककथाओं में लगातार दीख जाती हैं -और दो.... और दो... इसका भाग्य पलटो, उसका पलटो...।

भारतीय परंपरा की इन तीनों महान नारी चरित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय नारी-विमर्श, उसकी चेतना, निर्णय शक्ति, मेधा, संघर्ष क्षमता किसी भी मानदण्ड के अनुसार कमतर नहीं है। इसके अतिरिक्त एक तथ्य जिसे पाश्चात्य चेता नारीवादी समीक्षकों को भी स्वीकार करना पड़ेगा कि भारतीय स्त्री चेतना का स्रोत और प्रेरणा प्राचीन भारतीय स्त्रियाँ हैं न कि पाश्चात्य 'फेमिनिस्ट आंदोलन।' इस भारतीय स्त्री चेतना में स्त्री-पुरुष अन्योन्याश्रित हैं, उनमें कहीं भी परस्पर विरोध नहीं है। इसलिए जब पारंपरिक भारतीय आदर्श इतने प्रखर हैं तो फिर क्या 'चुप रहने' के आदर्श का यह चक्कर मैकाले की शिक्षा नीति के उस पड़यंत्र की बू नहीं देता कि कुछ ऐसा किया जाए जिससे तेज पनपे ही नहीं। आज किसी भी जगह यदि चार सीताएँ, चार पार्वतियाँ अपनी पूरी प्रतिरोध शक्ति के साथ खड़ी हो तो समाज का नक्शा ही बदल जाएगा; पर मूल की तो यहाँ बात ही नहीं की जाती। सीता, सावित्री और पार्वती के निष्प्रभ सिनेमाई संस्करण सामने खड़े कर दिए जाते हैं, जिनसे कोई तेज नहीं फूटता।

जब इतनी महान और तेजस्विनी नारी-चरित्रों से प्रेरणा ग्रहण कर विलक्षण गुणों से युक्त स्त्रियाँ अपने ज्ञान और साहस का स्रोत प्रवाहित कर रही थीं, उस समय पश्चिमी सभ्यता में किसी स्त्री चेता आंदोलन के दूर-दूतक कोई चिह्न दृष्टिगत नहीं हो रहे थे। ऋग्वेद में रोमशा लोपामुद्रा, अपाला, घोषावाक्, सूर्या, शाश्वती, ममता, उशिज आदि ऋषिकाओं के नाम मंत्रद्रष्टा के रूप में प्राप्त होते हैं। कई बौद्ध भिक्षुणियों ने थेर गाथाओं का संकलन कर दिया था। कश्मीर से लेकर केरल तक स्त्री मुक्ति का एक संदेश बनकर भक्ति आंदोलन फैल रहा था। भक्ति आंदोलन की पुरोधाओं में प्रमुख हैं। मिथिला की चन्द्रकला; धुर दक्षिण की अण्डाल, अक्क महादेवी; महाराष्ट्र की गोदा, महादम्बा बहिनाबाई और राजस्थान की मीराबाई।

भारतीय और पश्चिमी समाजों में स्त्री सरोकारों के संबंध में पुरुषों की भूमिका भिन्न है - पश्चिम में यह मुहिम स्त्रियों ने शुरू की, जिसे बहुत बाद में कुछ पुरुषों का साथ मिला; जबकि भारत में स्त्री सरोकारों की सारी लड़ाइयाँ एक मुहिम के रूप में नवजागरण काल के पुरुष समाज सुधारकों द्वारा शुरू की गई। राजा राममोहन राय, मृत्युंजय विद्यालंकार, ज्योतिबा फुले, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महादेव रानाडे आदि ने स्त्रियों से जुड़े लगभग हर मुद्दे को उठाया और स्त्रियों को सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया।

20 वीं शताब्दी के सातवें दशक के अंत में भारत में भी साहित्य जगत में इस प्रकार की रचनाओं को स्थान मिलना शुरू हुआ, जिसमें नारी की समस्याओं को पुरुषों की समस्याओं के समतुल्य अथवा उससे महत् स्थान दिया गया। विभिन्न लेखिकाओं जैसे महाश्वेता देवी, उर्मिला पंवार, उषा प्रियवंदा, मन्नू भण्डारी, अमृता

प्रीतम, कृष्णा सोबती, गीतांजलि श्री, मैत्रेयी पुष्पा, मृदु लागर्ग, रमणिका गुप्त, मृदु लासिन्हा, लवलीन आदि ने इस काल में स्त्रियों के विषय में लिखा। इस शृंखला में और भी नाम लिए जा सकते हैं। इन सभी लेखिकाओं ने नारी की समस्या को नारी की ही दृष्टि और कोण से देखने का प्रयास किया और अपने विचारों को खुलकर अभिव्यक्त किया। आज की शिक्षित नारी वास्तव में अपनी जिस अस्मिता को प्राप्त करने का प्रयास कर रही है, साहित्य में उसी अस्मिता की तलाश को विविध संदर्भों में व्यक्त किया गया है। स्त्री विवाह में ही अपनी अस्मिता की इतिश्री मानने को तैयार नहीं है। आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने के बाद नारी स्वावलंबी हो गई है। इसलिए उसे विषम परिस्थितियों में पिता, भाई अथवा किसी अन्य का सहारा लेना नहीं प.डता है। नारीवादी आंदोलन की व्यापकता, विस्तार, विचार और आकार को स्पष्ट रूप से विवेचित, सिद्ध और स्थापित करने वाली कई रचनाएँ इसी बीच आई हैं।

महादेवी वर्मा की 'शृंखला की कि.डयाँ' एक निबंध संग्रह है। 1942 में प्रकाशित यह रचना सही अर्थों में भारतीय स्त्री-विमर्श की प्रस्तावना है। मृणाल पाण्डे ने 'परिधि पर स्त्री' रचना में निम्न वर्गीय कामगार स्त्रियों की समस्याओं को वाणी दी है। 'दु र्ग द्वार पर दस्तक' की रचनाकार कात्यायनी नारी-विमर्श के गंभीर सवालों पर विचार-विमर्श की अपेक्षा रखती है। 'स्त्री का समय' रचना में क्षमा शर्मा दो टूक शैली में महिला संगठनों, सरकारी नीतियों, कानूनी दावपेचों एवं इरादों की पोल खोलकर रख देती है। मृदु लागर्ग ने अपनी रचना 'चुकते नहीं सवाल' में साहित्यिक आईने में नारी के बदलते स्वरूप का अक्स देखने की कोशिश की है और नारीवाद को नई परिभाषा दी है। अनामिका ने अपनी पुस्तक 'स्त्रीत्व का मानचित्र' में स्त्री-विमर्श को एक शास्त्र माना है तथा इस शास्त्र को जीवन के लगभग हर क्षेत्र में विश्लेषित करने का प्रयास किया है। इसी प्रकार 'उपनिवेश में स्त्री' -प्रभा खेतान, 'हम सभ्य औरतें'-मनीषा, 'औरत के लिए औरत'- नासिरा शर्मा, 'नारी प्रश्न'- सरला माहेश्वरी, 'स्वागत है बेटी'- विभा देवसरे आदि हिन्दी स्त्री-विमर्श की पठनीय पुस्तकें हैं। स्त्री-विमर्श के उपन्यासों में उषा प्रियंवदा का 'पचपन खंभे लाल दीवारें' तथा 'रुकोगी नहीं राधिका', मंजुला भगत का 'अनारो', मेहरुन्निसा परवेज का 'आँखों की दहलीज' और 'उसका घर', राजी सेठ का 'तत्सम', कांता भारती का 'रेत की मछली', प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता', चित्रा मुद्गल का 'आवां' और मृदु लागर्ग का 'कठगुलाब' आदि हैं। मृदु लासिन्हा ने भारतीय स्त्री के घर-परिवार व समाज में रचे-बसे स्वरूप का दर्शन अपने उपन्यासों 'ज्यों मेंहदी के रंग', 'घरवास' और 'सीता पुनि बोली' में कराया है।

स्त्री विमर्श की प्रमुख आत्मकथाओं में अमृता प्रीतम की 'रसीदी टिकट', कुसुम अंसल की 'जो कहा नहीं गया', कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं है दिल मेरा', पद्मा सचदेव की 'बूँद और बाव.डी', मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुण्डल बसै' मन्नू भण्डारी की 'एक कहानी यह भी' और प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' है।

इस प्रकार स्त्री-विमर्श का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य स्त्री की विभिन्न भूमिकाओं के बारे में मानव समाज को परिचय देना है, जीवन के उन अंधेरे कोनों पर भी प्रकाश डालना है, जिसकी पी.ड स्त्रियों ने सदियों से झेली है। आवश्यकता है स्त्री अपने मानवीय दृष्टिकोण के मूल तत्वों को समझे और विश्लेषण करे; अपने लेखन से उन तमाम स्त्रियों को शक्ति दे जो संघर्षरत हैं, जो समाज के विकास में सक्रिय हैं, जो समाज की नजरों से दू रकहीं किसी कोने में सुबक रही हैं। स्त्री-विमर्श के भारतीय पैरोकारों को यह समझना-समझाना चाहिए कि 'यूनिवर्सल सिस्टरहु डकै नारे को लेकर स्त्री जीवन एकांगी न बनें वरन् 'यूनिवर्सल ब्रदरहु डकै नारे के साथ दु निया के सभी स्त्री-पुरुष एक मार्ग-सर्वकल्याण के मार्ग के पथिक बनें। तकलीफ़ खतरनाक चीज होती है। इसी तकलीफ़ के कारण भारतीय स्त्री-विमर्श कई बार प्रतिक्रियावादी और पुरुष विरोधी बन जाता है। हम पश्चिमी स्त्री-विमर्श की तरह पुरुष को सदैव कठघरे में नहीं रख सकते।

भारतीय संदर्भों में स्त्री निर्विवाद रूप से मानव सभ्यता का प्राण है। नारी अपनी त्याग, ममता, वात्सल्य, करुणा आदि भावनाओं के द्वारा समस्त संसार में प्रेम की स्निग्धधारा बहाती रहती है। पुरुष सदैव अपने जीवन में नारी की उपस्थिति की कामना करता है। जयशंकर प्रसाद ने कहा भी है -

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में।।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।।

व्याख्याता, राउमावि. बिरमसर,
नोखा, बीकानेर, मो: **9414028368**

निष्पक्ष निर्णायक सरस्वती

जगद्गुरु शंकराचार्य जी अपनी दिग्विजययात्रा के क्रम में नगरी पहुँचे तहाँ उन्हें बौद्ध भिक्षुओं और कर्ममार्ग के अभिमानी पंडितों के सामने अपना वेदान्तमत प्रस्थापित करना प.डा। उनकी असामान्यबुद्धि, विवेचन शैली और तर्क इन सबके कारण वे सभी पंडितों के लिए अजेय बन गए थे। मिथिला नगरी में पंडित मंडन मिश्र के साथ उनका विवाद हुआ। उनके विवाद का न्यायनिर्णय करने के लिए विद्वत्सभा ने पंडित मंडन मिश्र की पत्नी सरस्वती को अध्यक्षनियुक्त किया। ऐसे महान ज्ञान के विषय में न्याय देने के लिए अध्यक्षपद पर उनकी नियुक्ति, उनके दो गुणों को प्रकट करती है। पहला गुण यह कि वेदान्त और कर्म मार्ग जैसे गहन विषयों का पूर्ण ज्ञान रखती थी और दू सरा गुण यह कि न्याय करने में निष्पक्ष, कुशल थी। इसीलिए जनता उनपर विश्वास करती थी। अन्यथा जिस विवाद में स्वयं का पति सहभागी हो उस विवाद का निर्णय करने का दायित्व पत्नी को मिलना संभव नहीं था।

विवाद में मंडन मिश्र पहले हार गए। परंतु सरस्वती ने शंकराचार्य जी को अपने दो कूट प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहा। वे दोनों प्रश्न कामशास्त्र विषयक थे। शंकराचार्य जी ब्रह्मचारी थे। शंकराचार्य जी ने प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कुछ समय मांगा। इस बीच उन्होंने परकाया प्रवेश कर उन विषयों की जानकारी प्राप्त की और सरस्वती के प्रश्नों का सही उत्तर दिया। तब सरस्वती ने मंडनमिश्र के हारने की घोषणा की। इसके पश्चात् मंडन मिश्र ने संन्यासाश्रम स्वीकार किया। इस चरित्र से हमें भारतीय महिलाओं की विद्वत्ता और न्यायप्रियता का परिचय प्राप्त होता है।

साभार : **'प्रातः स्मरणीय महिलाएँ'** पुस्तक से

पर्व-विशेष

होली रे होली तेरे रंग कितने

❒ आकांक्षा यादव

दुनिया विभिन्न रंगों से भरी पड़ी है। रंगों के बिना कोई भी सौन्दर्य अधूरा लगता है। तभी तो हमारी परंपरा में रंगों का त्योहार समाहित किया गया है। संभवतः मानव ने जब से रंगों को पहचानना आरंभ किया, उसके उत्सवी रूप को भी तभी रंग दिया। इतिहास में झाँककर देखें तो प्राचीन भारत में आर्यों के समय भी होली मनायी जाती थी। विंध्यक्षेत्र के रामगढ़स्थान से प्राप्त ईसा से 300 वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी होली मनाए जाने का उल्लेख मिलता है। प्राचीन ग्रंथों जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गार्ह्य-सूत्र में पूर्वी भारत में होली मनाने का उल्लेख है तो नारद पुराण और भविष्य पुराण में भी होली का वर्णन मिलता है। यहाँ तक कि भारत की यात्रा पर आए सुप्रसिद्ध पर्यटक अलबरूनी ने अपने ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होली मनाने का उल्लेख किया है।

इतिहास के विभिन्न काल खण्डों में भिन्न-भिन्न शासकों ने सत्ता संभाली, लेकिन होली का रंग यूँ ही बना रहा। मुगल काल में अकबर का अपनी पत्नी जोधाबाई के साथ तथा जहाँगीर का नूरजहाँ के साथ होली खेलने का वर्णन मिलता है। शाहजहाँ के समय होली को ईद-ए-गुलाबी या आब-ए-पाशी रंगों की बौछार कहा जाता था। इसमें दोनों धर्मों के लोग शामिल होते थे। 16वीं शताब्दी के एक चित्र में विजयनगर की राजधानी हम्पी में राजकुमारों और राजकुमारियों को रंग एवं पिचकारी के साथ होली खेलते दिखाया गया है। सूफी संत निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो को भी होली का त्योहार बहुत पसंद था। वास्तव में देखें तो सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो से लेकर बहादुर शाह ज़फ़र और नजीर अकबराबादी की रचनाएँ होली की खिलंदड़ी, उसके अध्यात्म, उसकी सूफियाना मस्ती और उसके विहंगम सामाजिक फैलाव के बारे में बताती हैं। होली हमारे सामाजिक ताने बाने को सहेजता है। होली के इन रंगों में सिर्फ इंद्रधनुषी रंग ही नहीं देश का सांस्कृतिक वैविध्य भी घुला-मिला है।

होली वसंत की विदाई और फाल्गुन के आगमन का सूचक है। फाल्गुन आते ही फाल्गुनी हवा मौसम के बदलने का एहसास करा देती है। कंपकपाती ठंड से राहत लेकर आने वाला फाल्गुन मास लोगों के बीच एक नए सुख का एहसास कराता है। सरसों के पीले फूल, गेहूँ की बालियाँ, पलाश की लालिमा, टेसू, चैती गुलाब, चंपा-चमेली, कचनार की कली, भांग, बूटी और इन सबके बीच खेतों में गूँजते किसानों के गीत सब मिलकर फगुनाहट में होली को रोचक और रंगीला वितान प्रदान करते हैं। उम्र की सीमाओं से परे जाति, धर्म और संप्रदाय के बंधनों को खोलता यह त्योहार समाज में संस्कृतियों और संस्कारों की मिलीजुली रंगतें भी पेश करता है। विविधता हमारे देश की पहिचान है। जैसे होली के भिन्न-भिन्न रंग हैं, वैसे ही देश के विभिन्न भागों में इसे मनाने का अंदाज भी अलग-अलग है। तभी तो रघुवीर सहाय इसे 'एक अद्वितीय सामाजिक मौसम' की उपमा देते हैं।

जितना बड़ा देश, उतने ही होली के सांस्कृतिक रंग। मनाने के तरीके अलग हो सकते हैं, पर सद्भाव वही है। ब्रज की होली जग प्रसिद्ध है। यहाँ बरसाने और नन्दगाँव में लट्ठमार होली मनाई जाती है, जिसमें महिलाएँ पुरुषों का लाठियों से स्वागत करती हैं। इसी प्रकार मालवा में होली के दिन लोग एक-दूसरे पर अंगारे फेंकते हैं। वे मानते हैं कि इससे होलिका राक्षसी का अन्त हो जाता है। राजस्थान के बाड़मेर में पत्थरमार होली खेली जाती है, तो अजमेर में कोड़ा अथवा सामंतमार होली का रिवाज है। पश्चिम बंगाल में होली ढोल जातरा या ढोल पूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें राधा-कृष्ण पालकी घुमाई जाती है। राजस्थान, मध्यप्रदेश व गुजरात के कुछ आदिवासी इलाकों में होली खेलकर जीवन साथी चुनने की भी परंपरा है। बिहार और पूर्वांचल में होलिका दहन के दिन घर के सदस्यों को सरसों का उबटन लगाया जाता है, वहीं बिहार में होली के दिन विशेष पकवान मालपुआ और उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में गुंझिया बनाने का चलन है। सिखों के दशम गुरु गोविन्दसिंह जी ने होली को 'होला महल्ला' कहा। पंजाब एवं हरियाणा में इसे होला महल्ला के रूप में मनाते हैं, जिसमें लोग घोड़ेपर सवार निहंग, हाथ में निशान साहब उठाए तलवारों के करतब दिखा कर साहस का प्रदर्शन करते हैं। सुदूर पूर्वोत्तर भारत के मणिपुर में होली को याओसांग और धुलंडी वाले दिन को पिचकारी कहा जाता है। याओसांग वह छोटी सी झोपड़ी होती है, जिसमें चैतन्यमहाप्रभु की प्रतिमा स्थापित की जाती है। पिचकारी के दिन रंग गुलाल अबीर से वातावरण रंगीन हो उठता है और लोग जमकर खुशियाँ मनाते हैं। सब मानो कहीं-न-कहीं अपनी वैविध्यताके बीच उत्सवी परम्पराओं को एक साथ सहेजते हैं।

सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि दुनियाभर में रंगों का त्योंहार किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, उत्तरी अमेरिका, ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय हर्ष और उल्लास के साथ होली मनाते हैं। नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और मॉरीशस में भारतीय परम्परा के अनुरूप ही होली मनाई जाती है। पोलैंड में आर्सिना पर्व में लोग एक-दूसरे पर रंग और गुलाल मलते हैं। ये रंग फूलों से बने होने के कारण त्वचा को नुकसान नहीं पहुँचाते। हालैंड का कार्निवाल होली की मस्ती से भरपूर है तो बेल्जियम की होली भारत जैसी होती है। थाईलैंड में भी सौंगक्रानन नाम के पर्व में वृद्धजन इत्र मिश्रित जल डालकर महिलाओं, बच्चों और युवाओं को आशीर्वाद देते हैं। इसी प्रकार चेक और स्लोवाकिया में बोलिया कोनेन से त्योहार पर युवक-युवतियाँ एक दूसरे पर पानी एवं इत्र डालते हैं। अमेरिका में मेडफो नामक पर्व में लोग गोबर तथा कीचड़ से गोले बनाकर एक-दूसरे पर फेंकते हैं तो स्पेन में लोग एक-दूसरे को टमाटर मारकर होली खेलते हैं। फ्रांस में यह पर्व 19 मार्च को डिबोडिबी के नाम से मनाया जाता है। अफ्रीका में ओमेना वोंगा के नाम से होली जैसा पर्व मनाया जाता है। रोम में इसे सेंटरनेविया कहते हैं तो यूनान में मेपोल। ग्रीस का लव ऐपल होली भी प्रसिद्ध है। जापान में टेमोंजी ओकुरिबी नामक पर्व पर आग जलाई जाती है। जर्मनी में

ईस्टर के दिन घास का पुतला जलाया जाता है और लोग एक-दू सरे पर रंग डालते हैं।हंगरी का इस्टर होली के अनुरूप ही है। मिश्र में रात में जंगल में आग जलाकर यह पर्व मनाया जाता है जिसमें लोग अपने पूर्वजों को याद करते हैं। इटली में रेडिका त्योहार में चौराहों पर लकड़ियों के ढेर जलाए जाते हैं और एक दू सरे को गुलाल लगाते हैं।

कवियों ने होली को अपने शब्दों में खूब भिगोया है। साहित्य के तमाम पन्ने होली के गीतों से भरे पड़े हैं। रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी रचना ऋतुरंगशाला में एक जगह इसे आध्यात्मिक स्वरूप देते हुए लिखा भी है कि, 'यह दोल (फाल्गुनी पूर्णिमा) पाने और न पाने की एक अजीब सी विवशता के बीच झुलाता है। एक ओर मिलनोत्सव है तो दू सरी ओर विरह और बिलगाव। इन दोनों को छू-पाकर ही तो विश्व का हृदय दोल (झूला) झूल रहा है।'

भगवान कृष्ण को होली का त्योहार बहुत प्रिय था। गोपियों संग रासलीला के दौरान होली के रंग उन्होंने खूब उड़ेले। कृष्ण भक्त मीराबाई भी अपने आराध्य को होली पर्व पर याद करती हैं -

फागुन के दिन चार होली खेल मना रे,
बिन करताल पखावज बाजै
अनहद की झनकार रे।
बिन सुर राग, छतीसू गावैं
रोम रोम रणकार रे,
सील संतोष की केसर घोली
प्रेम प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर
बरसत रंग अपार रे,
घटके सब पट खोल दिये हैं
लोकलाज सब डार रे।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
चरण कमल बलिहार रे।

होली के अल्हड़पन और मस्ती को नजीर अकबराबादी ने बखूबी अभिव्यक्त किया है।

फाल्गुन में प्रकृति अपने पूरे शबाब पर होती है। होली के अल्हड़पन और मस्ती को प्रकट करना शब्दातीत प्रतीत होता है।

टाइप 5 निदेशक बंगला, पोस्टल ऑफिसर्स कॉलोनी, जेडीए सर्किल के निकट,
जोधपुर, राजस्थान-342001
मो. 9413666599

महिला दिवस विशेष

राजस्थान में नारी शक्ति का परचम

❒ रामचन्द्र स्वामी

सृष्टि रचयिता आदि शक्ति की प्रतिरूप नारी स्वभाव से ही सृजनशील रही है। नारी की यह सृजनशीलता जीवन के हर पहलू में परिलक्षित होती है। घर को सजाने-संवारने की बात हो, बच्चों को संस्कारवान बनाने और जीवन मूल्यों तथा परम्पराओं को सहेजने की बात हो अथवा गृहस्थी के दायित्वों के निर्वहन के साथ विभिन्न ललित-कलाओं में अपनी अभिव्यक्ति की बात या जन-जागृति का प्रचार-प्रसार या फिर शासन-प्रशासन में अपनी भागीदारी, वह सदैव अपनी सृजन-सामर्थ्य का परिचय देती रही है। नारी तो वह शक्ति है जो किसी बात को ठान ले तो संसार की कोई भी शक्ति उसे रोक नहीं सकती। इस सृष्टि में व्यक्तित्व, संस्कार व चेतना का पर्याय ही नारी है। कौनसी ऐसी ऊँचाई है जहाँ नारी चढ़ नहीं सकती, कौनसा स्थान ऐसा है जहाँ नारी पहुँच नहीं सकती।

इन्हीं बातों की सार्थकता को सिद्ध करते हुए राजस्थान की महिलाओं ने भी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है: -

(1) नृत्याभिनय का क्षेत्र – इस क्षेत्र में राजस्थान की महिलाओं ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहिचान कायम की है। इनमें इला अरुण, मांगीबाई, प्ररेणा श्रीमाली, गुलाबो, मंजरी किरण महाजनी, मनीषा गुलयानी, रेखा ठाकुर, शशि सांखला, डॉ. अल्का राव, किरण राठौड़, अनुराग वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

राजस्थान की बेटी गुलाबो तो एक ऐसी लोक नृत्यांगना है जिसने अपने विलक्षण नृत्य से न केवल कालबेलिया नृत्य को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाया बल्कि पद्मश्री अलंकार प्राप्त कर राजस्थान का नाम रोशन किया। कथक नृत्यांगना शशि सांखला के कथक नृत्य ने राजस्थानी लोक शैली मांड गायकी के अभिनव को नए आयाम प्रदान किए।

प्ररेणा श्रीमाली कथक नृत्यांगना ने कबीर के दर्शन व नवग्रहों जैसे विषयों को भी नृत्य में रूपायित किया।

राष्ट्रीय स्तर पर नयी पहिचान बनाने वाली जयपुर की इला अरुण प्रसिद्ध अभिनेत्री, गायिका एवं रंगकर्मी हैं। किरण राठौड़ ने भी अपने अभिनय सामर्थ्य से एक ही नाटक में स्त्री व पुरुष चरित्र का निर्वाह कर नाट्य विद्या में छिपी असीम संभावनाओं को उजागर किया।

प्रसिद्ध कथक मंजरी किरण महाजनी, अनुराग वर्मा तथा मनीषा गुलयानी ने संगीत के श्रव्य व दृश्य दोनों पक्षों में कल्पनाशीलता, परिष्कृत अंग संचालन और सशक्त भावाभिव्यक्ति को शामिल कर लोक संगीत में अपना परचम लहराया।

(2) चित्रकला का क्षेत्र – राजस्थान की दीपिका हाजरा के चित्रों में न केवल प्रकृति के सरलस्वरूप और राजस्थानी लोक संस्कृति के परिवेशमूलक दृश्यांकन के दर्शन होते हैं। अपितु शांतरस की चितेरी कला में निवर्चनीय शांति की अनुभूति भी होती है। किरण मुर्डिया के चित्रों में प्रकृति के विराट रूप का अमूर्तचित्रण परिलक्षित होता है, वहीं अर्चना जोशी की चित्रकृतियों में रंग और रेखाओं की प्रयोगधर्मी छटा देखने को मिलती हैं, मंजू मिश्रा ने लोक अभिप्रायों के समावेश से कला को नए आयाम दिए और कागज लुगदी की अनूठी शिल्प गढ़ी वहीं मीनाक्षी भारती और मीना बया के चित्रों ने प्रकृति के साथ मानवीय रिश्तों को नया अर्थ भी प्रदान किया। प्रकृति सौन्दर्यकी अनन्य उपासक ममता चतुर्वेदी ने प्रकृति की अनुभूत छवियों को अपने चित्रों में रूपायित किया वहीं ममता रोकना ने अनुभव की रेखाओं में अंतस का सौन्दर्य निरूपित किया।

किरण सोनी गुप्त के चित्रों में परिवेशगत संवेदनाओं की अनुभूति होती है। मीनू श्रीवास्तव ने काले रंग के साथ प्रकृति के असीम सौन्दर्यको आत्मसात करते हुए स्थापना कला व सिरेमिक पॉटरी में प्रकृति चित्र को निरूपित किया। जहाँ संगीता जुनेजा ने प्रकृति में नारी का खुशनुमा परिवेश का समावेश कर प्रकृति व नारी के अन्तः

सम्बन्धों को निरूपित किया। वहीं सुरजीत कौर चोयल ने नारी की पी.डा को अपने चित्रों में अभिव्यक्त किया।

(3) गायन वादन का क्षेत्र– इस क्षेत्र में भी राजस्थान की स्त्री शक्ति ने अपनी कीर्ति पताका फहराई है। मांड कोकिला अल्लाह जिलाई बाई के माधुर्य स्वर ने मांड को जिस शिखर पर पहुचाँया वह उनके कंठ सामर्थ्य का ही प्रतीक है। जोधपुर की गवरी देवी भी मांड की महिमा को मंडित करने वाली अग्रणी गायिका रहीं, वहीं मेवा.ड की माटी में जन्मी मांगीबाई ने भी खटके और मुर्कियों का प्रयोग कर मौलिक शैली में मांड को अपनाया। राजस्थान की सीमा मिश्रा, बन्नूबेगम, सरस्वती देवी आदि ने गायन के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहिचान बनाई। जयपुर की रंजना चौधरी ने ढूंढा.डी लोक गीतों को व सुप्रिया ने राजस्थानी लोक गीतों को अपने सुरीले स्वरों में सजाया।

(4) हस्त कौशल का क्षेत्र– जयपुर की तुलसी काला ने कुंदन ज.डाई में अपने हस्तकौशल का कमाल दिखाया वहीं कोटा की जैनब को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत होने वाली पहली सिद्धहस्त शिल्पी का गौरव प्राप्त है। हाल ही में इन्द्रा नागर को भी स्क्रेच पेंटिग में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। जोधपुर की कमरून्निशा ने जूतियों पर कशीदे का कमाल, तो समता शर्मा ने मुक्त्वत कला में महारत हासिल कर उभरे हुए स्वर्ण चित्रांकन का प्रयोग किया। जयपुर की नीरू छाब.डा ने चावल पर चित्रांकन करके तथा बा.डमेर की रमादेवी ने काँच कशीदे से अपनी कल्पनाओं को साकार किया।

जानी-मानी मूर्तिकार सुमन गौ.ड अपने कर कमलों से कठोर पाषाण को भी ममतामयी रूप प्रदान कर देती है।

(5) राजनैतिक क्षेत्र– जहाँ राजस्थान का कला फलक स्त्री शक्ति की प्रतिभा का परचम लहरा रहा है, वहीं राजनैतिक क्षेत्र में भी मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे के साथ-साथ वर्तमान में 32 जिला परिषदों में से 18 जिला प्रमुख के पद पर महिलाओं ने बाजी मारी। इतिहास उठाकर देखें तो भारत में महिलाओं का राजनैतिक क्षेत्र में राजस्थान का प्रथम स्थान है।

संतोष अहलावत, कमला बेनीवाल, मृदु रेखा चौधरी, पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी चु.डावत, जयपुर राजमाता गायत्री देवी, अतिना सिंह गुर्जर, बीना काक, जोधपुर की महारानी नरेन्द्रा कंवर, मदन कौर, ज्योति खंडेलवाल, चन्द्रेश कुमारी, दीया कुमारी, महेन्द्रा कुमारी, बीकानेर की युवा विधान सभा सदस्य सुश्री सिद्धि कुमारी, सुशीला लक्ष्मण बंगारू, किरण महेश्वरी, जसवंत कौर, उषा मीना, अमृता मेघवाल, ज्योति मिर्धा, ज्ञान सुधा मिश्रा, छवि रजावत, प्रभाराय, निर्मला कुमारी शेखावत, शारदा भार्गव, महारानी दिव्या सिंह, सुमित्रा सिंह, इन्दु बालासुखाडिया, तारा भण्डारी, प्रभा ठाकुर, सूर्यकान्ता व्यास, गिरिजा व्यास, यशोदा देवी आदि अनेक महिलाओं ने राजनीति के क्षेत्र में केवल राजस्थान में ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपने ज्ञान कौशल का परिचय दिया।

किसी भी समाज का सशक्तीकरण तभी संभव है जब उस समाज की महिलाएँ सशक्त हो व उन्हें घर परिवार के निर्णय लेने का अधिकार हो। केन्द्र व राज्य सरकार की इसी सोच के साथ राजस्थान में नारी शिक्षा में बदलाव आया है और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा मिला है। कभी घर की चारदीवारी में कैद रहने वाली महिलाएँ अब हर क्षेत्र में सफलता के गीत गुनगुना रही हैं। कई क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें पुरुषों का वर्चस्व था, लेकिन वर्तमान में महिलाओं ने अपनी मेहनत के दम पर सफलता का परचम लहराया है। आज महिलाएँ राजनीति के साथ-साथ खेल, रोडवेज में परिचालक, बिजली निगम में तकनीकी कर्मचारी, फायरकर्मी सहित कृषि क्षेत्र में भी अपनी भूमिकाओं को बखूबी निभा रहीं हैं। जहाँ खचाखच यात्रियों से भरी बस में बिना परेशानी टिकट काटना, बुकिंग विंडो पर खडे होकर सवारियों को बिठाना आदि कार्य अब राजस्थान में एक तिहाई (520) महिला परिचालक ये कार्य कर रही हैं। वहीं कई महिलाएँ रोडवेज वर्कशॉप में पेचकश और प्लास लेकर इलेक्ट्रिशियन कार्य को बखूबी अन्जाम दे रही हैं।

जहाँ कुछ महिलाएँ वन विभाग में वनरक्षक के पद पर कार्यरत हैं वहीं आबकारी निरीक्षक पद पर अपनी डयूटी निभा रही हैं, तो कुछ बोर्डर पर देश की रक्षा कर रही हैं, कुछ महिलाएँ फायरमैन के रूप में तैनात है। वहीं महिलाएँ हाइटेक फार्मिंग से खेतों की सूरत बदलने में लगी हुई हैं। खेल की दुनियाँ में राजगढ की कृष्णा पूनिया डिस्कस थ्रो में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकी हैं तो कूदन गाँव की रीतू ने भारोत्तोलन में स्वर्ण पदक जीतकर राजस्थान का नाम रोशन किया। ऐसे ही राजस्थान की अनेक महिलाएँ वर्तमान में उच्च राजकीय सेवा व प्रशासनिक पदों पर कार्य कर रहीं हैं।

वर्तमान में केन्द्र व राज्य सरकार ने महिला सशक्तीकरण की विभिन्न योजनाओं को लागू व उनको जन-जन तक पहुँचाने का प्रचार प्रसार कर तथा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देकर नारी शक्ति का उत्थान किया है।

जहाँ राजस्थान.....वहाँ नारी महान।

अध्यापक
रा.उ.मा.वि. नत्थूसर गेट, बीकानेर
मो. 9414510329

घोषणा–पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार-पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1.	प्रकाशन संस्थान	: निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: बी.एल. स्वर्णकार
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4.	प्रकाशक	: बी.एल. स्वर्णकार
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5.	प्रधान सम्पादक	: बी.एल. स्वर्णकार
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, बी.एल. स्वर्णकार घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

रपट

अन्तर्राज्यीय शैक्षिक भ्रमण

(राजस्थान, चण्डीगढ़, हरियाणा, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश)

❒ नेहा

राजस्थान सरकार द्वारा शिक्षा विभाग की छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने की कल्याणकारी योजनाओं में शामिल अन्तर्राज्यीय शैक्षिक भ्रमण के तहत गठित दल गत 26 दिसम्बर 2016 से 4 जनवरी 2017 के मध्य अपने गन्तव्यस्थानों पर पहुँच पुन: लौट आया। इस वर्ष उक्त भ्रमण की जिम्मेदारी कार्यालय उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा, अजमेर मण्डल, अजमेर को दी गई थी। भ्रमण हेतु जारी विभागीय दिशा निर्देशों के अनुरूप राजस्थान के प्रत्येक जिले से बोर्ड परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त 2-2 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया। भ्रमण का उद्देश्य राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थयों को उन साँस्कृतिक, शैक्षिक व ऐतिहासिक धरोहरों का दर्शन करवाना था जो उन्हें उनके अध्ययन-अध्यापनको रुचिकर बनाने में लाभ दिला सके। यह भ्रमण विद्यार्थियों को भारत की साँस्कृतिक धरोहरों का प्रत्यक्ष ज्ञान देने में सहायक सिद्ध होता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उपनिदेशक कार्यालय अजमेर द्वारा पाँच राज्यों का शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम निश्चित किया गया। उक्त राज्यों में राजस्थान, केन्द्रशासित प्रदेश चण्डीगढ़,हरियाणा, उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश शामिल थे। जहाँ एक तरफ राजस्थान के ऐतिहासिक धरोहरों का भ्रमण शामिल था वहीं दूसरी ओर चण्डीगढ़ जैसे आधुनिकतम शहर से छात्र-छात्राओं को रूबरू करवाया गया। उक्त भ्रमण हेतु श्री अमित शर्मा शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी, कार्यालय उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा अजमेर तथा श्री भागचन्द मण्डावरिया प्रधानाचार्य राउमावि. सोमलपुर को नोडल अधिकारी बनाकर उनके निर्देशन में भ्रमण दल को उपनिदेशक श्री जीवराज जाट द्वारा दिनांक 26.12.2016 को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। दल अजमेर, आमेर, जयपुर होते हुए राजस्थान के शेखावटी अंचल में स्थित धार्मिक स्थानों पर पहुँचा। दल के सालासर धाम पहुँचने पर सालासर मन्दिर ट्रस्ट द्वारा समस्त विद्यार्थियों व विभागीय अधिकारियों का स्वागत किया गया व ट्रस्ट द्वारा सरकार की उक्त प्रोत्साहन देने वाली योजना के प्रति आभार प्रकट किया गया। यहाँ से दल चण्डीगढ़ जैसे आधुनिकतम केन्द्रशासित प्रदेश में पहुँचा। उक्त नगर की नगर नियोजन वास्तुकला से विद्यार्थियों का परिचय करवाया गया। उक्त शहर में साइन्स म्यूजियम व रॉक गार्डन जैसे स्थानों पर विद्यार्थियों को शिक्षण हेतु सहायक विधियों का प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त किया। स्वच्छ भारत अभियान के प्रत्यक्ष सफल उदाहरण से विद्यार्थियों का परिचय चण्डीगढ़ जैसे आधुनिक नगर में हुआ। इसके पश्चात हरियाणा के महाभारत कालीन ऐतिहासिक व धार्मिक नगर कुरुक्षेत्र में विद्यार्थियों को प्राचीन नगर की अनुभूति हुई। उक्त नगर भ्रमण के पश्चात् नए अंग्रेजी कैलेन्डर वर्ष के आगमन पर विद्यार्थियों ने उत्तराखण्डकी राजधानी देहरादून का भ्रमण किया तथा यहाँ से पहाड़ोंकी रानी हिल स्टेशन मंसूरी की ओर प्रस्थान किया जहाँ इन्होंने पहाड़ीसंस्कृति के साथ- साथ प्राकृतिक सौन्दर्यका अनुभव प्राप्त किया। उत्तराखण्डकी धार्मिक राजधानी हरिद्वार व ऋषिकेश में विद्यार्थियों ने शहर के धार्मिक पौराणिक व ऐतिहासिक महत्व को जाना। यहाँ शान्तिकुंज में योग व साधना के महत्त्व का ज्ञान प्राप्त किया गया। यहीं गायत्री परिवार की ओर से विद्यार्थियों का स्वागत कर उन्हें शान्तिकुंज का भ्रमण करवाया गया। यहाँ से दल ने उत्तर प्रदेश के ब्रजभूमि की ओर प्रस्थान किया जहाँ गोकुल, मथुरा व वृन्दावन जैसे धार्मिक व ऐतिहासिक नगरों के महत्व को जाना। तत्पश्चात उत्तरप्रदेश के मुगल कालीन ऐतिहासिक शहर आगरा का भ्रमण किया। जहाँ लाल किला व ताजमहल जैसी ऐतिहासिक धरोहरों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हुआ।

उक्त भ्रमण राजस्थान के शैक्षिक भ्रमणों में सफलतम भ्रमण साबित हुआ। 5 राज्यों और उनके लगभग 20 नगरों का शैक्षिक व साहसिक भ्रमण विभाग की नीतियों के प्रति सकारात्मक रुख स्पष्ट करता है। दिनांक 4 जनवरी 2017 को दल के लौटने पर उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा अजमेर मण्डल श्री जीवराज जाट ने स्वागत एवं दल को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''सरकार की नीतियों का अधिकतम लाभ सभी विद्यार्थियों को पहुँचे ऐसा प्रयास हमें आगे भी करते रहना चाहिए।''

क्र.सं.	जिला/राज्य का नाम	स्थान
1	राजस्थान	अजमेर, आमेर, जयपुर (बिडला मन्दिर,मोती डूंगरी)
2	सीकर (राजस्थान)	खाटू श्यामजी मन्दिर,जीण माता मन्दिर
3	चूरू (राजस्थान)	सालासर हनुमान जी धाम
4	झुन्झुनूं(राजस्थान)	सती माता मन्दिर
5	चण्डीगढ	किसान भवन, साइन्सम्यूजियम, रॉक गार्डन, सुकना झील
6	हरियाणा	पिन्जौरगार्डन
7	कुरुक्षेत्र(हरियाणा)	बह्म सरोवर, गीता ज्ञान मन्दिर
8	देहरादून(उत्तराखण्ड)	सहस्र धारा, शिव मन्दिर,डीयर पार्क
9	मंसूरी (उत्तराखण्ड)	मंसूरी झील, मालरोड, कैम्पटीफाल
10	ऋिषिकेश (उत्तराखण्ड)	ऋषिकेश
11	हरिद्वार(उत्तराखण्ड)	शान्तिकुंज,हर की पेड़ी,योग साधना शिविर, मन्सादेवी मन्दिर,भारत माता मंदिर, गंगा आरती एवं अन्यधार्मिक स्थल
12	उत्तारप्रदेश	गोकुल, रेवती रमण मन्दिर,नन्दबाबामन्दिर,यमुना दर्शन
13	उत्तारप्रदेश	मथुरा (श्री कृष्ण जन्मभूमि)
14	उत्तारप्रदेश	वृन्दावन,प्रेम मन्दिर,बांके बिहारी मन्दिर,इस्का मन्दिर,नन्दीवन
15	उत्तारप्रदेश	(आगरा) ताजमहल, लाल किला

व.अ., राबाउमावि. इस्लामपुर, झुन्झुनूं (राज.) **मो: 9414993341**

रपट

44 वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी
खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता-2016

❒ महेन्द्र चौहान

44 वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता दिनांक 27.12.2016 से 31.12.2016 तक राजस्थान के बाड़मेर जिले के बालोतरा में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुई। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि बालोतरा के विधायक श्री कैलाश चौधरी थे तथा अध्यक्षता अतिरिक्त जिला कलक्टर श्री ओ.पी. मीणा ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री कैलाश चौधरी ने अपने उद्बोधन में राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक कार्मिक का ध्यान रखते हुए स्वस्थ भारत एवं विश्वगुरु की कल्पना को साकार करने में राज्य सरकार द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। साथ ही नए वर्ष की अग्रिम शुभकामनाएँ देते हुए राज्य सरकार की परियोजनाओं की क्रियान्विति में कार्मिकों की मुख्य भूमिका तथा मंत्रालयिक कर्मचारियों को राज्य सरकार की 'रीढ़ की हड्डी' बताया। राज्य सरकार की ओर से निर्धारित समयावधि में शिक्षा विभाग के शिक्षकों और कार्मिकों की विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक कर कार्मिकों के पदोन्नति आदेश जारी कर विभाग का गौरव बढ़ाने हेतु बधाई देते हुए राज्य सरकार की समस्त नीतियों एवं कार्यक्रमों को इसी प्रकार निर्धारित समयावधि में सम्पन्न करवाने में सहयोग की अपेक्षा की। समस्त संभागी खिलाड़ियों का बालोतरा की धरती पर बालोतरा की जनता की ओर से स्वागत करते हुए शिक्षा विभाग का आभार भी व्यक्त किया कि उन्होंने बालोतरा को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता करवाने का दायित्व सौंपा।

उद्घाटन अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अतिरिक्त जिला कलक्टर श्री ओ.पी. मीणा ने बताया कि विभाग में शिक्षा के साथ-साथ सह शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन भी इसी तरह निरन्तर होना चाहिए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री प्रभातीलाल जाट ने बालोतरा की धरा को देव भूमि बताते हुए कहा कि यहाँ के लोग 'अतिथि देवो भवः' की परंपरा को भलीभाँति जानते हैं। समस्त संभागी खिलाड़ियों को खेल 'खेल की भावना से' खेलने की सलाह दी। इस अवसर पर जिले के जिला शिक्षा अधिकारी श्री ओमप्रकाश शर्मा द्वारा आगंतुकों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण में भामाशाहों एवं जनप्रतिनिधियों का भी स्वागत किया गया।

इस अवसर पर मदर टेरेसा स्कूल की बालिकाओं ने 'केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देश' गीत पर नृत्य प्रस्तुति के साथ आगंतुकों का भावभीना स्वागत किया तथा संत इंटरनेशनल स्कूल की बालिकाओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत करते हुए संभागी खिलाड़ियों का मन मोह लिया। इस अवसर पर स्थानीय युवा गायक पीयूष पंवार, जयरामदास, ज्ञानरूपराय माथुर, देवेन्द्र बोडा, मोहनलाल सेवक शिक्षा निदेशालय बीकानेर व चेतनसिंह का भी साफा पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के दौरान मंच पर अतिथि के रूप में पृथ्वीसिंह दवे पूर्व उपनिदेशक, एडीओ धनराज व्यास, गोपालसिंह राठौड़, शिवमंगलसिंह, शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष श्री पीराराम शर्मा तथा निदेशालय बीकानेर के प्रतिनिधि के रूप में श्री रमेशचंद्र शर्मा प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित रहे।

उद्घाटन समारोह के दौरान समस्त मंडलों के खिलाड़ियों द्वारा मार्चपास्ट किया गया। अतिथियों ने परेड की सलामी ली। मार्च पास्ट में निदेशालय बीकानेर के दल का नेतृत्व श्री आनंदसिंह सहायक कर्मचारी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बालोतरा की जनता का पूर्ण सहयोग तो मिला ही साथ ही शाला के शिक्षकों, पत्रकारों एवं शाला के एनसीसी एवं स्काउट गाईड के बच्चों द्वारा समस्त संभागियों एवं कार्यक्रम में सम्मिलित आम जनता को अपने स्थान पर ही जल की व्यवस्था की गई जो सराहनीय रही।

चार दिन की प्रतियोगिता के समापन पर फुटबाल का खिताब चूरू मंडल को, दूसरा स्थान उदयपुर मंडल को, कबड्डी का खिताब चूरू मंडल को, द्वितीय स्थान अजमेर मंडल को प्राप्त हुआ। बॉलीबाल का प्रथम स्थान चूरू मंडल व दूसरा स्थान अजमेर मंडल को, बास्केटबाल में शिक्षा निदेशालय बीकानेर प्रथम तथा उदयपुर मण्डल द्वितीय स्थान पर रहा। इसी प्रकार कैरम प्रतियोगिता में हमेशा की तरह श्री मधुसूदन किराडू शिक्षा निदेशालय बीकानेर प्रथम रहे, बैडमिंटन में जयपुर मण्डल प्रथम व भरतपुर मण्डल द्वितीय, टेबल टेनिस में उदयपुर मंडल प्रथम तथा द्वितीय स्थान भरतपुर मंडल का रहा। शतरंज में बीकानेर मंडल प्रथम व जोधपुर मंडल द्वितीय रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम-सुगम संगीत में उदयपुर मंडल प्रथम व एकाभिनय में शिक्षा निदेशालय द्वितीय स्थान पर रहा तो एकल नृत्य में निदेशालय प्रथम रहा। एथलेटिक्स प्रतियोगिता में शिक्षा निदेशालय ने बेहतरीन सफलता प्राप्त की जिसमें श्री अजय आचार्य, महेश आचार्य, अनिल पुरोहित, विजय शर्मा व अजय गोदारा की भूमिका प्रमुख रही।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के राजस्व राज्यमंत्री श्री अमराराम चौधरी ने अपने उद्बोधन में सभी खिलाड़ी कर्मचारियों को नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ 'खेल को खेल की भावना से खेलने' तथा अनुशासन बनाये रखने हेतु बधाई दी। साथ ही जो विजेता नहीं बन पाये उन्हें अभी से तैयारी करने तथा चरित्र निर्माण के पथ पर अग्रसर होने एवं समय के पाबंद रहकर देश व प्रदेश के प्रति वफादार रहकर विकास में भागीदारी निभाने हेतु प्रेरित किया। इसके अलावा कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सिवाना के विधायक श्री हमीरसिंह भायल ने कहा कि ''स्वास्थ्य के लिए नियमित खेल खेलना चाहिए तथा राज्य सरकार शिक्षा के विकास हेतु कृत संकल्प है। इस हेतु प्रदेश की

सरकार ने हजारों की संख्या में विद्यालय क्रमोन्नत किए हैं सत्य को उजागर करने के लिए किसी पथ की जरूरत नहीं होती।'' ईमानदारीपूर्वक कार्य करते हुए आम जन की सेवा करने का उन्होंने आह्वान किया।

समापन समारोह के अवसर पर मंच पर आसीन विशिष्ट अतिथि जिले के जिला शिक्षा अधिकारी श्री ओमप्रकाश शर्मा, शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष श्री निर्मल व्यास, राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष श्री पूनमचंद व्यास, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री हेमंत घोष, निजी विद्यालय संघ के जिलाध्यक्ष श्री बालसिंह राठौड़, महासचिव श्री प्रेमाराम भादू तथा शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष श्री पीराराम शर्मा भी आसीन थे।

इस प्रतियोगिता के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हुए शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष श्री पीराराम शर्मा एवं उनकी कार्यकारिणी के अलावा बालोतरा की जनता के साथ-साथ विद्यालय के शिक्षक एवं छात्र भी पूर्णरूप से सक्रिय रहे। कर्मचारियों को सभी तरह की सुविधा उपलब्ध करवाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हुए आवास व भोजन व्यवस्था भी शानदार की गई। इसके साथ प्रतियोगिता की यादों को चिरस्थायी बनाने हेतु आयोजन समिति की ओर से समस्त संभागी खिलाड़ियों को एक-एक बैडशीट भी प्रदान की गई। भोजन एवं नाश्ते की व्यवस्था वीर तेजाजी छात्रावास में की गई थी। प्रतियोगिता के उद्घाटन व समापन सत्र का मंच संचालन प्रधानाध्यापक श्री सुरेश चितारा एवं डॉ. रामेश्वरी चौधरी द्वारा किया गया जो अविस्मरणीय रहा और सभी के दिलों में जगह बना गया। अंत में सभी संभागी आगामी प्रतियोगिता का झंडा कोटा मंडल को सौंपकर आगामी प्रतियोगिता हेतु अपने-अपने गंतव्य की ओर वर्ष 2016 को अलविदा कहते हुए नववर्ष में कोटा मंडल में मिलने का भरोसा दिलाते हुए बालोतरा से विदा हुए।

सहायक कार्यालय अधीक्षक,
मा.शि. निदेशालय, बीकानेर
मो: 9929733705

रपट

श्रमदान व भवन का लोकार्पण

❐ अमित शर्मा

जनसहभागिता का सर्वोत्तम उदाहरण दिनांक 11 जनवरी 2017 को अजमेर के पण्डित दीनदयाल शिक्षा संकुल में कार्य रूप में प्रत्यक्ष साकार हुआ। पण्डित दीनदयाल शिक्षा संकुल में रिक्त पड़ी भूमि व भवन का जीर्णोद्धार शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं शिक्षक संगठनों के माध्यम से अपने मूर्त रूप में आया। पूर्व की भाँति इस वर्ष भी शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने बिना राजकीय सहयोग के उक्त परिसर में रिक्त पड़े स्थान व भवन का जीर्णोद्धार करने की ठानी। इस क्रम में सहयोग हेतु राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय), रेसा (राजस्थान शिक्षा सेवा) व मंत्रालयिक संघ द्वारा दल का गठन कर उक्त रिक्त परिसर की साफ-सफाई करवाई गई। उक्त भूमि पर उगी कंटीली झाड़ियों को अधिकारियों व शिक्षक संघ के पदाधिकारियों द्वारा साफ किया गया। समतलीकरण करने के पश्चात् उक्त परिसर में स्थित भवन का जीर्णोद्धार करवाया गया। उसकी टूट-फूट व प्लास्टर के पश्चात रंग-रोगन करवाया गया। सम्पूर्ण श्रमदान से जहाँ एक ओर परिसर स्वच्छ एवं साफ सुथरा बना वहीं अनुपयोगी एवं जीर्ण-शीर्ण सरकारी सम्पत्ति को उपयोगी बना लिया गया। सम्पूर्ण परिसर में शिक्षा विभाग की नीतियों को उजागर करते होर्डिंग व पोस्टर लगाए गए ताकि आने वाले आगन्तुक शिक्षा विभाग की नीतियों से अवगत हो सकें एवं सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से लाभ उठा सकें।

कार्यक्रम के दिन शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारी, मंत्रालयिक कर्मचारी एवं राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) द्वारा उक्त स्थल को तैयार कर कार्यक्रम को भव्य रूप प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा राज्यमंत्री श्री वासुदेव देवनानी, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री अरविन्द यादव एवं विशिष्ट अतिथि रा. शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के प्रदेश अधिकारी श्री देवीलाल गोचर थे। मंच पर अतिथियों का स्वागत उपनिदेशक, माध्यमिक श्री जीवराज जाट, रेसा जिलाध्यक्ष श्री प्रदीप महरोत्रा एवं शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के जिलाध्यक्ष श्री भंवरसिंह राठौड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में हुए नवाचार, आदर्श विद्यालय, उत्कृष्ट विद्यालय, पदौन्नतियों और नामांकन में वृद्धि से शिक्षा के क्षेत्र में हुए लाभों से अवगत करवाया गया। शिक्षा मंत्री ने मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना से विद्यालयों में सुख-सुविधाओं को बढ़ाने पर जोर दिया। शिक्षा मंत्री ने सरकारी विद्यालयों में नामांकन वृद्धि हेतु शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयासों के लिए उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

देवनानी जी द्वारा स्वयं के जन्मदिवस के अवसर पर शिक्षकों से उपहार माँगा गया कि ''शिक्षक उन्हें यह विश्वास दिलाएँ कि विद्यालय के छात्रों को वह शत-प्रतिशत ज्ञान बाँटेंगे, समय पर विद्यालय जाएँगे और अन्य को भी प्रेरित करेंगे।'' मंत्री महोदय ने उपस्थित शिक्षा विभागीय अधिकारियों एवं शिक्षकों को गत वर्षों में सरकारी विद्यालयों में बेहतर परीक्षा परिणाम हेतु साधुवाद दिया। साथ ही अपील की कि ''विद्यालयों में शिक्षा के गुणात्मक स्तर को बढ़ाया जाना चाहिए। यह स्तर मेरिट में आने वाले छात्र-छात्राओं में सरकारी विद्यालयों के बालक-बालिकाओं की संख्या बढ़ने से ही प्रदर्शित होगा। सरकार की शैक्षिक योजनाओं का लाभ विद्यार्थियों को मिले इसका प्रयास करना चाहिए।''

कार्यक्रम के दौरान 'रमसा' कार्यालय के नवीन भवन का लोकार्पण कर अतिथियों द्वारा उक्त परिसर में पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक सुरेशचन्द व्यास द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्यालय उपनिदेशक, माध्यमिक, अजमेर
मो: 9251037377

राम कृष्ण की दिव्य किरण से माँ जग में सुख पाती थी।
इसीलिए तो माता जग में वन्दनीय कहलाती थी।।

पुस्तक समीक्षा

समय की सीपियाँ

लेखक: एन.सी.आसेरी **प्रथम संस्करण** : दिसम्बर 2011 **मूल्य :** 60 रूपये **पृष्ठसंख्या :** ₹ 80

गद्य की अन्य विधाओं के समान कहानी भी आधुनिक काल की देन है। इसका क्रमबद्ध विकास भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग से माना जाता है। वैसे कहानी की परम्परा अति प्राचीन काल से चली आ रही है, जिसमें कालक्रमानुसार कहानी का स्वरूप बदलता रहा है। कहानी विधा भी समय के साथ परिवर्तन करती अपनी विभिन्न श्रेणियों में बंटती गयी। जिसमें लघु कहानी भी आज के वैश्विक जीवन में एक क ड़ीका काम कर रही है। अपने लघु आकार में होने के कारण इस विधा का अपना अनुशासन निः संदेह कठोर है। ऐसे ही आदर्श एवं यथार्थ के संयोगी साधक एन.सी.आसेरी है, जो निरन्तर अपने जीवन को शिक्षा-साहित्य से जो ड़ समाज को अपनी लेखनी से त्रिवेणी-स्नान कराते रहे। आसेरी जी ने लम्बे समय तक सामाजिक सारोकार से जु ड़ी लघु-कथाएँ रची। एन.सी.आसेरी के लघुकथा संग्रह 'समय की सीपियाँ' में कुल 74 लघुकथाएँ हैं जिनमें उन्होंने अपनी सकारात्मक दृष्टि से सामाजिक यथार्थ एवं अपने आस-पास बिखरे अनुभवों को समेट समाज में आदर्श मार्गदर्शन का प्रयास किया है। इन कहानियों में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना तथा वर्तमान पारिवारिक परिवेश की पी ड़ा व मन की भावनाओं को कथा रूप में बाँधने का सफल प्रयास है।

लेखक एक शिक्षक भी थे और कवि भी; इसलिए इनकी कई कहानियों में यह प्रभाव यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है। जैसे 'नींव की ईंट और कंगूरा' कहानी में अपने पर गर्व न करने की शिक्षा देते हु आत्मोत्सर्ग की बात बताते हैं।

इसी प्रकार 'बाल ता ड़न' कहानी में वे बालता ड़न के माध्यम से बच्चें को आधुनिक जीवन में शरारत के कारण उन्हें मारना व डाँटना भी आज भारी प ड़ रहा है। शिक्षक की पी ड़ा और बदलते परिवेश का दर्द प्रायः सभी को होता है साथ ही ऐसा प्रतीत होता है कि संस्कारयुक्त शिक्षा ही इस समस्या का समाधान है।

कहानियों में देश-समाज एवं आस-पास घटने वाली घटनाओं के सूक्ष्म विवरण उनकी रोचकता को ब ढ़ातेहैं। सरल-सहज-सरस भाषा का प्रवाह पाठक को प्रवाहित करता है।

कहानी 'ऋणानुबंध' एवं 'अनकमाऊ' में परिवार की धुरी बेटे के व्यवहार से रूबरू करवाती है तो 'पौत्र का ज्ञान', 'माँ की ममता', 'बिंदास बेटी', 'माँ का श्राद्ध', इसी प्रकार समाज-परिवार में आमजन की पी ड़ा व बदलते रिश्तों के भावों को प्रकट करती हैं।

इस लघुकथा कृति की भूमिका लिखने वाले संपादक दैनिक युगपक्ष बीकानेर के श्री उमेश सक्सेना ने लिखा है ''आज जबकि साहित्य और जीवन के बीच अंतराल ब ढ़ाया है कई बार लगता है कि जीवन के मूल्य साहित्य से बहु त आगे निकल गए हैं, ऐसे में आसेरी जी का लेखन जीवन के प्रति आस्था जगाता है, हमारे सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है, उनके जीवन का ब ड़ा हिस्सा शिक्षा विभाग की सेवा में बीता। बाद में सामाजिक, धार्मिक आयोजनों से उनका नैकट्य रहा हैं, इसलिए उसकी तल्ख सच्चाइयाँ उनके लेखन कर्म का अंश है।''

कहानियों में राजस्थानी लोकोक्तियों, मुहावरों, कहावतों का भी पात्रानुसार सटीक उपयोग किया है जैसे मूल से ब्याज प्यारा होना, मरता क्या नहीं करता। साथी ही कहीं काव्य की पंक्तियाँ तो कहीं-कहीं संस्कृत की सूक्तियाँ भी है।

कहानी में शीर्षक भी आकर्षित व सशक्त माने जाते हैं। 'ब्याज स्तुति', 'गदर्भ विज्ञान', 'एंजियोग्राफी', 'राजनीति', 'साइको सामेटिक', 'पांडुलिपि', 'चुहिया की साध', 'पनवा ड़ी', 'वैतरणी तारण' इत्यादि ऐसी ही लघुकथाएँ पाठक को जो ड़ने में सक्षम हैं।

बा ल्का जायजा, थाली बजी, कलयुगी पुत्र, सुविधा शुल्क, कफ़न विक्रेता, नीम न मीठा होय, कितना डीए ब ढ़ा, दलाली, रेजगारी, अंतर, नरेगा, पुलिसवाला, दू धका मोल, बैकूंठी बनाम अरथी, श्रेष्ठता का अहंकार, ट्यूशन का फंदा, सुहाग चिह्न और देनदारी आदि सीपियों में भी समसामयिक, सामाजिक, प्रशासनिक व राजनीतिक परिवेश में व्याप्त विद्रू पताओं का चित्रण कर करारी चोट की है। मानव मन को झकझोर कर सन्मार्ग की ओर अग्रसर होने का संदेश दिया है।

कहानी संग्रह का शीर्षक, आवरण व छपाई अच्छी है। साहित्य के 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की भावना को साथ लेकर रचनाकार आगे ब ढ़ है।

चूंकि लेखक हमारे साथ नहीं है पर उनकी लेखनी से रची-बसी उनकी पुस्तक हमारे साथ है। उन्हें नमन, उनके द्वारा सृजित सहित्य को जन-मन में स्थान मिले जिससे समाज में सकारात्मक सोच व आशावादी भाव निरंतर कर्त्तव्यपथ पर चलने की प्रेरणा देते रहें।

समीक्षक : **डॉ. कृष्णा आचार्य**
उस्ता बारी के अंदर, बीकानेर (राज.)
मो: 9461036201

सृजन-मंथन

लेखक : सी.एल. साँखला **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, एफ-77 सेक्टर 9, रोड नं. 11 करतारपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर **पृष्ठसंख्या** : 120 **मूल्य :** ₹ 100

ग्रहण और विसर्जन प्रकृति का नियम है, अर्थात् व्यक्ति समाज से जो प्राप्त करता है, उसे पुनः समाज को देता है। अतः यह ध्या देने योग्य है कि वह क्या ग्रहण करता है; क्योंकि जैसा ग्रहण, तदनुसार विसर्जन। इसी चिन्तन के आधार पर जहाँ हमारे संस्कारों का महत्त्व है वहीं अच्छे साहित्य का भी। चूँकि श्रेष्ठ सद्गुणों से युक्त आचार-विचार से ही मानवीय मूल्यों का संवर्धन होता है और विकारों का शोधन, जिससे मनुष्य, मनुष्य बनता है। साहित्य के क्षेत्र में दृष्टिपात करें तो दृष्टिगोचर होता है कि साहित्यकारों ने जो प ढ़ा-सुना और देखा उसे अपने चिन्तन-मनन के आधार पर समाज हित में सृजन किया। उनका

यह सृजन समाज को कितना दिग् दर्शनकरवाता है, यह उनकी सृजन क्षमता के आकलन से ही बोध होता है।

समीक्ष्य पुस्तक 'सृजन-मंथन' श्री सी.एल. सांखला द्वारा लिखी गई है। इसमें कुल 14 आलेखों का संग्रह है, जिन्हें वे पूर्व में अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित करवा चुके हैं। लेखक ने 'अपनी बात' में इसे उद्धृत किया है। लेखक द्वारा विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित अपने आलेखों को संग्रहित कर उसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाना पाठकों के हितार्थ भी उचित प्रतीत होता है। विभिन्न विषयों पर लेखक का जो अध्ययन रहा, चिन्तन रहा अथवा जिन समसामयिक घटनाओं ने लेखक को प्रभावित किया, उन्हें अपने विचारों में व्यक्त किया है। लेखक हाड़ौती अंचल से हैं, अतः उन पर उस क्षेत्र के साहित्यकारों, कवियों, लेखकों का प्रभाव अधिक रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में तीन आलेख-'हाड़ौती अंचल का हिन्दी काव्य प्रवाह', 'हाड़ौती अंचल की स्वातंत्र्योतर हिन्दी काव्य कृतियाँ', 'जनमानस में दोहे का महत्त्व' में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है।

'हाड़ौती अंचल की स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य कृतियाँ' में श्री सांखला ने 280 रचनाओं व उनके रचनाकारों के नाम दिए हैं, उनमें तीन रचनाएँ लेखक की है। श्री सांखला का 'भारतीय चिन्तन का विराट चेतना बोध' आलेख प्रकट करता है कि लेखक द्वारा इस विषय पर स्वयं के चिन्तन को मूर्तरूप देते समय उनमें विचारों का प्रवाह अधिक रहा जबकि लेखन उसकी तुलना में संक्षिप्त दृष्टिगोचर होता है; विषय बहुत ही सारगर्भित है। इसी क्रम में आलेख 'मानव-मन तथा लोक निर्माण' में श्री सांखला ने मानव के स्वभाव का 'वृतिदल'- 'सु' 'कु' 'नि' के आधार पर वर्णित किया है, जो उनके अच्छे लेखन का परिचय देता है; चूँकि भाषा शैली सहज रूप से पाठकों को समझ में आने वाली है।

श्री सांखला के सभी आलेख पाठकों को मनन करने के लिए प्रेरित करने वाले हैं। मुद्रण में मात्राओं की त्रुटि दृष्टिगोचर होती है, जो अगले प्रकाशन में ध्यान देने योग्य है। भाषा सरल है। पठनीय कृति है। मूल्य उचित है।

समीक्षक : **कु. अंशुप्रभा श्रीमाली**
जस्सुसर गेट रोड, धर्म कांटे के पास, बीकानेर
मो: 9414384653

विद्यार्थियों के लिए विशेष

कैसे करें अध्ययन- प्रभावी नुस्खे

❒ टेकचन्द्र शर्मा

अक्सर विद्यार्थियों से सुनने में आता है कि विषय व तत्सम्बद्ध विषयवस्तु बार-बार पढ़ने पर भी याद नहीं होती; अतः निराशा हताशा हमें घेर लेती हैं। अधिकाँशतः यह सत्य है कि पढ़ा हुआ भली-भाँति याद नहीं रहता व परीक्षा में मुँह की खानी पड़ती है। यहाँ मैं कुछ सरल नुस्खे-उपाय बता रहा हूँ जिनके कारण पढ़ा हुआ याद रहेगा और परीक्षा में सफलता भी अच्छी मिलेगी।

एकाग्रता- सबसे महत्त्वपूर्ण व पहला नुस्खा है-एकाग्रता। पढ़ते समय बस उसी विषय पर ध्यान केन्द्रित रहे, एकाग्र रहे तो पढ़ा हुआ अवश्य याद रहेगा। अच्छा रहे प्रातःकाल पढ़ा जाए, क्योंकि उस समय का किया कार्य पूर्णरूपेण सफल रहता है। स्वामी विवेकानन्द जी ने भी एकाग्रता को मूल मंत्र कहा है। एकाग्रता का एक उदाहरण ही पर्याप्त है। गुरु द्रोणाचार्य अर्जुन को मछली की आँख बेधने के लिए कहकर पूछते हैं ''तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है।'' अर्जुन का प्रत्युत्तर था ''गुरुदेव मछली की आँख के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है।'' यह है एकाग्रता। जो विषय वस्तु पढ़ रहे हैं वही ध्यान में हो, बस। एकाग्रता के लिए उस विषय में अभिरुचि होना आवश्यक है; बिना अभिरुचि के पढ़ा हुआ व्यर्थ है। वह विस्मृत हो जाएगा।

पढ़ने की गति- मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि पढ़ते समय गति तेज हो। धीमी गति से पढ़ने पर एकाग्रता भंग हो जाती है। ध्यान कई जगह बँट जाएगा। अतः पढ़ने की गति तेज रखें न कि धीमी। धीमी गति आपके ध्यान को कई जगह बांट देगी। अतः इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को भूलें नहीं। गति तेज रखें।

समझने का प्रयास करें- पढ़ते समय या तो हम तथ्यों को रटते हैं या समझने की कोशिश करते हैं। रटे हुए तथ्य समय बीतने पर भुला दिए जाते हैं। स्थायी याद उन्हीं तथ्यों की रहती है जिन्हें पढ़ते समय समझा गया। अतः याद को स्थायी बनाने के लिए 'रटाफिकेशन' की बजाय समझने का प्रयत्न करें।

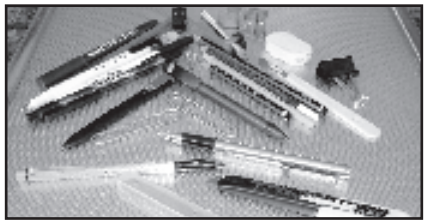

महत्त्वपूर्ण अंशों का रेखांकन- पढ़ते समय पेन्सिल अवश्य रखें और जहाँ-जहाँ सार या महत्त्व के अंश देखें, उन्हें रेखांकित कर लें ताकि दुबारा पढ़ते समय उन अंशों पर ध्यान तुरन्त चला जाए और वे ध्यान से ओझल न हो पाए। एक पैराग्राफ में एक या दो पंक्तियाँ ही सार होती हैं बाकी तो उनकी व्याख्या ही होती है। अतः 'सार सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए अध्ययन करें।

विचार-विमर्श-जो कुछ भी आज पढ़ा है उसके बारे में अपने साथियों से विचार-विमर्श अवश्य करें। पढ़े हुए को अन्य को बताने पर, चर्चा करने पर वह स्थायी बन जाता है और मात्र अपने तक ही सीमित रखने पर वह अस्थायी रहता है। अतः याद को स्थायी बनाने हेतु अपने संगी साथियों से उस पर चर्चा अवश्य कर लें।

अभ्यास करें- मौखिक और लिखित दोनों प्रकार से पढ़े हुए विषय का अभ्यास अवश्य करें। यह अभ्यास बार-बार करते रहें।

संक्षिप्त नोट्स तैयार करना-अंग्रेजी में कहावत है writing makes man perfect केवल पढ़ना पूर्ण नहीं होता, जो कुछ पढ़ा है, उसको लिख लेना, नोट्स तैयार कर लेने से ज्ञान पूर्ण हो जाता है। दूसरा लाभ यह होगा कि परीक्षा के दिनों में आप द्वारा तैयार किए हुए नोट्स बहुत लाभप्रद सिद्ध होंगे। समय की बचत होगी। मात्र इन्हीं नोट्स को पढ़कर आप परीक्षा रूपी वैतरणी से सफलतापूर्वक पार हो पाएँगे।

अतः अध्ययन करते समय उक्त कुछेक मंत्रों को अवश्य याद रखें। आप सफल होंगे।

शिक्षाविद्, 'शर्मा सदन',
मुनि आश्रम के पास, झुंझुनूं
मो. 9682973792

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।
-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

कम्प्यूटर का माउस पैरों से चला सकेंगे

मॉस्को–रूस में हाईस्कूल पढ़ने वाले एक छात्र सेंगेई हेल्याविन ने दिव्यांगों के लिए एक ऐसा 'एलईडी माउस सैंडल' बनाया है, जिसे पहनकर ऐसे लोग भी आसानी से कम्प्यूटर चला सकेंगे जो किसी कारणवश अपना हाथ गंवा चुके हैं। मामूली अभ्यास से इस सैंडल माउस को आसानी से पैरों से नियंत्रित किया जा सकता है।

दोस्त के लिए बनाया: सेंगेई हेल्याविन का एक दोस्त पेशीय विकार (मस्कुलोस्केलेटल डिसऑर्डर) से पीड़ित था। इसके कारण वह साधारण माउस पकड़ने में सक्षम नहीं था। इसके बाद सेंगेई ने उसकी मदद करने की ठानी। उन्होंने ऐसा माउस बनाया, जिसे हाथ नहीं, बल्कि पैरों से चलाया जा सकता है।

रोशनी के लिए एलईडी : माउस का स्क्राल और दोनों क्लिक बटन रात को भी देखने में परेशानी न हो, इसके लिए सेंगेई ने इस सैंडल माउस के दोनों तरफ एलईडी लाइटों की एक पट्टी लगाई है।

क्षुद्रग्रह 'साइकी' पर मिले पानी के चिह्न

वॉशिंगटन : वैज्ञानिकों ने हमारे सौरमंडल के सबसे बड़े धात्विक क्षुद्रग्रह 'साइकी' पर पानी की मौजूदगी की पहचान की है। यह क्षुद्रग्रह नासा के प्रस्तावित अभियान का लक्ष्य भी है। 'साइकी' से जुड़े पिछले अध्ययनों में इसकी सतह पर जलयुक्त खनिजों का कोई साक्ष्य नहीं मिला था। हालांकि हवाई में नासा के अवरक्त दूरबीन केन्द्र ने इसकी सतह पर जल या हाईड्रोक्सिल की मौजूदगी के साक्ष्य दिखाए हैं। 'साइकी' पर इन अणुओं के स्त्रोत अब भी एक रहस्य हैं लेकिन वैज्ञानिकों ने इनके निर्माण से जुड़ी कई संभावित प्रणालियों को पेश किया है। अमेरिका में 'टेनेसी विश्वविद्यालय' से जोशुआ एमेरी समेत शोधकर्ताओं ने कहा कि 'साइकी' पर पाए गए जलयुक्त खनिज संभवतः कार्बनयुक्त क्षुद्रग्रहों से आए हों, जिन्होंने बीते दौर में 'साइकी' पर असर डाला हो। 'साइकी' लगभग 300 किलोमीटर की दूरी पर है और यह लगभग पूरा ही शुद्ध निकिल-लौह धातु से बना है। यह एस्टेरोइड बेल्ट में स्थित है। यह अध्ययन एस्ट्रोनॉमिकल जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

कांस्य युग के एक शहर का पता चला

बर्लिन : पुरातत्वविदों ने उत्तरी इलाकों में कांस्य युग के एक बड़े शहर का पता लगाया है जो 3000 ईसा पूर्व अस्तित्व में आया था और 1200 से अधिक वर्षों तक फलता-फूलता रहा था। जिस दोहुक शहर के नजदीक इस शहर की खोज हुई वहाँ अब कुर्द लोगों का बस्सेतकी नाम का एक छोटा सा गाँव है। जर्मनी में 'यूनिवर्सिटी ऑफ टुबिनगेन' के पुरातत्वविदों ने कांस्य युग के इस शहर का पता लगाया है। 'यूनिवर्सिटी ऑफ टुबिनगेन' के प्रोफेसर पीटर पफाल्जनेर और 'डायरेक्टरेट ऑफ एंटीक्विटिस' के डॉ. हसन कासिम के नेतृत्व में इस वर्ष अगस्त और अक्टूबर के बीच बस्सेतकी में खुदाई का काम हुआ। खोज में कांस्य युग में इस शहर में एक व्यापक सड़क नेटवर्क, कई आवासीय जिले, भव्य मकानों और महलनुमा इमारतें होने के संकेत मिले हैं।

श्रीलंका में आज भी मौजूद हैं रामायण काल के चिह्न

रावण की सोने की लंका तो अब नहीं रही लेकिन श्रीलंका में रावण नामक राजा अब से 5 हजार साल पहले था, इसके सबूत आज भी वहाँ मौजूद हैं। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदासजी ने जिस अशोक वाटिका का वर्णन किया है, वह भी मौजूद है। कोलंबो से करीब 171 किलोमीटर दूर सीतायेलिया नामक कस्बा है, जहाँ रामचरित मानस की एक-एक बात नजर आती है। सीता नदी के किनारे हनुमानजी के पैरों के निशान और सीताजी के बैठने वाला चबूतरा सब कुछ यहाँ वैसे ही हैं। श्रीलंका पर्यटन विभाग ने सीतायेलिया के अशोक वाटिका में भव्य मंदिर बनवाया है जिसमें भगवान श्रीराम, लक्ष्मण, सीता व हनुमानजी की मूर्तियाँ हैं। मंदिर के पुजारी कहते हैं कि पहाड़ का यह पाँच किलोमीटर का क्षेत्र अशोक वाटिका के नाम से जाना जाता है, जहाँ रावण ने सीता को रखा था। अशोक वाटिका क्षेत्र में ही पुष्पक विमान उतारने की जगह है। यहाँ का मौसम बेहद खुशनुमा रहता है। सर्दियों को छोड़कर यहाँ गुलाबी ठंड रहती है। डॉ. विद्याधर की शोध पुस्तिका 'रामायण की लंका' के प्रमुख अंश में देखा जाए तो बेरामटेक : महियांगना मध्य श्रीलंका स्थित न्यूरायेलिया का पर्वतीय क्षेत्र है उसे रावण का हवाई अड्डा क्षेत्र भी कहा जाता है। वेलाव्या और येलिया के बीच 17 मील लंबे मार्ग पर रावण से जुड़े स्थल अब भी मौजूद हैं। श्रीलंका की श्रीरामायण रिसर्च कमेटी कहती है कि यहाँ रावण के 4 हवाई अड्डे उसानमोड़ा, गुरुलोथोपा तोतूपोलोकंदा व वारियापोला हैं। हनुमान के लंका दहन में उसानमोड़ा हवाई अड्डा नष्ट हो गया था। कमेटी ने रिसर्च में इस बात को पुख्ता किया है कि जिस लंका का जिक्र रामचरित मानस में है वही आज की श्रीलंका है। कहा जाता है कि पंजाब निवासी अशोक कैंथ की खोज के बाद पहली बार वाटिका चर्चा में आया। उसके बाद 2007 में श्रीलंका सरकार ने भी रिसर्च कमेटी का गठन किया, जिसने सीतायेलिया में अशोक वाटिका के खोज की पुष्टि की। अशोक वाटिका में सीताजी के आवास से थोड़ी दूरी पर रावण की भतीजी त्रिजटा भी रहती थी। राम-सीता मंदिर के बगल में 'सीता' नाम से नदी बहती है, जहाँ सीताजी स्नान करती थीं। मान्यता के अनुसार, उस पार के क्षेत्र को हनुमानजी ने अपनी आग लगी पूंछ से जला दिया था। उस स्थान की शिलाओं पर आज भी हनुमानजी के पैरों के निशान नजर आते हैं। सीतायेलिया में अशोक वाटिका से कुछ दूरी पर ही रावण का महल होने की बात कही जाती है, जहाँ वह अपनी पटरानी मंदोदरी के साथ रहता था। यहीं से थोड़ी दूर पर रावण एल्ला नाम से एक झरना है, जो 82 फीट की ऊँचाई से गिरता है। श्रीलंका में भारत की राजदूत रह चुकीं लोरानी सेनारत्ने ने अपनी पुस्तक 'हेअरस टूलिस्टी' रावण पर लिखी है। उनके अनुसार 4000 वर्ष ईसा पूर्व रावण का जन्म हुआ था। स्थानीय लोगों का मानना है कि रावण सिंहली समुदाय से था। श्रीलंका में 73 फीसदी आबादी सिंहली है। सीतायेलिया में बने भव्य मंदिर में बड़ी संख्या में भारत के अलावा मलेशिया, इंडोनेशिया समेत अन्य हिन्दू देशों के लोग आते हैं। इधर एक दशक से श्रीलंका में भारतीय पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ रही हैं, उसकी वजह बताई जाती है कि लोग राम-सीता और रावण के बारे में जानना चाहते हैं।

संकलन : **नारायण दास जीनगर,** प्रकाशन सहायक

शाला प्रांगण से

राउमावि आडसर शाला में स्वेटर वितरण

राउमावि., आडसर, लूणकरणसर बीकानेर में दि. 13.1.16 को पूर्व प्रधानाध्यापक श्री मोहन सिंह जी सिद्धू द्वारा भेंट से प्राप्त स्वेटरों का वितरण विद्यार्थियों को किया। प्रधानाचार्य रामजीलाल घोड़ेला ने इस अवसर पर भामाशाह का आभार व्यक्त किया।

खवासपुरा की SDMC बैठक सम्पन्न

राउमावि. खवासपुरा जोधपुर के शाला प्रांगण में दि. 29.11.16 को SDMC की साधारण सभा का आयोजन किया गया। इस आयोजन में प्रबन्ध समिति के गठन में राजेश कुमार अंकुर को अध्यक्ष, कल्याण सिंह चारण को सचिव व शेष कार्यकारिणी का मनोनयन विधायक व सरपंच प्रतिनिधि की उपस्थिति में सर्वसम्मति से किया गया। साथ ही विद्यालय विकास योजना संबंधी प्रस्तावों पर चर्चा की गई। विद्यालय में 26.11.16 को 'संविधान दिवस' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, निबन्ध लेखन, वाद-विवाद व क्विज प्रतियोगिता आयोजित हुई। शाला प्रधानाचार्य ने इस अवसर पर सभी का हार्दिक आभार जताया तथा निरन्तर सहयोग के लिए आह्वान किया।

भामाशाह ने डेढ़ बीघा जमीन खरीदकर शाला को की भेंट

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ी कोलायत, बीकानेर को डेढ़ बीघा जमीन खरीदकर डिस्ट्रीक्ट माइंस ऑनर ऐसोसिएशन, बीकानेर के अध्यक्ष श्री संदीप चाँदना ने संस्था प्रधान विमल कुमार पंवार को सौंपी। भामाशाह सम्मान समारोह 30.11.16 को उपनिदेशक मा.शि. बीकानेर श्री ओमप्रकाश सारस्वत की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस आयोजन में उप सरपंच रामचन्द्र महाराज, SMC अध्यक्ष श्री रतनसिंह राजपुरोहित द्वारा माईन्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों को शॉल ओढ़ाकर, साफा पहनाकर तथा अभिनन्दन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। जिसमें अध्यक्ष चांदना के अलावा पूर्व अध्यक्ष राजेश चूरा, श्री सम्पत डागा, माइन्स ऑनर विकास शर्मा व संदीप गर्ग को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय ने साँस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया। संस्था की ओर से उपनिदेशक ने आगुन्तक अतिथियों का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन शाला के प्राध्यापक श्री भगगाराम ढाल ने किया। अन्त में संस्था प्रधान ने सभी का आभार व्यक्त किया।

> अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें। **-वरिष्ठ संपादक**

उदयपुर के भागथल विद्यालय में 'रामचरित मानस' का वितरण

राउप्रावि., भागथल (वल्लभ नगर) पं.सं. भीण्डर, उदयपुर के मानस गंगा अभियान के तहत भगवानलाल डांगी की अध्यक्षता में आयोजन तीन चरणों में करते हुए, 'रामचरित मानस' की उपयोगिता व सार्थकता बताई गई। 'रामचरित मानस' की प्रतियाँ कैलाश बिहारी वाजपेयी, शंकर मालवीय, डॉ. विद्यासागर शर्मा, डॉ. वीर बहादुर मिश्र, डॉ. मूलचंद पाठक, श्याम सुन्दर शाह, भुवनेश भाकर, विद्या पालीवाल, ऋषिराज तिवारी व नारायण शर्मा की ओर से उपलब्ध करवाई गई। अन्त में प्र.अ. मोतीलाल आमेटा व अध्यक्ष श्री भगवान लाल डांगी द्वारा ग्रामीण विद्यार्थियों को मानस की प्रतियाँ भेंट की गई।

गोपड़ी बालोतरा में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया

राआउमावि. गोपड़ी, बालोतरा, बाड़मेर के शाला प्रांगण में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। मुख्य अतिथि सरपंच कल्याण सिंह ने भारत के प्रथम शिक्षामंत्री आजाद को दूरदर्शी, दार्शनिक बताया और उनके कार्यों का स्मरण किया। दसवीं बोर्ड परीक्षा-2016 में शत प्रतिशत परिणाम देने वाले वरिष्ठ अध्यापक नरेश सेन एवं पर्यावरण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रधानाचार्य माणक चन्द दरिवाया को पुरस्कृत शिक्षक फोरम के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार द्वारा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इन्हें सरपंच द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। विद्यालय की गतिविधियों में सकारात्मक व श्रेष्ठ भागीदार छात्र-छात्राओं को भी प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। व्याख्याता देवाराम, सुरेन्द्र सिंह, नरपतलाल, छगन लाल, शा.शि. श्रीमती किरण व सैकड़ों छात्रों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम प्रसन्नतापूर्वक व मनाया गया। अन्त में संस्था प्रधान ने पुरस्कृत शिक्षक फोरम के अध्यक्ष, समस्त शिक्षकों, अतिथियों व छात्रों का आभार व्यक्त किया।

स्वच्छता विशेषांक पुस्तक का विमोचन शिक्षा राज्यमंत्री देवनानी जी ने किया

दि. 5 जनवरी 17 को शिक्षा राज्यमंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी ने स्वच्छता एवं स्वास्थ्य विशेषांक पुस्तक का विमोचन चुरिया-मूरिया सेवा संस्थान, अजमेर की ओर से आयोजित समारोह में किया। संस्था की ओर से निःशुल्क वितरण की जाने वाली यह पुस्तक विद्यार्थियों तथा आमजन में 'स्वच्छ रहें-स्वस्थ रहे' के प्रति सकारात्मक शिक्षा व जन चेतना जाग्रत करने में सहायक होगी। यह बात संस्था की प्रदेश प्रभारी हेमलता अगनानी ने कही। पुस्तक में प्रकाशित सामग्री, संकलन व लेखन रमेश अगनानी ने अपने माता-पिता लक्ष्मी होतचंद की स्मृति में किया। विमोचन कार्यक्रम के अन्त में प्रधानाचार्य ने सभी का आभार व्यक्त किया।

शाला में विवेकानन्द जयंती को कैरियर डे के रूप में मनाया

राजकीय शहीद मेजर जेम्स थॉमस उ.मा.वि. बीकानेर में मतदान जागरूकता दिवस व विवेकानन्द जयंती (कैरियर डे) मनाई। इसमें नानूराम सैनी व शाला प्रधान धर्मेन्द्रसिंह चौहान ने मतदान जागरूकता हेतु छात्रों को प्रोत्साहित किया। गजेन्द्र सिंह राठौड़, रघुवीर साध, चन्दन गहलोत व अमन समेजा को मतदान जागरूकता विषय पर चित्रकला में विजयी रहने पर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में शिव भगवान खत्री, परमेश्वर स्वामी, पार्वती सोनी, सुन्दर कुमार बारूपाल, जितेन्द्र राजपुरोहित और अंजु बाला ने विचार व्यक्त किये। संचालन बनवारी लाल छींपा ने किया।

विवेकानन्द जयंती पर जन्म से शिकागो यात्रा तक की चित्र प्रदर्शनी

राजकीय मोहता मूलचंद उमावि. बीकानेर में स्वामी विवेकानन्द जयंती समारोह का

आयोजन धूमधाम से किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता भारत स्काउट गाईड राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती विमला मेघवाल ने की। कार्यक्रम में हिन्दू जागरण मंच के प्रांतीय उपाध्यक्ष जेठानन्द व्यास, मा.शि.निदेशालय बीकानेर के संयुक्त निदेशक (कार्मिक) विजय शंकर आचार्य, अर्जुन सिंह भाटी, रामकृष्ण मिशन लालगढ़बीकानेर के सचिव कैलाश सिंह पंवार (सेवानिवृत्त शिक्षक नेता) उपस्थित रहे। मिशन सदस्यों द्वारा प्रतियोगिता करवाई गई। इस अवसर पर कैलाश सिंह पंवार द्वारा विद्यालय में स्वामी विवेकानन्द के जन्म से शिकागो यात्रा तक की चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी को अतिथियों द्वारा सराहा गया।

कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में 110 कम्बलों का वितरण

कबीर पंथी संत रतनदास जी महाराज ने जैतासर स्थित कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में संन्यास आश्रम के महंत श्री कृष्ण गिरी महाराज की प्रेरणा से 110 कम्बलों का वितरण विद्यालय में रहने वाली अध्ययनरत पिछड़ेवर्ग की छात्राओं को किया गया। इस मौके पर रतनदास जी महाराज ने योगासनों का अभ्यास भी करवाया तथा रजोनिवृत्ति के दौरान होने वाली समस्याओं को एक्यूप्रेशर, योगासन व प्राणायाम के माध्यम से समाधान की जानकारी दी। कार्यक्रम में भगवान जाट, जगदीश स्वामी व चुन्नी दास स्वामी उपस्थित रहे।

सेवानिवृत्ति-विदाई समारोह

राजकीय आदर्श माध्यमिक विद्यालय अलायला (हनुमानगढ़)में दि. 13.12.16 को श्री महावीर सिंह (वरि. अध्यापक)की राजकीय सेवा से सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्टाफ व ग्रामीणों द्वारा फूलमाला पहनाकर सम्मान किया गया और घोड़ेपर गाजे-बाजे के साथ शाला से निवास स्थान तक ले जाया गया। इस विदाई समारोह में सेवानिवृत्त होने वाले व.अ. महावीर सिंह ने विद्यालय को प्रधानाध्यापक मेज, एक टेबलग्लास (लागत 10,000) भेंट स्वरूप दिया। उन्होंने पूर्व में भी विद्यालय में विद्युत फीटिंग हेतु 40,000 रुपए स्वेच्छा से खर्च किए थे। विद्यालय परिवार द्वारा से.नि. शिक्षक को मिक्सर, शॉल, डायरी चेक, स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर भावभीनी विदाई देते हुए उनके कार्यकाल को अविस्मरणीय बताया।

विवेकानन्द जयंती पर शाला में वार्षिकोत्सव मनाया।

राउमावि. जस्सूसर गेट बीकानेर ने 12 जनवरी 17 को शाला में वार्षिकोत्सव मनाया। इसमें मुख्य अतिथि इंजीनियरिंग कॉलेज के व्याख्याता चक्रवर्ती श्रीमाली, विशिष्ट अतिथि रामलाल सैनी, चोरुलाल व माणक कुमावत ने विद्यार्थियों द्वारा किए सांस्कृतिक कार्यक्रम की सराहना की एवं विवेकानन्द के प्रेरक प्रसंग सुनाए। इस अवसर पर राज्य व जिला स्तर पर गौरवान्वितकरने वाले विद्यालय के विद्यार्थियों व खिलाड़ियोंको प्रमाण पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर गजेन्द्र सोनी व राजेन्द्र सहारण ने विद्यालय को फर्नीचर भेंट करने की घोषणा की। शाला प्रधान श्री नीना भारद्वाज ने आगन्तुक अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

पूर्व विद्यार्थी संघ द्वारा रा. आदर्श उ.मा.वि. शिव (नागौर) में हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन

नागौर जिले के ग्राम शिव के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिकविद्यालय में 18 दिसम्बर 2016 (रविवार) को सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री हरदेवाराम आनन्द एवं पूर्व विद्यार्थी संघ द्वारा (विद्यालय स्थापना वर्ष 1958) हीरक जयंती पर श्री जवाना राम बगड़िया की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री सी.आर. चौधरी केन्द्रीय राज्यमंत्री थे जिन्होंने 10 लाख रुपये की लागत से विद्यालय में एक सेमिनार हॉल के निर्माण की घोषणा की। विशिष्ट अतिथि श्री सागरमल धायल (द्रोणाचार्य पुरस्कार प्राप्त मुक्केबाज) ने खेलों का महत्व बतलाते हुए राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचनेके लिए प्रेरित किया। श्री मेघराज शास्त्री व्याख्याता (हिन्दी) एवं श्री रमेश कुमार, व्याख्याता (रसायन शास्त्र) का मंच संचालन प्रभावी रहा। इस स्नेह मिलन समारोह में विद्यालय के स्थापना वर्ष में प्रविष्ट प्रथम 25 विद्यार्थियों कक्षा 6,9 व 11 के प्रथम बैच के विद्यार्थियों, अब तक के कक्षा 8वीं, 10वीं व 12वीं बोर्ड के टॉपर्स, अब तक की गार्गी पुरस्कार प्राप्त बालिकाओं, राज्य स्तर वाले खिलाड़ियों,इस शाला में अध्ययनकर किसी भी प्रकार की राजकीय सेवा में चयनित विद्यार्थियों एवं समस्त पूर्व शिक्षकों व संस्था प्रधानों एवं शाला के भामाशाहों को आमंत्रित कर सम्मानित किया गया। समारोह में श्री प्रकाशचन्द जाटोलिया-वरिष्ठ संपादक 'शिविरा' पत्रिका, डॉ. शिवप्रसाद शर्मा-से.नि.अति. निदेशक, श्री शिवजी राम चौधरी-से.नि. संयुक्त निदेशक, श्री सुरेश चन्द्रशर्मा-जि.शि. अधिकारी अजमेर, श्री लालाराम अणदा-सरपंच शिव, श्रीमती दुर्गा ढाका-विकास अधिकारी तारानगर चूरू, डॉ. बलवीर सैन-व्याख्याता मे़डतासिटी,डॉ. राजू कस्वां-उदयपुर, डॉ. जगदीश महला, डॉ. चैनाराम अणदा, डॉ. नमित निठारवाल, सुमन अणदा-आर.पी.एस.सी. चयनित व्याख्याता (हिन्दी), श्री वकील सिंह-ए. डी.पी.सी. रमसा गंगानगर, श्री लाखाराम जाख़ड़-संरक्षक पूर्व विद्यार्थी संघ, श्री बजरंग लाल शर्मा-सचिव पूर्व विद्यार्थी संघ, श्री बिहारीलाल सोनी-राज्य स्तर पर सम्मानित भामाशाह, श्री विनोद कुमार आचार्य-संगीत सदन कुचामन सिटी, श्री कैलाशचन्दमेघवाल-प्रधान पं.स. कुचामन सिटी एवं मीडिया कर्मी उपस्थित रहे। आसपास की 11 शिक्षण संस्थाओं के करीब 3500 संभागी उपस्थित हुए।सभी पूर्व शिक्षकों, विद्यार्थियों व अतिथियों को 125 रुपए लागत की 3000 डॉक्यूमेंट फाइल भेंट की गई। समारोह के अन्त में सहभोज का भी आयोजन रखा गया। विद्यालय की अब तक की उपलब्धियों के लिए स्मारिका के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है।

उल्लेखनीय है कि गत सत्र में प्रधानाचार्य श्री रामचन्द्र बिजारणिया के विद्वान शिक्षकों की टीम की बदौलतइस शाला के सभी बोर्ड परिणाम शत प्रतिशत रहे तथा सात बालिकाएँ गार्गी पुरस्कार के लिए चुनी गई। विद्यालय के वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक श्री मोहन राम रणवा के कुशल नेतृत्व में सत्र 2015-16 में 07 तथा सत्र 2016-17 में 13 विद्यार्थी टेबल टेनिस, बैडमिंटन व एथलेटिक्स में राज्य स्तर पर खेल चुके हैं। गत सत्र के 180 के नामांकन के मुकाबले इस सत्र में शाला का नामांकन 368 है जिसमें 216 बालिकाएँ हैं तथा करीब 60 बालिकाएँ ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना से लाभान्वित हो रही हैं। यह विद्यालय वर्ष 1999 में कला संकाय में उच्च माध्यमिकस्तर पर क्रमोन्नत हुआ था तथा वर्ष 2013 से विज्ञान संकाय प्रारम्भ किया गया।

संकलन : **नारायणदास जीनगर**
प्रकाशन सहायक
मो. 9414142641

अलवर

रा.आदर्श उ.मा.वि., नानगवास में श्रीमती किशन देवी यादव द्वारापाँच लाख,बीस हजार रुपये की लागत से कमरा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया, श्री मूलचंद व ब्रह्मदत्त यादव द्वारा पाँच लाख दस हजार रुपये की लागत से कमरा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि., बहरो ड** को श्री विक्रम सिंह (पार्षद वार्ड नं. 7) से 11 कुर्सी लागत 16,000 रुपये, श्रीमती नारायणी देवी से 5 पंखे लागत 6,000 रुपये, श्री रामसिंह गुर्जर (पूर्व पार्षद) से प्याऊ का निर्माण व एक वाटर कूलर लागत 1,00,000 रुपये, श्री मुकेश सैनी (पार्षद) से 5 पंखे लागत 7,000 रुपये, देवेन्द्र यादव (पूर्व पार्षद) से एक अलमारी लागत 5,000 रुपये, संतोष दीवान से मेट-कालीन लागत 60,000 रुपये, श्री घनश्याम यादव मेट-कालीन लागत 5,000 रुपये, परनो ड रिकॉर्ड इण्डिया प्रा.लि. कारो ड द्वारा शौचालय व मूत्रालय का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 9,80,000 रुपये, श्री प्रेम सेठ द्वारा दरवाजे रोशनदान मजदू री लागत 25,000 रुपये, ग्लोबल टी.टी. कॉलेज बहरो ड से सात ग्रीन बोर्ड लागत 11,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. नांगलिया** में श्री शिम्भूदयाल यादव ने एक कक्षा-कक्षा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 2,50,000 रुपये, श्री मंगतूराम वर्मा द्वाराएक कक्षा-कक्ष मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 2,50,000 रुपये, श्री यादराम यादव द्वारा 1,05,000 रुपये की लागत से सरस्वती माता का मंदिर का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि. ककराली** में श्री मनोज चाचान (चैयरमेन L.I.E.T.) द्वारा 58 बच्चें को बैठने हेतु फर्नीचर लागत 1,00,000 रुपये, श्री इन्दु तैलानी (समाजसेवी) द्वारा विद्यालय भवन का रंगरोगन, शौचालय का निर्माण कार्यालय हेतु फर्नीचर व 2 कम्प्यूटर टेबिल व प्रधानाचार्य कार्यालय हेतु ब ड मेज लागत 1,21,000 रुपये, डॉ. तैयब खान डायरेक्टर सानिया अस्पताल द्वारा 101 निर्धन छात्र-छात्राओं को जर्सी वितरित की गई। डॉ. टी.के. गुप्त से निर्धन छात्र-छात्राओं को स्कूली गणवेश व बैग प्राप्त हु ए,श्री विकास चाचान अध्यक्षरोटरी क्लब अलवर द्वारा 2 पानी की टंकी, कप्यूटर स्कैनर व प्रिन्टरप्राप्त हु ए**रा.उ.मा.वि., कान्ह डक्कें** श्री विजयसिंह यादव (व.अ.) द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से माँ सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि.,**

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहु ँचाकेका विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। -**वरिष्ठ संपादक**

काठूवास को श्री शिवदत्त यादव से कक्षा 1 से 5 तक विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर लागत 75,000 रुपये, स्थानीय विद्यालय की छात्राओं हेतु विजय नगर से काठूवास विद्यालय में लाने व ले जाने हेतु 64,000 रुपये वाहन व्यवस्था हेतु नकद प्राप्त हु ए, स्वाधीनता दिवस समारोह में प्रतिभावान छात्र/छात्राओं को नकद इनाम 40,000 रुपये, समस्त ग्रामवासियों एवं विद्यालय परिवार के छात्र/छात्राओं एवं गुरुजन अतिथियों के भोजन व्यवस्था, टेंट, माईक इत्यादि हेतु 3,00,000 रुपये नकद प्राप्त हु ए,कैप्टन वीरसिंह यादव से विद्यालय परिसर के रंगाई पुताई कराई गई जिसकी लागत 60,000 रुपये, कैप्टन श्री ईश्वर यादव द्वारा निर्मित कमरा मय बरामदा का पुनर्निर्माण कराया गया, श्री ओमप्रकाश यादव (से.नि.अ.) से आर.ओ. सहित वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम

हमारे भामाशाह

भेंट, श्रीमती उमा पारीक से वाहन व्यवस्था हेतु 18,000 रुपये तथा अन्यकार्य हेतु 10,000 रुपये नकद प्राप्त हु ए,विद्यालय के सभी अध्यापक व कर्मचारियों द्वारा सभी कमरों के सिलिंग फैन व मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के लिए साफा व स्मृति चिह्न हेतु नकद राशि प्राप्त हु ई। **रा.उ.मा.वि., जटियाना उमरैण** में विद्यालय स्टाफ के सहयोग से विद्यालय की चारदिवारी एवं रंग पेन्ट हेतु 20,400 रुपये, श्री अशोक कुमार खाडिया से नकद 21,000 रुपये, कुमारी वात्सल्य यादव से 11,000 रुपये का चैक प्राप्त हु आश्री वी.के. अग्रवाल चान्सलर सनराईज यूनिवर्सिटी द्वारा बच्चें को पोषाहार हेतु खाने की प्लेट 250 नग, 300 चम्मच, 8 पंखे, 17 कुर्सियाँ, प्रधानाचार्य कक्ष हेतु मूविंग चेयर, टेबिल व एक कम्प्यूटर जिसकी लागत 1,00,000 रुपये, हेवल्स कम्पनी द्वारा 8 लेटबाथ का निर्माण किया गया जिसकी लागत 2,50,000 रुपये, श्री अमर चन्द एवं सतपाल यादव (व.अ.) से 20 सैट स्टूल मेज लागत 17,000 रुपये। **रा.मा.वि., मोठूका किशनग ढबास** को सर्वश्री अमरसिंह यादव, राजेश कुमार, श्रीमती मूर्ती देवी यादव प्रत्येक से 11 सेट मेज-स्टूल तथा प्रत्येक लागत 11,000 रुपये प्राप्त हु एश्री सोनू यादव से 21 सैटमेज स्टूल लागत 21,000 रुपये प्राप्त हु एश्री दलीप सिंह चौधरी से 5 सेट मेज-स्टूल 5,100 रुपये, नकद प्राप्तहु ए,विद्यालय स्टाफ से 1 लेजर प्रिन्टर हेतु 1,600 रुपये प्राप्त हु ए।**रा.मा.वि. सौंखर (कठूमर)** को श्रीमती अमिता गौतम (से.नि.व.अ.) द्वारा एक फर्श जिसकी कीमत 2,500 रुपये, श्री रोशनलाल गर्ग (अ.) से चार कुर्सियाँ प्लास्टिक लागत 2,500 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि. बहादरी पं.स. तिजारा** को प्रो. ए.पी.एम. इण्डस्ट्री लि. भिवा डी द्वारा 3,01,500 रुपये की लागत से 300 फीट लम्बी और 4 फीट ऊँची चारदीवारी व बोरिंग का कार्य कराया है। आँगनबा डीकार्यकर्ता श्रीमती तब्बस्सुम ने फर्श निर्माण हेतु 5000 रुपये विद्यालय को दिये और कार्यवाहक प्रधानाध्यापकनन्दलाल जाटव ने एक छत पंखा विद्यालय को भेंट किया जिसकी लागत 1250/- रुपये है।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि., कडियातह. बडगाँवको श्री महेन्द्रसिंह आशिया (उप सरपंच) से फर्नीचर हेतु 25,000 रुपये प्राप्त हु एश्री अम्बालाल मेहता तथा श्री केशुलाल मेहता द्वारा 1,25,000 रुपये लागत से विद्यालय में फर्नीचर उपलब्धकराए गए, श्री महावीर मादरेचा एवं रमु देवी मादरेचा से 25,000 रुपये के फर्नीचर उपलब्ध कराए गए। श्रीमती नारायणी देवी से फर्नीचर प्राप्त हु एजिसकी लागत 11,500 रुपये। **रा.बा.उ.मा.वि., झाडोल(फलासिया)** को श्रीमान त्रिलोकचन्द मीणा (उपखण्ड अधिकारी झाडोल) ने प्रेरक बनकर विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारियों, व्यापारियों को प्रोत्साहित कर 1,03,000 रुपये की राशि एकत्रित कर विद्यालय की लगभग 363 छात्राओं को स्वेटर वितरण किए। **रा.उ.प्रा.वि. सुन्दरवास** को श्री घीसूलाल, गजेन्द्र कुमार, श्री चण्डालिया (सुन्दरवास) से 11,000 रुपये नकद प्राप्तहु ए।

कोटा

रा.बा.उ.मा.वि. सीमलिया को श्रीचन्द्रपाल सिंह द्वारा एक वाटर कूलर प्राप्त हु आजिसकी लागत 31,000 रुपये, श्रीमती भावना सिंह द्वारा एक एक्वागार्ड प्राप्त हु आजिसकी लागत 10,000 रुपये।

संकलन- **रमेश कुमार व्यास**
मो. 9214829968

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च, 2017 / निदेशक, माध्यमिकशिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्दजाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।